स्वाधीनता संघर्ष और भगवानदास माहौर एक विवेचनात्मक अध्ययन

(सन 1924 से 1979)

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी में राजनीति विज्ञान विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध – प्रबन्ध

2006

निर्देशक :

डॉ0 भवानीदीन

रीडर - राजनीति विज्ञान

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

हमीरपुर (उ0प्र0)
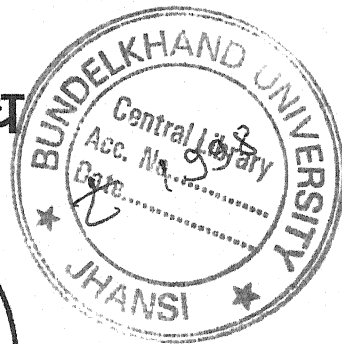
गवेषक :

प्रशान्त सागर

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

डा० भवानीदीन
रीडर– राजनीति विज्ञान

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर (उ0प्र0)
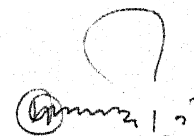
पत्रांक :-

दिनांक :-

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री प्रशान्त सागर, शिवाजी नगर, झांसी ने पी-एच०डी० की उपाधि हेतु शोध कार्य मेरे निर्देशन में किया है, इनका शोध प्रबन्ध **"स्वाधीनता संघर्ष और भगवानदास माहौर : एक विवेचनात्मक अध्ययन (१९२४ से १९७९ तक),"** मेरी दृष्टि में मौलिक तथा पी-एच०डी० की उपाधि हेतु पूर्णतः उपयुक्त है।

वर्ष - २००६

डॉ० भवानीदीन
शोध - निदेशक
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हमीरपुर (उ०प्र०)

आभार

भारतीयों के प्राप्य (आजादी) का साफल्य एक दिनी संघर्ष से हस्तगत नहीं हुआ था, अपितु इसके मूल में लगभग दो सदियों का सतत् सांघर्ष सन्निहित था। आजादी के आयुधी अनुष्ठान में राष्ट्र का ऐसा कोई क्षेत्र शेष नहीं था, जिसने अपनी सांग्रामिक आहुति न डाली हो। देश के प्रान्तों में जहाँ उत्तर प्रदेश ने स्वातन्त्र्य समर में अग्रणी भूमिका निभायी, वहीं इसी प्रान्त के बुन्देल क्षेत्र (उ०प्र०) ने भी सांघर्षिक शंखनाद करने में कोई कोर-कसर नहीं रखी।

सत्तावनी समर के पहले ही जैतपुर हमीरपुर (अब महोबा) ने १८४२ में ही आजादी का आयुधजीवी अलख जगा दिया था। तत्पश्चात् १८५७ में बुन्देलखण्ड के स्वातन्त्र्य संघर्षी अनुदाय से कौन अपरिचित है?। इस तरह बुन्देलखण्ड आन्दोलन के हर काल में अपनी अग्निधर्मा अगुवाई को अंकित कराता कई चरणों को पार करता हुआ जब २०वीं सदी के पहले दशक में प्रविष्ट हुआ तो उसे इस नर-रत्नगर्भा के एक ऐसे संग्रामी का सामीप्य मिला, जिसने बुन्देलखण्ड के क्रांतिकारी आन्दोलन को एक नयी दिशा दी। इस महान देशधर्मी देहदानी का नाम था- भगवानदास माहौर।

भगवानदास माहौर ने अपने सात दशकों के जीवन में डेढ़ दशक की जिन्दगी जेल में व्यतीत की। वे छात्र काल से ही क्रांति परायण हो गये थे। उन्होंने क्षेत्र, प्रान्त व राष्ट्र में एक निर्भीक यौधेय की भूमिका निभायी। उनका क्रांतिकारी आन्दोलन में जो योगदान रहा, उसके अछूते अन्जाने तथा अज्ञात तथ्यों की ओर अभी तक किसी शोधार्थी का ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ, यद्यपि स्फुट रूप से यत्र-तत्र कुछ तथ्य भगवानदास माहौर के सम्बन्ध में आवश्यक मिल जाते हैं किन्तु प्रामाणिकता के अभाव में वे जन-जीवन के विश्वसनीय तथा प्रेरणा के स्रोत नहीं बन सके हैं। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए मैंने अपने शोध का विषय "स्वाधीनता संघर्ष और डॉ० भगवानदास माहौर : एक विवेचनात्मक अध्ययन" (१९२४ से १९७९ तक) चयन किया है।

शोध-प्रबन्ध के अध्ययन में मौलिक रचनाओं एवं सहायक ग्रन्थों के अध्ययन का सहारा लिया गया है। इसमें तत्कालीन तथा अर्वाचीन जर्नल्स, पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों का भी अध्ययन कर सन्दर्भ दिये गये हैं। यह शोध-प्रबन्ध साक्षात्कार एवं पुस्तकालय अध्ययन पद्धति पर आधारित है। पूरे शोध-प्रबन्ध को आठ भागों में बांटा गया है।

शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में शोध-विषय की भूमिका से सन्दर्भित बिन्दुओं को उकेरा गया है। स्वातन्त्र्य संघर्ष में बुन्देल भूमि की भूमिका को भी रेखांकित किया-गया है।

शोध प्रबन्ध के दूसरे अध्याय में भगवानदास माहौर के प्रारम्भिक जीवन से जुड़े बिन्दुओं को विवेचित किया गया है। भगवानदास माहौर का प्रारम्भ में झांसी के क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रणेता मास्टर रुद्रनारायण से परिचय, प्रमुख क्रांतिकारी शचीन्द्र नाथ बख्शी से मास्टर साहब के घर में भेंट तथा मास्टर रुद्रनारायण के ही यहाँ क्रांतिपुत्र-चन्द्रशेखर आजाद से मुलाकात जैसी घटनाओं का विवेचन किया गया।

शोध प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में भगवानदास माहौर को प्राप्त महान सूरमा चन्द्रशेखर के सामीप्य का उल्लेख किया गया है, आजाद के अवदान ने ही माहौर की मनोभूमि में आयुधी प्रेरणा की पौध लगायी थी। झांसी के जिन युवावीरों को आजाद सबसे अधिक विश्वसनीय मानते थे

उनमें से एक भगवानदास माहौर थे। भगवानदास माहौर भी आजाद को अपना गुरू एवं अग्रज मानते थे। माहौर का बिना आजाद के तथा आजाद का बिना माहौर के पटता नहीं था। झांसी-प्रवास में माहौर तथा सदाशिव राव मलकापुरकर आजाद के दो हाथ थे।

इनके युवा मण्डल में विश्वनाथ वैशम्पायन भी थे, आजाद उदार तथा स्वातन्त्र्य चेता थे। उनकी इन युवावीरों के परिवार से भी घनिष्ठता थी।

शोध-प्रबन्ध के पाँचवे अध्याय में माहौर तथा मलकापुरकर से जुड़े भुसावल तथा जलगाँव अदालत काण्ड का वर्णन किया गया है। माहौर तथा मलकापुरकर दोनो ही आजाद के वफादार साथी थे। आजाद ने दोनो को दक्षिणी भारत में क्रांति-विस्तार की दृष्टि से राजगुरु के यहाँ पूना भेजा था किन्तु वे दोनो भुसावल स्टेशन में विस्फोटक सामग्री के साथ पकड़ लिये गये थे। वे दोनो भितरघाती तथा गद्दार क्रांतिकारी साथियों के कारण सजा

याफ्ता हुए थे। माहौर ने जलगाँव अदालत में जयगोपाल तथा फणीन्द्र घोष पर गोली चलायी थी किन्तु निशाने के ठीक न बैठने के पर वे दोनो मुखबिर बच गये थे। माहौर तथा मलकापुरकर को आजन्म कारावास सजा हुयी थी।

छठवें अध्याय में अगस्त - क्रांति में भगवानदास माहौर के योगदान का उल्लेख है। भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ होने के ठीक एक दिन पूर्व जब सभी देश के चोटी के नेता गोरी सरकार द्वारा जेल के सींकचों के अन्दर कर दिये गये थे, तब उस परिवेश में माहौर का पुरोधत्व काबिले तारीफ रहा। उन्हें बन्दी बनाकर कई जेलों में रखा गया।

सातवें अध्याय में भगवानदास माहौर ने स्वातन्त्र्योत्तर काल में जो सारस्वत विकास किया, साथ ही आजादी के पूर्व जेल-जीवन में जो अनुशीलन किया, उसको कलमबद्ध किया गया है। जेल में ही पं० परमानंद के सानिध्य सलिल में ही माहौर के अन्तस्तल में पड़े सारस्वत-बीज का

अंकुरण हुआ था, जो कालान्तर में पुष्पित-पल्लवित होकर विकसित हुआ। माहौर स्वतन्त्र भारत में भी आजन्म राष्ट्रवादी रहे। साहित्याकाश के वे एक देदीप्यमान सितारे थे।

इस तरह भगवानदास माहौर के सात दशकों की जीवन-यात्रा पर क्रमवार प्रकाश डाला गया है। उनके क्रांतिकारी अवदान को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया गया है।

शोध प्रबन्ध के सम्पूर्ण कलेवर एवं पूर्णता के लिए मैं सर्वप्रथम अपने शोध निदेशक डॉ० भवानीदीन, रीडर-राजनीति विज्ञान, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हमीरपुर का हार्दिक आभारी हूँ जिनके सुलभ, सतत एवं स्तरीय निर्देशन में यह शोध कार्य पूर्ण हुआ।

मैं अपने पूज्य प्रवर पितामह स्वातन्त्र्य सेनानी श्री नाथूराम रिछारिया के प्रति श्रद्धानवत् हूँ, जिनके आशीष से शोध-जटिलता सुबोध हुयी। उसके बाद मैं अपने पूज्य पिता श्री ज्ञान सागर रिछारिया एवं पूजनीया माता श्रीमती कुसुम रिछारिया के प्रति आशेष श्रद्धा ज्ञापित करता

हूँ, जिनकी स्नेहिल छाँव तले शोध-दुरुहता सारल्य प्राप्त कर सकी। मैं अपने ताऊ श्री हरिद्वारी लाल रिछारिया तथा श्री दया सागर रिछारिया के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिनका इस कार्य में समय-समय पर सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहा। मैं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी डॉ० कमलेश शर्मा, डॉ० एम०टी०एम० खान आचार्य- पुस्तकालय विज्ञान एवं प्रो० पी०एन० श्रीवास्तव, आचार्य, गणितीय विज्ञान एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग का भी ऋणी हूँ, जिनके अनवरत् प्रेरणा से मैं शोध-पथ पर बढ़ सका। राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली, उ०प्र० राज्य अभिलेखागार, राजकीय लाइब्रेरी इलाहाबाद, शहीद शोध संस्थान लखनऊ के पुस्तकालयाध्यक्षों तथा अन्य सहकर्मियों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे शोध-सामग्री के अध्ययन की सुविधा सुलभ करायी।

अन्त में मैं अपनी पत्नी श्रीमती ज्योति रिछारिया तथा पाल्या आकृति के प्रति भी उपकृत हूँ, जिन्होंने मुझे ''गृह कारज नाना जंजाला'' से समय-समय पर मुक्त कर समय उपलब्ध करा कर शोध कार्य की पूर्णता में अहम् भूमिका निभायी।

जून २००६

प्रशान्त सागर
शिवाजी नगर
झांसी, उ०प्र०

अनुक्रम

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

1

प्रस्तावना

भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष की यज्ञ-वेदी में आहुतियों के अर्घ का अवदान अलग-अलग प्रकार का रहा है, प्लासी-पराजय (१७५७) के बाद ही गोरी-सत्ता के विरुद्ध भारतीय मनोभूमि में विद्रोह-बीजों का वपन हो चुका था, ये विद्रोह भले ही राष्ट्र के अलग-अलग स्थानों पर छोटे एवं कम प्रभावी रहे हों, परन्तु इन विद्रोहों ने बहुत पहले ही भारतीय स्वातन्त्र्य चिन्तन को दग्ध करने के लिए चिन्गारी का तो काम कर ही दिया था। १७५७ से लेकर एक सदी तक गोरों ने भारतीयों के उत्पीड़न एवं दमन में कोई कोर-कसर नहीं छोंड़ी थी। गोरों के द्वारा किये गये एक सदी के भारतीयों के दमन-देह से भारत की दुर्धर्ष दहाड़ का जन्म हुआ था, जो १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष के रूप में दृष्टि गोचर हुई।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर दृष्टिपात करने से यह तथ्य सुस्पष्ट होता हे कि प्लासी-युद्ध के बाद ही भारत में १८वीं सदी के ७वें तथा ८वें दशक में देश को दासता से उन्मुक्त कराने हेतु देहदानियों ने भारतीयों का दहला देने वाली गोरी दहलीज़ में सशस्त्र संघर्षी दस्तक दे दी थी। उसके बाद १९वीं सदी के अन्त तक कई ऐसी विभूतियों के जन्म एवं रणबाँकुरों की प्रभावी पहल ने देश को यह आभास करा दिया था कि देश को दासता के दंश को बहुत दिनों तक झेलना नहीं पड़ेगा।

१९वीं सदी के अन्त तक जहाँ एक ओर राजाराम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द एवं आचार्य केशव चन्द्र सेन जैसे बौद्धिक वीरों ने भारत में पुनर्जागरण की अलख जगाकर भारत के मुक्ति संग्राम को एक नया आयाम प्रदान किया था, दूसरी ओर १८८५ में राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थापना से भारतीय आजादी के संघर्ष को स्थिरता का संघर्षी बैनर मिल गया था।

२०वीं सदी का भोर भारत के लिए नवसंदेश लेकर आया। भारत का मुक्ति संग्राम चतुष्पदीय संघर्ष का संगम बन गया। इन्हीं चतुष्पदीय पौरुष के स्तम्भों में भारतीय आजादी का भावी प्रासाद बनकर तैयार हुआ था, १९वीं सदी के अन्त तथा २०वीं सदी के प्रारम्भ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर उदारवादी, उग्रवादी, क्रांतिकारी तथा गांधीवादी नामक चार चरणों से होकर गुजरा। १८८५ से लेकर १९०५ तक के दो दशकों का स्वातन्त्र्य संघर्षी सफर कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। इस काल के भारतीय राजनीति के पितामह दादा भाई नौरोजी, बनर्जी बन्धु तथा गोपाल कृष्ण गोखले ने उदारवाद के माध्यम से भारतीय स्वाधीनता संग्राम के लिए आवश्यक जमीन तैयार की, जिस पर कालान्तर में संघर्ष का अग्रसारण हुआ।

१९०६ से १९२० तक का काल उग्रवाद के नाम से जाना गया। इस चरण का लगभग डेढ़-दो दशकों का रणाह्वान भी प्रभावी रहा, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक तथा विपिन चन्द्र पाल ने भारतीय मुक्ति के मिशन को आगे बढ़ाया।

बाल गंगाधर तिलक ने ही भारत के सांग्रामिक इतिहास में रणबाँकुरों को "स्वराज्य मेंरा जन्म सिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूँगा" जैसा मंत्र बीज दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'मराठा' तथा 'केसरी' जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से आजादी की आवाज जनता तक पहुँचायी, साथ ही गणपति तथा शिवाजी जैसे उत्सवों के माध्यम से युवाओं की एक राष्ट्रधर्मी फौज तैयार की, जिन्हें देश की आजादी के लिए मर मिटने वाले युवा देहदानी कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

भारतीय मुक्ति संग्राम के चरणों में क्रांतिधर्मी चरण निश्चित रूप से स्वातन्त्र्य समर के इतिहास में अपना एक अलग स्थान रखता है, वैसे तो प्लासी-युद्ध के बाद से ही सशस्त्र विद्रोहों की परम्परा पड़ गयी थी, १८५७ में यह चरण गोरों के लिए एक चुनौती बनकर जन्मा। इसके बाद १८९७ में मराठी धरती के चाफेकर बन्धु नामक महावीरों ने क्रांति का विधिवत शिलान्यास किया। उसके बाद सुभाषचन्द्र बोस के निधन के पूर्व तक भारतीय तथा विदेशी धरती में विधिवत क्रांति का अमर घोष होता रहा। कुछ मतिभ्रान्त तथा क्रीत इतिहासकारों ने क्रांतिवीरों के ऐतिहासिक योगदान को कलम की नोक पर सार्थक उतारने के बजाय उसे तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया, उन्हें डकैत तथा लुटैत कहा, इसे क्रांतिकारी संस्कृति के प्रति उनकी बेमानी तथा सतही सोंच कहा जायेगा।

१८९७ से लेकर १९४५ तक लगभग पाँच दशकों का क्रांतिकारियों का दुर्धर्ष संघर्ष ही गोरों को यह आभास कराने में सफल रहा कि भारतीयों की धमनियों में उष्ण रक्त संचरित हो रहा है, जो शठे

शाठ्यम समाचरेत् का राही है, गोरी ईंटों का जवाब भारत के पौरुषी-पत्थर ने ही दिया। विश्व के क्रांतिकारी साहित्य में भगत सिंह, चन्द्र शेखर आजाद, रासबिहारी बोस, करतार सिंह सराभा, शचीन्द्र नाथ सान्याल एवं लाला हरदयाल जैसे क्रांतिकारी चिन्तक स्वातन्त्र्य चेता एवं आत्म बलिदानियों का नाम इसीलिए अमर है, क्योंकि ये क्रांतिपुत्र देश के लिए जन्मे तथा देश के लिए मरे, ये क्रांति के कर्म योगी थे, निस्पृह नाहर थे, निष्काम नीति के नेही थे, भगत सिंह मात्र २३ वर्ष ४ माह, तेईस दिनों में ही क्रांति के उस उतुंग पर पहुँच गये, जिस शीर्ष पर अच्छे सरफ़रोश बार-बार की शहादत के बाद भी नहीं पहुँच सकते। भगत सिंह की इस वैश्विक उपलब्धि के मूल में उनकी नियोजित मृत्यु-साधना थी, वे मृत्युंजय बनकर इस गौरव को हासिल किया था। वे शहीदों के शहीद तथा युगदृष्टा बन चुके थे।

गाँधीवादी आन्दोलन का भी कम महत्वपूर्ण स्थान नहीं रहा, १९२० से १९२७ तक के लगभग ढाई दशकों के काल में भारतीय स्वातन्त्र्य समर के चरण को लोक आन्दोलन के रूप में प्रस्तुत कर स्वातन्त्र्य संग्राम का लोक विस्तार किया था, वह उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी। इस तरह से कहा जा सकता है कि उदारवादी उर्मियों से आजादी की जमीन ऊष्मित हुई, उग्रवादी अवनि में स्वातन्त्र्य संघर्षी विचार-बीज अंकुरित हो गया, जिसे क्रांतिकारियों ने अपने जीवन की खाद और रक्त के पानी से उसे पुष्पित तथा पल्लवित किया, बाद में गाँधी जी ने अपने जीवन के साधना-सलिल से सींचकर उसे विकसित कर वृक्षाकार (आजादी) बनाया।

भारत के स्वातन्त्र्य संघर्ष में आसेतु हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक ऐसा कोई क्षेत्र शेष नहीं रहा, जिसने स्वातन्त्र्य-यज्ञ-वेदी में अपने सामर्थ्य की समिधा न डाली हो, हर क्षेत्र का आन्दोलनात्मक आरेख अलग-अलग प्रकार का रहा है, राष्ट्र के प्रान्तीय क्षेत्रों में उ०प्र० के बुन्देलखण्ड मण्डल की आन्दोलन में आयुधी अगुवायी किसी परिचय की मोहताज नहीं है। बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) में सभी जनपदों के जुझारू जवानों की सहभागिता श्लाघ्य रही है, उसे बुन्देलखण्ड के सांग्रामिक इतिहास के पृष्ठों में अवलोकित किया जा सकता है। बुन्देलखण्ड के जनपदों में झांसी के सांग्रामिक इतिहास की अपनी एक अलग पहचान है, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का जौहर ही उसे प्रमाणित करने के लिए पौरुष का एक ऐसा पुलिन्दा है, जिसके हर पृष्ठ रानी के अप्रितम शौर्य के साक्षी हैं, साथ ही इस पुष्टि के प्रत्यक्ष दर्शी हैं। भारत की आजादी की लड़ाई में पूरे बुन्देलखण्ड ने संघर्षी कदम ताल की थी, उस पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लग सकता। बुन्देलखण्ड क्षेत्र का हर जनपद शूरता एवं वीरता के क्षेत्र में क्षात्रधर्मी रहा है।

भारतीय प्रान्तों में तत्कालीन संयुक्त प्रान्त की वीर भूमि के रूप में विश्रुत बुन्देलखण्ड इस प्रदेश का ऐसा भू-क्षेत्र है, जिसका शौर्य के क्षेत्र में शीर्ष स्थान है। सत्तावनी पुरुष के पांचजन्य को फूँकने के पूर्व ही हमीरपुर (बुन्देलखण्ड) के जैतपुर ने १८४२ में ही संघर्षी बिगुल बजा दिया था। उसके बाद १८५७ में बुन्देलखण्ड की रणधर्मी धमक से कौन अपरिचित है?

इस तरह बुन्देलखण्ड आन्दोलन के हर काल में अगुवायी करता हुआ २०वीं सदी के जब प्रथम दशक में पहुँचा तो उसे इस नर रत्नगर्भा धरती (बुन्देलखण्ड का दतिया जिला) से ऐसा जुझारू सेनानी मिला, जिसने बुन्देलखण्ड के तरस्वी-तेवरों को एक नया आयाम प्रदान किया। उस महान सूरमा का नाम था- भगवानदास माहौर।

भगवानदास माहौर एक नाम नहीं अपितु एक ऐसा शब्द चित्र है, जिसमें असि और मसि के मणिकांचन योग को एक साथ निहारा जा सकता है। वे मात्र स्वातन्त्र्य प्रेमी नहीं थे। वे एक लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार, श्रेष्ठ संपादक, संगीतकार, कलाकार एवं विश्रुत काव्यकार थे। इस तरह से यह कहा जा सकता है कि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का आरेख बहुआयामी था। भगवानदास माहौर का बुन्देलखण्ड की उस मेदिनी में जन्म हुआ था, जिसकी अपनी एक अलग पहचान है। मल्ल शिरोमणि गामा की जन्म भूमि दतिया की देन थी- भगवानदास मौहर।

आजादी की लड़ाई के फलक पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि बुन्देलखण्ड भले ही एक पिछड़ा एवं अविकसित भू-भाग रहा हो किन्तु जंगे आजादी के क्षेत्र में वह सदैव अग्रणी रहा है। स्वाधीनता संघर्ष के हर चरण में अपनी एक अलग पहचान बनायी है।

१८५७ से लेकर १९४७ तक के काल का ऐसा कोई अवसर नहीं रहा है, जिसमें इस क्षेत्र ने अपना अवदान प्रदान न किया हो। आजादी के पहले बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) चार जनपदों में विभक्त था, जिनमें

से झांसी जनपद की सामरिक सहभागिता का कोई सानी नहीं था। प्रथम स्वातन्त्र्य समर के बाद १८८५ में कांग्रेस की स्थापना के बाद भारतीय स्वाधीनता संग्राम को एक नया बैनर मिल गया, स्वातन्त्र्य आन्दोलन उदारवादी एवं उग्रवादी चरणों को पार करता हुआ क्रांतिकारी युग में प्रविष्ट हुआ। झांसी क्रांतिकारियों की केन्द्रीय भूमि रही है। राष्ट्र के चोटी के क्रांतिवीरों ने इस जनपद से अपने अभियान का अग्रसारण किया है। झांसी जंगे आजादी के जांबाजों का जनपद रहा है। मास्टर रुद्रनारायण, शचीन्द्रनाथ बख्शी एवं शिव वर्मा जैसे अनेक क्रांति धर्मियों ने यहाँ से सशस्त्र क्रांति को संचालित किया। झांसी के क्रांतिकारी दल मे कृष्ण गोपाल शर्मा, लक्ष्मण राव, अयोध्या प्रसाद के अतिरिक्त मास्टर रुद्रनारायण, विश्वनाथ, वैशम्पायन, सदाशिव राव मलकापुरकर तथा भगवानदास माहौर की भूमिका प्रमुख मानी जाती है।

भगतवानदास माहौर किशोर काल से लेकर १९४७ तक सदैव क्रांतिधर्मी रहे, उनके जीवन की ढ़ाई दशकों की राष्ट्र सेवा यात्रा अविस्मरणीय रही।

द्वितीय अध्याय

भगवानदास माहौर एक परिचय

2

भगवानदास माहौर : एक परिचय

बुन्देलखण्ड के जनपदों में दतिया जनपद का अपना एक वैभवशाली इतिहास रहा है, मल्ल शिरोमणि गामा एवं जैनियो का पवित्र तीर्थ सोना गिरि (स्वर्ण गिरि) इसी धरा की धरोहर हैं, यहाँ के क्षत्रियों का शौर्य शीर्षगामी रहा है, इस तरह से यदि देखा जाय तो दतिया की अपनी एक अलग पहचान रही है। इस वीर प्रसविनी वसुन्धरा के शौर्य-योग में २७ फरवरी १९१० की तिथि ने एक और युयुत्स को जन्म देकर एक और कर्मयोगी को संश्लिष्ट कर दिया था। इसी तिथि को दतिया के छोटी बड़ौनी गाँव के तुलसीदास माहौर के घर नन्नी बाई के कुक्ष से एक और नर रत्न का प्रसव हुआ, जिसने अपने जीवन के लगभग ढ़ाई दशकों के अवदानी आरेख से बुन्देलखण्ड ही नहीं अपितु राष्ट्र के क्रांतिकारी आन्दोलन में अपनी एक अलग पहचान बनायी।

मिठिया का मोड़ा

भगवानदास माहौर पर जहाँ अपनी माँ नन्नीबाई की स्नेहिल गोद का लाड़-प्यार मिल रहा था, वही उनके मानस पर आध्यात्मिकता के प्रतीक सोना गिरि का कम प्रभाव नहीं पड़ा था। माहौर जी के पिता तुलसीदास माहौर की गाँव के मिठियों के मोहल्ले में मिठाई की एक दुकान थी, जो गाँव की सबसे बड़ी दुकान कहलाती थी।[१]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, मेरठ, शास्त्री नगर, तरुण प्रकाशन, १९८९, पृ०सं०- १३।

नन्हे माहौर अपने मिठिया मोहल्ले में उछल-कूद करते रहते थे, इसी कारण माहौर को दुलार में **'मिठिया का मोड़ा'** कहा जाता था। भगवानदास माहौर की माँ नन्नीबाई सुरीले स्वर की धनी महिला थीं, जिसका उनके शिशु माहौर पर प्रभाव पड़ा, शिशु भगवानदास को स्वर संयोग परिवार से ही मिला था। भगवानदास माहौर को जन्म से ही सुरीला स्वर मिला हुआ था। वे तीन-चार साल की उम्र से ही गायकी के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे।[१]

भगवानदास माहौर शैशवकाल में ही गाँव की गलियों में गाते-फिरते थे, उनके मधुर स्वर से मिठिया मोहल्ले की गलियाँ गूँजती रहती थीं। क्षत्रिय बाहुल्य मोहल्ले में भगवानदास माहौर को प्राय: गायन के लिए बुलाया जाता था, मिठिया के मोड़ा को यह आमंत्रण बहुत रास आता था, वह तुरन्त दौड़कर निमंत्रण-स्थान पर पहुँच कर अपनी गायकी प्रस्तुत करता था। इसके बदले उसे भर पेट दूध-लुचई (जलेबी) खाने को मिलती थी। भगवानदास माहौर का गायन का क्षेत्र में दखल जीवन पर्यन्त बना रहा, वे क्रांतिकाल में अपने गीतों से दु:खों के दुरुह क्षणों में भी क्रांतिकारियों को गीतों से गुदगुदाते रहते थे।

पारिवारिक जीवन

भगवानदास माहौर के दो भाई और एक बहन थी। सबसे बड़े भाई नारायणदास माहौर झांसी में ही व्यापार करते थे, इनका १९६३ में झांसी में निधन हो गया था, भगवानदास माहौर के दूसरे भाई का नाम

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १३।

राधाशरण माहौर था, जो एक प्रसिद्ध कम्युनिस्ट थे, इनकी १९६८ में मृत्यु हो गयी थी, इनकी बहन रामरती का निवास ग्वालियर रहा। इनके मामा नाथूराम माहौर एक विश्रुत रचनाधर्मी थे, नाथूराम माहौर के दो बेटियाँ थीं- उर्मिला गुप्ता तथा शशीबाला गुप्ता।[१]

गाँव से झांसी आगमन

भगवानदास माहौर के मामा नाथूराम माहौर झांसी में रहते थे, जो एक प्रसिद्ध कवि तथा साहित्यकार थे। माहौर जी के पिता तुलसीदास माहौर अपना छोटी बड़ौनी गाँव छोंड़कर झांसी आकर रहने लगे थे। माहौर को उनके मामा कवीन्द्र नाथूराम माहौर का स्नेहिल सानिध्य मिला, वे मामा के साथ घुल-मिल गये। माहौर पर मामा के विचारों का प्रभाव पड़ा, माहौर को साहित्य-प्रेरणा अपने मामा नाथूराम माहौर से ही मिली। माहौर बचपन से ही संगीत प्रेमी थे, माहौर को संगीत की शिक्षा माँ से मिली थी, माँ के द्वारा गाये गये आँचलिक गीतों में खास तौर पर गाँव-गीत माहौर जी के अतीत की स्मृतियों में बहुत दिनों तक अंकित रहे, वे उन गीतों का ध्यान कर अतीत के पुलकन में खो जाते थे। माहौर जी को शिक्षा-काल में हरदास सिंह नामक एक मित्र का सामीप्य मिला था, जिसने उन्हें संगीत का आशिक बना दिया।

---

१. रामसिंह बघेले, क्रांतिवीर भगवानदास, ग्वालियर, नई सड़क, १९८४, पृ०सं०-०२।

उस्ताद आदिल खाँ और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर जब नवीं कक्षा में झांसी में अध्ययन करते थे तभी वे प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीतज्ञ उस्ताद आदिल खाँ के शास्त्रीय गायन को पूरी तरह दत्तचित्त होकर सुना करते थे, उसके बाद कालान्तर में वे जब राष्ट्र भक्ति के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए तो उन्हें जेल में अमृतलाल नानावटी का सानिध्य प्राप्त हुआ, इन संगीतज्ञों के नैकट्य नीर के सिंचन से उनकी अवधारणा अवनि में पड़े संगीत के विचार का अंकुरण प्रस्फुटित हुआ, आगे चलकर भगवानदास माहौर ने शास्त्रीय संगीत पर कई खोजी लेख लिखे, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।[१] वे गायन के मनोविज्ञान को भी जानते थे, वे बच्चों को गीत गा कर मोहित कर लेते थे-

छुनुन-मुनुन गुप्प,
माँ ने दाल में बघार दिया।
चूल्हे पीछे चुहिया बैठी,
कट-कट लोन चबाय।
दाल-भात औ कड़ी पकौड़ी,
गप्प से ले भग जाय।

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १८, १९।

इस तरह से यदि माहौर जी की गायकी के सन्दर्भ में यह कहा जाय कि उनके पारिवारिक संस्कारों में ही गायकी का मिश्रण था, जो उन्हें स्वाभाविक रूप से बाल-जीवन में ही प्राप्त हो गयी थी तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मल्ल क्षेत्र, दो परीक्षायें और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर बचपन से ही बलिष्ठ शरीर के धनी थे, इन्हें बचपन से ही व्यापाम करने का शौक था, इनकी कसरत-कुश्ती में बहुत रुचि थी। ये जब चौदह वर्ष के थे, तभी इनके झांसी के मुकरयाने मुहल्ले में रह रहे प्रसिद्ध क्रांतिकारी एवं सांगठनिक शूर शचीन्द्र नाथ बख्शी के यहाँ आजाद के दर्शन हुए, माहौर ने बख्शी की तुलना में जब आजाद के हृष्ट-पुष्ट शरीर को देखा तो उनकी क्रांतिकारियों के प्रति बाल श्रद्धा चौगुनी बढ़ गयी। आजाद से हुई वार्ता में माहौर ने यह पाया 'बलिष्ठ शरीर का अपना एक अलग महत्व है', कालान्तर में माहौर ने आजाद के शरीर-दृढ़ता के सन्दर्भ में उनके गूढ-अर्थ को इस रूप में समझा- **"बलवान भूयोऽपिहं शतं विज्ञानवतामेको बलवाना कम्पयते।"** "अर्थात बलिशाली बनो, एक बलशाली सौ विद्वानों को कंपा देता है।"[१]

मास्टर रुद्रनारायण प्रारम्भ से ही राष्ट्र-प्रेमी थे,उन्होंने झांसी में अपने घर में अखाड़ा बनवा रखा था, जिसमें झांसी तथा आस-पास के युवा व्यायाम तथा मल्ल विद्या का अभ्यास करते थे, मास्टर रुद्रनारायण के

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९९९, पृ०सं०- ६२-६३।

आवास से कुछ फासले पर महाराष्ट्रियन आवास भी था, जहाँ पर सदा शिव राव मलकापुरकर जमा करते थे। मराठी किलेदार के यहाँ माहौर जी भी कभी-कभार पहुँच जाते थे, मलकापुर की भी कसरत-कुश्ती में रुचि थी। यहीं पर माहौर तथा मलकापुरकर का प्रख्यात क्रांति विशारद शचीन्द्र नाथ बख्शी से सम्पर्क हुआ।[१]

प्रथम परीक्षा

माहौर का आजाद से प्रथम परिचय होने पर एक नियोजित रूप में एक घटना के माध्यम से माहौर की परीक्षा ली गयी। मास्टर रुद्रनारायण के घर पर उपस्थित शचीन्द्र नाथ बख्शी एवं माहौर तथा अन्य क्रांतिकारी साथियों में आपस में बात-चीत हो रही थी, उस वार्ताकाल में शचीन्द्र नाथ बख्शी के सामने माहौर बैठे थे, बख्शी के हाथ में रिवाल्वर था, निशानेबाजी पर चर्चा चल रही थी, तभी आजाद विद्युत की भाँति एक कदम उछले, इसके पूर्व कि अन्य कोई दूसरा समझ पाता, आजाद ने बख्शी को धक्का देकर उनके हाथ से रिवाल्वर का रुख छत की ओर करके रिवाल्वर को अपने दोनों हाथों से मजबूती से पकड़ लिया, हुआ यह था कि बख्शी बातों में मशगूल होकर यह भूल गये थे कि रिवाल्वर में कारतूस भरे हैं, साथ ही बख्शी की उंगली रिवाल्वर के ट्रिगर पर रखी थी, रिवाल्वर किसी भी क्षण चल सकता था, जिससे माहौर का जीवन खत्म हो सकता था, आजाद के त्वरित दिमाग ने एक हादसे को टाल दिया।[२]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६३-६४।

२. वही, पृ०सं०- ६५।

इस प्रकरण के बाद आजाद ने माहौर के मानस का अध्ययन किया कि कहीं माहौर के दिल की धड़कन तो तेज नहीं हो गयीं, डर के मारे उसके चेहरे का रंग तो नहीं उड़ गया। आजाद ने मजाकिया तौर पर माहौर के हाथ को ऐसे देखा मानो कि कोई बहुत बड़ा ज्योतिषाचार्य किसी का भविष्य देख रहा हो, आजाद ने माहौर की नाड़ी भी देखी, वे बोले, "माहौर! ऐसे ही थोड़े मरोगे, तुम कुछ करके मरोगे।" बख्शी ने भी इसी बीच कहा कि हम से तो भूल हो ही गयी थी किन्तु आजाद ने तुम्हें बचा लिया, तुम भी घबराने वाले नहीं हो, आजाद से इस घटना के बाद क्रांतिकारियों की आत्मीयता बढ़ गयी थी, आजाद क्रांतिकारी युवाओं के बीच विश्वास स्थापित करने में सफल हो गये थे। आज जिस प्रयोजन से झांसी आये थे, उसे पूरा कर वे झांसी से लौट गये, उनसे हुई बातचीत से यह तथ्य उजागर हुआ था कि बुन्देलखण्ड छापामार युद्ध के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, माहौर और उनके साथियों को यह विश्वास था कि आजाद शीघ्र ही वापस आकर पुन: क्रांतिकारी कार्यों को सम्पादित करने के लिए निर्देशित करेंगे।

शचीन्द्र नाथ बख्शी ने बाद में माहौर को बताया कि यह सब आजाद ने तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए जान-बूझकर किया था, जिसमें तुम पास हो गये हो। इस तरह भगवानदास माहौर आजाद द्वारा ली गयी प्रथम परीक्षा में उत्तीर्ण गये। भगवानदास माहौर ने आजाद से ही निशानेबाजी सीखी थी, बाद में उनके निशाने को और धार प्रदान करने के लिए दल के द्वारा खनिया धाने की रियासत के बसई गाँव भेजा गया, जहाँ उन्हें एतदर्थ अच्छे अवसर मिले।[१]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २२, २३।

खनिया धाने के महाराज खलक सिंह जूदेव राष्ट्रधर्मी विचारों के थे, माहौर जी महाराज के प्रिय पात्र बन चुके थे, बसई कोठी रेलवे स्टेशन के पास थी, एक दिन माहौर जी ने महाराज से कहा कि महाराज! "हमें भी बन्दूक चलाना सिखाइये।" इस पर महाराज ने निशाना कैसे लगाया जाता है, सारे निर्देश देकर अपना पिस्तौल माहौर जी को दिया और कहा कि अनार की कली पर निशाना साधना है, जिसे माहौर ने प्रथम बार में ही निशाने द्वारा उसे छेद दिया, माहौर ने बाद में दो-तीन निशाने और लगाये, जो बहुत ही सटीक बैठे थे। महाराज ने माहौर की प्रशंसा की और कहा कि लगता है कि तुम्हें निशानेबाजी का पहले का अभ्यास है।[१]

उन्हीं दिनों शिकार खेलते समय माहौर जी द्वारा एक जंगली सुअर तथा एक हिरनी का शिकार किया गया, हिरनी के मारने पर बावेला उड़ खड़ हुआ, क्योंकि राज्य में हिरनी का शिकार करना वर्जित था, माहौर जी की शिकार-शिकायत महाराज के पास पहुँची, माहौर-विरोधियों को यह विश्वास था कि महाराज माहौर को दण्डित करेगे। महाराज ने माहौर की ओर से अपनी जेब से दो रुपये निकाल कर उनका दण्ड अदा किया। महाराज का बहुआयामी व्यक्तित्व था, वे देशभक्तों की आर्थिक मदद भी करते थे, वे मास्टर रुद्रनारायण को आर्थिक सहायता देते थे। मास्टर साहब का सुझाव था कि महाराज क्रांतिदल को कुछ हथियार प्रदान करें। अपनी इसी योजना के अन्तर्गत मास्टर साहब रुद्रनारायण ने माहौर जी को महाराज के यहाँ भेजा था किन्तु मास्टर साहब ने अपनी इस योजना को माहौर जी से नहीं बताया था।[१]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २३, २४।

माहौर जी ने अपने व्यवहार से महाराज के यहाँ अच्छी पैठ बना ली थी। माहौर एक अच्छे गायक तथा संगीतकार थे, महाराज ने कुछ पिस्तौल तथा कारतूस दल के लिए मंगवा भी लिये थे, परन्तु दल को उनकी आपूर्ति कैसे हो? यह एक समस्या थी। इसका कारण था– महाराज के ऊपर एक दीवान तथा रिश्तेदार द्वार निगरानी रखना। चन्द्रशेखर आजाद शस्त्रापूर्ति को लेकर महाराज से मिलना चाहते थ, उधर माहौर जी संगीत–साधनों से महाराज तथा उनके निकट के लोगों के बीच अपनी पकड़ निरन्तर मजबूत बना रहे थे।

दूसरी परीक्षा

एक दिन बसंतकाल में महाराज के यहाँ मास्टर रुद्रनारायण तथा सदाशिवराव मलकापुरकर की उपस्थिति से माहौर जी आश्चर्य चकित हो उठे, मास्टर साहब और मलकापुरकर के साथ आजाद भी थे। पारखी क्षमता के धनी महाराज ने पूर्व में देखे बिना ही आनुमानिक आधार पर आजाद को पहचान लिया। आजाद का राजा साहब द्वारा यथोचित सम्मान किया गया, राजा साहब ने आजाद का अपने भाई से भी अधिक स्वागत किया, अब आजाद के लिए राजा साहब के प्रति भाई बने रहना जैसा व्यवहार करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं था, वे राजा साहब के छोटे भाई बन गये, इससे राजा साहब के यहाँ रह रहे नजदीकी लोगों को भला कैसे अच्छा लगता? वे पण्डित जी (आजाद) से राग–द्वेष करने लगे। महाराज तथा पण्डित जी ने एक ही मेज पर जलपान किया, तत्पश्चात् निशानेबाजी पर चर्चा होने लगी, आजाद ने उस वार्ता में भाग लिया।[१]

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०– २४, २५।

आजाद एक कुशल निशानेबाज थे, ठकुराई दर्प भला आजाद के निशानेबाजी के दंश को कैसे सहन कर लेता। राजा के यहाँ निकट के लोगों ने पण्डित जी के निशानेबाजी की परीक्षा लेने की एक ऐसी योजना बना डाली, जिसमें आजाद असफल हो जाय और ठकुरास के अहम् की तृप्ति हो जाय। उन लोगों ने एक पेंड़ की सूखी टहनी में आँवले से छोटे आकार का एक अनार खोस दिया, महाराज आजाद के प्रति उनकी इस चाल को भांप गये। राजा की भी इच्छा नहीं थी कि एक प्रमुख क्रांतिकारी की इस तरह की परीक्षा ली जाय, राजा ने चर्चा का विषय बदलना चाहा किन्तु आजाद ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया।[१]

मास्टर रुद्रनारायण तथा महाराज को आजाद की इस तरह की परीक्षा लेना उचित नहीं लग रहा था, फलत: मास्टर साहब ने माहौर जी की ओर संकेत किया, माहौर जी तुरन्त हालात को समझ गये, मास्टर साहब ने माहौर से कहा निशाना लगाओ, आज तुम्हारी परीक्षा है, राजा साहब को भी मौका मिल गया, उन्होंने मास्टर साहब रुद्रनारायण का समर्थन किया, किन्तु आजाद के विरोधियों और चाल-बाजों को यह परिवर्तन जमा नहीं। कुछ लोगों ने आजाद पर ताने कसकर उन्हें बाढ़ पर रखने की भी चेष्टा की किन्तु भगवानदास माहौर की हठ के कारण आजाद ने अनमने ढंग से माहौर को बन्दूक दे दी। माहौर ने निशाना लगाया, निशाना सटीक बैठा, खोंसा गया अनार टहनी पर नहीं था, यह सभी लोगों ने देखा, राजा साहब ने माहौर के सधे हुए निशाने की तारीफ की, आजाद ने भी उन्हें शाबासी दी किन्तु चालबाजों को यह अच्छा नहीं लगा।

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २५, २६।

भगवानदास माहौर इस दूसरी परीक्षा में भी उत्तीर्ण हो गये। इस तरह उन्होंने किशोर काल में दो परीक्षायें पास कीं।[१]

शिक्षा-काल

भगवानदास माहौर के मामा नाथूराम माहौर एक प्रसिद्ध कवि तथा रचनाधर्मी थे। माहौर की पढ़ने के प्रति रुचि देखकर वे भगवानदास माहौर को अपने साथ झांसी ले आये थे, माहौर अपने मामाजी के आश्रम में सपरिवार रहने लगे, उस समय भगवानदास माहौर लगभग ८-९ वर्ष के थे, उन्होंने भगवानदास माहौर की शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया था। भगवानदास माहौर ने १९२७ में झांसी से ही इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की, उसके बाद झांसी के शिक्षा विभाग में सुपरवाइजर का पदभार ग्रहण किया, कुछ समय बाद उन्होंने नौकरी छोड़ दी और उसके बाद ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज में बी०ए० में प्रवेश लिया। देशभक्ति के क्षेत्र में उतरने के बाद माहौर जी की शिक्षा बाधित हुई, स्वातन्त्र्योत्तर भारत में बहुत दिनों तक साम्यवादी दल से नाता रखने के बाद वे राजनीति से अलग हुए, उसके बाद बी०ए० तथा एम०ए० की परीक्षायें उत्तीर्ण की, फिर १९५७ में बुन्देलखण्ड कालेज, झांसी में हिन्दी विभाग में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। माहौर जी को हिन्दी में "१८५७ की क्रांति का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव" नामक शीर्षक के अन्तर्गत आगरा विश्वविद्यालय द्वारा दिसम्बर १९६५ में पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई।[२]

---

१. रामसिंह बघेले, क्रांतिवीर भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-०६-०७।

२. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३३।

भूत प्रोग्राम और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर १९२७-२८ में ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज में बी०ए० प्रथम के छात्र थे, वे १४ वर्ष की आयु में ही छात्रकाल में क्रांतिधर्म युयुत्सा के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे, उनका १९२४ में ही आजाद से सम्पर्क हो चुका था, ग्वालियर उस समय क्रांतिकारियों का केन्द्र था। उस कालेज के हॉस्टल में जो भी नवागत विद्यार्थी या अतिथि आता था, उसे वहाँ की परम्परानुसार भूत प्रोग्राम के विनोद से डराया जाता था। एक दिन चन्द्रशेखर आजाद भी भगवानदास माहौर से मिलने हॉस्टल पहुँच गये, आजाद के साथ भी भूत पर प्रोग्राम की घटना घटी, इण्टर कालेज में रहने वाले विद्यार्थी रात्रि के लगभग १०-११ बजे डिग्री कालेज के हॉस्टल के निकट पहुँचकर तरह-तरह के भयोत्पादक दृश्य प्रस्तुत करते थे, यथा- पेंड़ से अंगारे बरसना, भूतों के नर्तन का दृश्य एवं तरह-तरह की चीखें एवं पुकारों के दृश्य इत्यादि।[१]

भूत प्रोग्राम के मंचन की भूमिका डिग्री कालेज के हॉस्टल के छात्र पहले ही तैयार कर लेते थे, नवागत छात्रों एवं अतिथियों से डिग्री कालेज के हॉस्टल के सुन्दर वर्णन के साथ यह बता दिया जाता था कि यहाँ पर सभी प्रकार की अच्छाइयाँ हैं किन्तु एक ही कमी है कि यहाँ पर कभी-कभी भूत दिखायी पड़ जाते हैं। आजाद के साथ भी विद्यार्थियों ने जब भूत प्रोग्राम का मंचन करना चाहा तो माहौर उस समय असमंजस एवं धर्म संकट में पड़ गये।

---

१. भगवानदास माहौर, शिव वर्मा एवं मलकापुर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ८१, ८२।

यदि भूत प्रोग्राम विफल हो गया तो छात्र और मित्र माहौर को इस रुप में गद्दार कहते कि आपने इस प्रोग्राम के बारे में पहले से ही अतिथि को बता दिया है, यदि आजाद को थोड़ा सा भी इस मंचन से भय उत्पन्न होता तो वे तुरन्त पिस्तौल चला देते, जिससे कोई न कोई छात्र सचमुच में भूत बन जाता फिर भी माहौर जी ने आजाद के साहस को भूत नाट्य मंचन से जोड़कर देखने के लिए अपने आपको तैयार किया।[१]

भगवानदास माहौर ने आजाद से कहा कि पण्डित जी यहाँ (हॉस्टल) के लोग मजाकिया और शरारती किस्म के हैं। आप अपनी जेब में कोई भी आपत्तिजनक वस्तु न रखियेगा, ये लोग जेब में हाथ डाल देते हैं, आप जेब में पिस्तौल रखते हैं, ऐसी स्थिति में यही उचित रहेगा कि आप जेब में पिस्तौल न रखें, इस पर आजाद उखड़ गये बोले यह क्या बेवकूफी है? यहाँ पर यदि कुछ हो जाय तो मैं तो निहत्था पकड़ लिया जाऊँगा और कुछ कर भी न पाऊँगा, तुम यह हॉस्टल छोड़ो और कहीं मकान लेकर रहो। इस पर माहौर ने कहा कि मकान लेने के बारे में बाद में सोचेंगे, अभी जो परिस्थिति सामने है, उससे निपटना है।

आजाद ने विवश होकर माहौर को अपना पिस्तौल दे दिया, माहौर ने उसे बाक्स में बंद कर उसकी चाबी आजाद को दे दी, भूत प्रोग्राम निर्धारित समय पर प्रारम्भ हुआ, पेड़ से अंगारे बरसने लगे, हॉस्टल की दुमंजिल पर अस्थि कंकाल चलता हुआ नजर आने लगा, वह कंकाल कभी

---

१. भगवानदास माहौर, शिव वर्मा एवं मलकापुर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ८३।

दिखता कभी ओझल हो जाता, रसायनशाला की पानी की टंकी के ऊपर एक तेज प्रकाश बीच-बीच में दिखता और बुझ जाता, गैस प्लाण्ट के ऊपर भी कभी ज्वालायें जलतीं और कभी शान्त हो जातीं, माहौर और उनके साथियों ने इस नियोजित प्रोग्राम पर भय का प्रदर्शन किया।

ग्रीष्मकाल था, माहौर, उनके साथी छात्र एवं आजाद बाहर चारपाईयों पर लेटे थे, वे सब पहले चुपचाप पड़े रहे, कुछ देर बाद पास में पड़े एक सज्जन जब डर कर माहौर की चारपाई के ऊपर गिर पड़े, उनकी घिघ्घी बँध गयी, जब वे बुरी तरह डरकर काँपने लगे तो आजाद को उठना पड़ा, आजाद ने माहौर से पूँछा कि यह सब क्या है? जब आजाद के इस प्रश्न का माहौर ने टाल-मटोल वाला उत्तर दिया तो इस पर आजाद ने कहा- अबे चल, क्या पिन-पिन करता है? उन्होंने कहा यहाँ कुछ बदमाशी अवश्य हो रही है, इसकी शिकायत तुम लोगों को अधिकारियों से करनी चाहिए, भूत-वूत कुछ नहीं, यह किसी की शरारत है? आजाद उठे अपना कोट पहना, उसमें कुछ पत्थर भरे फिर माहौर से बोले चल, देखूँ साले को कौन है? मैंन उन्हें रोंक कर टालना चाहा, छोंड़िये, यह तो यहाँ होता ही रहता है? हमें क्या लेना-देना?[१] इस पर आजाद बोले, अबे चल, क्या खाक होता रहता है? देख नहीं रहा कि लड़के कितना डर रहे हैं? इन भूतों का पर्दाफाश तो हो ही जाना चाहिए, क्या तुम्हारे घुटने काँप रहे हैं? यदि माहौर ना कहते तो आजाद की दृष्टि में कायर सिद्ध होते, उनके पास आजाद के साथ चलने के अतिरिक्त कोई और दूसरा चारा नहीं था,

---

१. रामसिंह बघेले, क्रांतिवीर भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-०८-०९।

जिस पेंड़ से अंगारे बरस रहे थे, आजाद उस तरफ बढ़कर बीच फील्ड में खड़े हो गये, जैसे ही अंगारे बरसने लगे, आजाद ने दो-तीन पत्थर उस पेंड़ की तरफ जोर से सन सनाये, जहाँ-जहाँ से भूतों का नाट्य मंचन हो रहा था, उन्होंने सभी ओर पत्थर फेंके, भूतों का अभिनय करने वाले विद्यार्थियों के सिर तथा कानों के पास जब वे पत्थर गुजरे तो उन्हें चुप मार कर बैठ जाने में ही ख़ैर नज़र आयी। कुछ भागे, कुछ बैठ गये।

आजाद से हॉस्टल के छात्र कहते ही रहे कि वहाँ मत जाइये, मत मारिये, ये अपने ही लोग हैं, मगर आजाद ने पत्थर-वर्षा कर भूतों को भगा कर ही दम लिया, माहौर और उसके साथी विद्यार्थियों के पास इस रहस्य पर से पर्दा उठाने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा था, आजाद को छात्रों के भूत-अभिनय पर हँसी आ गयी, बाद में सभी भूत हॉस्टल में आ गये, भूत-विजयी आजाद से मिलकर सभी बहुत खुश हुए। आजाद ने उनके प्रोग्राम की तारीफ की। इस तरह से माहौर के शिक्षाकाल में घटी इस भूत-अभिनय के प्रति आजाद की साहसी-सोंच को समझा जा सकता है।[१]

झांसी की क्रांतिधर्मिता और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर का जन्म जिस मेदिनी में हुआ था, वहाँ के परिवेश का माहौर पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था, इसके अतिरिक्त भगवानदास माहौर की मनोभूमि पर जिसने सर्वप्रथम प्रेरणा-पौध लगाया, वे

---

१. रामसिंह बघेले, क्रांतिवीर भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-०८-०९।

थे- उनके मामा एवं तत्कालीन प्रख्यात कवि एवं साहित्यकार नाथूराम माहौर। भगवानदास माहौर को उनसे प्रभावी मार्ग दर्शन में सारस्वत विकास का पहला पाठ सीखने को मिला।

झांसी का राष्ट्र धर्मी आरेख बहुत ऊँचा एवं महत्वपूर्ण था। १८५७ की प्रथम स्वातन्त्र्य सिंहनी महारानी लक्ष्मीबाई ने बुन्देल क्षेत्र में वीरता एवं बलिदान के जो बीज बाये थे, वे भला कैसे बेकार जाते, उनके परवर्ती पुरोधाओं ने उन्हें अपने पौरुष-पानी से अनवरत सींचते रहे, फलतः कालान्तर में मास्टर रुद्रनारायण जैसे राष्ट्रनिष्ठ नाहर के नीर से पुष्पित एवं पल्लवित हुए। मास्टर साहब के प्रयासों से झांसी पुनः क्रांति के नये दौर में प्रविष्ट हुयी। बंगाल के क्रांति सूरमाओं ने यहाँ पर क्रांति के ताने-बाने को मजबूत करने में अभीष्ट योगदान प्रदान किया। शचीन्द्र नाथ बख्शी बंगाल के उन सांगठनिक शूरों में से एक थे, जिन्होंने झांसी में क्रांति दल की नींव को मजबूत किया, मास्टर साहब ने अपने घर पर एक व्यायामशाला खोल रखी थी, जहाँ पर राष्ट्र धर्मी युवा व्यायाम के बहाने राष्ट्र-प्रेम का पाठ पढ़ते थे, यहीं पर चन्द्रशेखर आजाद के प्रथम दर्शनो का सौभाग्य भगवानदास माहौर को मिला था और वे उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर राष्ट्र धर्म के क्षेत्र में कूद पड़े थे, उस समय माहौर की उम्र १४ वर्ष की थी।[१]

---

१. रामसिंह बघेले, क्रांतिवीर भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-०९, १०।

राष्ट्रधर्मिता के क्षेत्र में

मास्टर रुद्रनारायण वस्तुतः एक सुयोग्य शिक्षक, कलाकार चित्रकार एवं समर्पित राष्ट्र-चेता था। इन्होंने अपने आवास पर जो व्यायामशाला खोली थी, वह वस्तुतः एक व्यायामशाला न होकर राष्ट्र-प्रेम का पाठ पढ़ाने वाली एक राष्ट्रशाला थी, जहाँ पर युवा राष्ट्र प्रेम की दीक्षा लेते थे, यहीं पर भगवानदास माहौर को शचीन्द्र नाथ बख्शी एवं चन्द्रशेखर आजाद के दर्शन मिले थे, उस समय चन्द्रशेखर आजाद हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन के प्रधान न होकर मात्र एक सदस्य थे। उस समय आजाद लगभग १८-१९ वर्ष के एक बलिष्ठ युवा थे। वे झांसी में संगठन कर्ता शचीन्द्र नाथ बख्शी से मिलने आये थे, वे युवा जो आजाद के व्यक्तित्व से सर्वाधिक प्रभावित हुए थे, उनमें से सदाशिवराव मलकापुरकर, विश्वनाथ गंगाधार वैशम्पायन एवं भगवानदास माहौर प्रमुख थे।[१] भगवानदास माहौर के पिता उस समय झांसी के मुकरयाने मोहाल में रहते थे, उनकी आजाद से प्रथम भेंट यहीं पर हुई।

भगवानदास माहौर ने शचीन्द्र नाथ बख्शी के दुबले-पतले शरीर की तुलना में जब आजाद के बलिष्ठ शरीर को देखा तो उनकी क्रांतिकारियों के प्रति चौगुनी श्रद्धा बढ़ गयी। वे आजाद के इस मंत्र वाक्य- "बलशाली बनो, एक बलशाली सौ विद्वानों को कंपा देता है" बहुत प्रभावित हुए। भगवानदास माहौर शचीन्द्र नाथ बख्शी और चन्द्रशेखर आजाद द्वारा ली गयी एक-दो परीक्षाओं में भी उत्तीर्ण हो गये, इस तरह उन्हें क्रांतिकारियों की पाठशाला में प्रवेश मिला गया। फलतः भगवानदास माहौर राष्ट्रानुगामी हो गये।

---

१. रामसिंह बघेले, क्रांतिवीर भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-१०, ११।

निष्कर्ष

भगवानदास माहौर का बुन्देल क्षेत्र के दतिया जिले की जिस मेदिनी की सोंधी माटी में जन्म हुआ था, वह विश्व विश्रुत मल्लशूर गामा के शरीर-शौर्य से सुवासित थी, उस पर पीताम्बरा पीठ का भी प्रभाव था। इसके अतिरिक्त उन पर राष्ट्र-धर्मी कवीन्द्र नाथूराम माहौर का भी असर पड़ा, भगवानदास माहौर के संगीत परक जीवन पर उनकी माँ की प्रेरणा थी, वे आंचलिक गायकी के क्षेत्र की धनी थी। इस तरह से यदि देखा जाय तो भगवानदास माहौर के लिए भावी जीवन की पूर्व पीठिका बचपन में ही बन चुकी थी, इसीलिए यह कहा जा सकता है कि बचपन भविष्य की भूमिका होता है।

भगवानदास माहौर का सारस्वत विकास उनके मामा कवीन्द्र नाथूराम माहौर के छाँव तले हुआ, जिन्होंने उनकी बाल मनोधरा में राष्ट्र प्रेम की पौध लगायी, जो आगे चलकर किशोर-काल में मास्टर रुद्रनारायण के नेह-नीर से विकसित हुई और मात्र १४ वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते वे दृढ़ राष्ट्रानुरागी हो गये। भगवानदास माहौर के सम्बन्ध में यदि यह कहा जाय कि वे बलिदानी भावना को लेकर जन्मे थे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

भगवानदास माहौर इन भावों को लेकर जन्मे थे-

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ए आसमाँ,
हम अभी से क्या बतायें, क्या हमारे दिल में है।।

उनका बाल व किशोर जीवन इस तथ्य का साक्षी है कि वे धरती में अपने आगमन से लेकर जीवन के ऊषाकाल में कहीं पर भी इस रूप में नहीं दिखे कि उनमें कुछ करने की चाह न हो। इसलिए यदि यह कहा जाय कि भगवानदास माहौर एक जन्मजात क्रांतिधर्मी पुरोधा थे तो इसमें कोई अतिरेक नहीं होगा।

तृतीय अध्याय

झाँसी का क्रान्तिदल
और
भगवानदास माहौर

3

झांसी का क्रांतिदल और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर के पिता तुलसीदास माहौर ने छोटी बड़ौनी नामक अपने गाँव से झांसी आकर अपना आवास बनाया। भगवानदास माहौर को झांसी में अपने मामा नाथूराम माहौर का सानिध्य मिला, उन्हीं की देख-रेख में माहौर जी की सारस्वत-विकास यात्रा प्रारम्भ हुई। भगवानदास ने प्राथमिक शिक्षा से लेकर इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा झांसी मे ही प्राप्त की, माहौर १७ वर्ष की आयु में इण्टर कर चुके थे।

छात्र जीवन में जब वे १४ वर्ष के थे, ९वीं कक्षा में पढ़ रहे थे, तभी से भगवानदास माहौर राष्ट्र-प्रेम के क्षेत्र में प्रविष्ट हो गये थे।

क्रांतिधर्मिता और मास्टर रुद्रनारायण

झांसी अपनी अग्निधर्मी अगुवाई के लिए तो बहुत पहले से विख्यात रही है, प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष में झांसी ने तो अपनी एक अलग पहचान बनायी थी किन्तु सत्तावनी समर के बाद भी झांसी की स्वातन्त्र्य धर्मी सहभागिता कम महत्वपूर्ण नहीं रही। झांसी में क्रांतिदल की स्थापना एवं विकास में उस काल में यदि किसी स्वातन्त्र्य चेता ने सर्वाधिक रुचि ली तो वे थे- मास्टर रुद्रनारायण।[१]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १०।

मास्टर साहब ने अपने आवास में एक अखाड़ा खोल रखा था, जहाँ पर युवा वर्ग के कई युवक आकर व्यायाम के बहाने क्रांति के अर्थ एवं सिद्धान्तों से मुखातिब होकर विधिवत क्रांति दल की सदस्यता लेते थे, एवं राष्ट्रीय सेवा में जुट जाते थे।[१]

मास्टर साहब के अखाड़े से आकृष्ट होकर झांसी तथा आस-पास के नौजवान राष्ट्र-निष्ठा की शपथ लेकर क्रांतिदल में शामिल हो जाते थे। इस दृष्टि से यदि यह कहा जाय कि मास्टर रुद्रनारायण क्रांतिकारी संगठन के प्रथम शिल्पी थे तो इसमें कोई अतिशयोक्तिनहीं होगी। मास्टर साहब झांसी में क्रांति दल के संस्थापकों में से एक थे। भगवानदास माहौर को मास्टर रुद्रनारायण का छात्र-जीवन में ही नैकट्य प्राप्त हो गया था।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन और शचीन्द्र नाथ बख्शी का झांसी संगठन-शिल्प

रास बिहारी बोस एवं शचीन्द्र नाथ सान्याल जैसे संगठन-सूरमा हिन्दुस्तान में एक ऐसे क्रांतिकारी संगठन को खड़ा करना चाहते थे, जिसके बैनर तले आजादी के संघर्ष के बाद एक ऐसे समाज का विनिर्माण हो, जिसमें मनुष्य का मनुष्य के द्वारा शोषण एवं उत्पीड़न न हो, इसी दृष्टि से शचीन्द्र नाथ सान्याल एवं उनके मित्रों ने १९२१ में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन की स्थापना की एवं उसकी सारे देश में शाखायें स्थापित करने

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १०।

का उपक्रम प्रारम्भ किया, इसी क्रम में बंगाल से शचीन्द्र नाथ बख्शी को झांसी जैसी अग्निधर्मा धरती में क्रांति-दल की स्थापना एवं विकास के लिए भेजा गया।[१]

शचीन्द्र नाथ बख्शी झांसी आये, वे मास्टर रुद्रनारायण के घर पहुँचे, मास्टर रुद्रनारायण पहले से ही झांसी में क्रांतिकारी संगठन को खड़ा करने में संलग्न थे, सदाशिव राव मलकापुर, विश्वनाथ गंगाधर, वैशम्पायन तथा अन्य क्रांतिकारी युवा पहले से ही मास्टर साहब के सम्पर्क में आकर क्रांति दल में शामिल हो रहे थे, कई युवाओं का मास्टर रुद्रनारायण ने शचीन्द्रनाथ बख्शी से परिचय कराया।

शचीन्द्र नाथ बख्शी एवं चन्द्रशेखर आजाद का सानिध्य

मास्टर रुद्रनारायण ने अपने अखाड़े के माध्यम से तत्कालीन जिन अनेक युवाओं को आकृष्ट कर क्रांतिदल से जोड़ा था, उन सबको उन्होंने बख्शी से सम्पर्क कराया, उसी समय जाने-माने क्रांतिसूरमा चन्द्रशेखर आजाद भी मास्टर रुद्रनारायण के घर पधारे। आजाद उस समय उत्तर भारत में क्रांति-दल के स्थापना एवं विस्तार पर जुटे हुए थे। इन्हीं के प्रयासों से उस समय झांसी उत्तर भारत के क्रांतिकारी कार्यकलापों की केन्द्र बन गयी थी।

---

१. जानकी शरण वर्मा, अमर बलिदानी, झांसी, २०००, पृ०सं०-१९९।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन के उस समय के प्रधान पं० रामप्रसाद बिस्मिल तथा शचीन्द्र नाथ सान्याल जैसे सांगठनिक शूर थे। चन्द्रशेखर आजाद की झांसी में क्रांति के जिला संगठनकर्ता शचीन्द्र नाथ बख्शी से भेंट हुयी, शचीन्द्र नाथ बख्शी ने अपने एक साल के सांगठनिक प्रयासों से जिन युवाओं को तैयार किया था, आजाद उनसे भी मिले।

आजाद अपने आत्मीय आचरण से युवाओं के दिलों में स्थान बना लेते थे, इनकी आत्मीयता ऐसी होती थी कि न युवाओं को आजाद के बिना चैन पड़ता था और न आजाद को बिना युवाओं के। माहौर आजाद के बलिष्ठ शरीर को देखकर क्रांतिकारियों के प्रति आकृष्ट हुए। [१]

प्रथम परिचय में ही चन्द्रशेखर आजाद ने भगवानदास माहौर की एक नियोजित घटना क्रम के आधार पर परीक्षा ली, जिसमें भगवानदास माहौर पास हो गये, उसके बाद माहौर को आजाद का अनवरत सामीप्य मिलता रहा।

मास्टर रुद्रनारायण और भगवानदास माहौर

मास्टर रुद्रनारायण को यदि झांसी के क्रांतिकारी आन्दोलन के भीष्म पितामह कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे सचमुच झांसी के संघर्षी स्वातन्त्र्य समर की नींव के पत्थर थे। मास्टर साहब का छात्र-काल शाहजहाँपुर जैसी जुझारू जमीन में बीता था।

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६२, ६३।

माहौर यहीं पर १९२४ में शाहजहाँपुर में क्रांति-पुरोधाओं की बैठक में शामिल हुए थे, जिसमें शचीन्द्र नाथ बख्शी भी थे, शचीन्द्र नाथ बख्शी तब से जीवनान्त क्रांतिकारियों से जुड़े रहे।

मास्टर रुद्रनारायण १९२० से १९३०-३१ तक जेल में रहे। संकटकाल में मास्टर रुद्रनारायण ने यदि आजाद को संरक्षण प्रदान न किया होता तो आजाद आजाद के रूप में विश्रुत न हो पाते, भगवानदास माहौर मास्टर साहब के माध्यम से ही किशोर काल में क्रांतिदल में प्रविष्ट हुए। झांसी में पं० कृष्ण गोपाल शर्मा, मथुरा प्रसाद गांधी तथा अयोध्या प्रसाद को हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन की शाखा स्थापित होने से पूर्व ही शस्त्रास्त्र कानून के अन्तर्गत बंदी बना लिया गया था।

भगवानदास माहौर जब से मास्टर रुद्रनारायण के सानिध्य में आये, तब से क्रांति के क्षेत्र में अनवरत बढ़ते रहे। भगवानदास माहौर के लिए ही नहीं अपितु झांसी तथा आस-पास के सभी युवा वीरों के लिए मास्टर रुद्रनारायण पूज्य थे, मास्टर साहब गृहस्थ होकर भी क्रांतिधर्मी आचरण से कभी भी अपने को विरत नहीं रखा, उनकी कुर्बानी किसी भी सरफ़रोश से कम नहीं थी। उनके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी फिर भी वे माहौर तथा अन्य क्रांतिकारियों को यथा सामर्थ्य मदद प्रदान करते रहते थे, उनकी धर्म पत्नी भी उनके क्रांतिकारी कार्यों में सहभाग करती थीं।[१]

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, भाग-२,३, मिर्जापुर, क्रांतिकारी प्रकाशन, १९६७, पृ०सं०-१२।

पिता और परम्परा

मास्टर साहब की पत्नी मुन्नी देवी मास्टर साहब को सहयोग तो प्रदान करती थीं किन्तु कभी-कभी उन्हें अधिक सतर्कता से कार्य करना पड़ता था, जिसे उनकी संकुचित मनोवृत्ति माना जाता था, मास्टर साहब के पिता पुरातन परम्पराओं पर विश्वास रखते थे, चन्द्रशेखर आजाद की मास्टर साहब के चूल्हे-चक्की तक पहुँच थी, वे मास्टर रुद्रनारायण के परिवार में अन्दर तक बे रोक-टोक पहुँच जाते थे, मास्टर साहब के पिता उन दिनों मास्टर साहब के साथ ही रहते थे, उ०प्र० में पर्दा प्रथा पुरजोर थी, उनके पिता को आजाद का घर में इस तरह आना-जाना पसन्द नहीं आया, उनकी दृष्टि से में एक नव युवा का जवान बहू के घर में होते हुए बिना किसी प्रतिबन्ध के आना-जाना अच्छा नहीं था।[१]

इस प्रश्न को लेकर पहले बाप-बेटे में शिथिल-विरोध होता रहा किन्तु आगे चलकर दोनों में ठन गयी, इस पर मास्टर साहब को यह आशंका हुई कि कहीं यह मामला इतना तूल न पकड़ ले कि गुप्तचर विभाग तक यह मसला पहुँच जाय, जबकि मास्टर साहब के यहाँ आने-जाने वालों पर गुप्तचर विभाग की भी नजर रहती थी, एकाध बार उनके घर की तलाशी भी हो चुकी थी। इन सब बिन्दुओं को ध्यान में रखकर विवश होकर मास्टर साहब को अपने पिता से आजाद की असलियत बतानी पड़ी।[२]

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-१२, १३।

२. वही, पृ०सं- १३।

मास्टर साहब के घर में बाहर-भीतर तक केवल आजाद का ही नहीं अपितु सदाशिव राव मलकापुर, भगवानदास माहौर तथ विश्वनाथ वैशम्पायन का भी सम्पर्क था। भगवानदास माहौर को भी मास्टर रुद्रनारायण का पूरा सामीप्य प्राप्त था। उन्होंने माहौर जी को समय-समय पर सहयोग तथा संरक्षण दोनों उपलब्ध कराये। आजाद के यथार्थ से अवगत होने पर मास्टर साहब के पिता के दृष्टिकोण में आजाद के प्रति बदलाव आ गया। [१]

मास्टर रुद्रनारायण साहस के धनी थे। काकोरी काण्ड के बाद आजाद इलाहाबाद से झांसी आकर मास्टर साहब के यहाँ ही रुके, मास्टर रुद्रनारायण को पता था कि आजाद को शरण देना खतरे से खाली नहीं है, फिर भी उन्होंने आजाद को पनाह देने में कोई हीला-हवाली नहीं की, इसके बावजूद शंका होने पर पुलिस द्वारा उनके दरवाजे पर पहरा दिया जाता था, पुलिस गुप्तचरी करती थी किन्तु इससे मास्टर साहब पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, वे अपने दरवाजे पर नियुक्त पुलिस को अपने कमरे में बैठाते थे तथा उनसे पंजा और कलाई भी लड़ाते थे।

कुछ दिनों के बाद आजाद भी इस जोर आजमाइश में शामिल हो गये। मास्टर साहब के यहाँ इस बैठकी में कम्मोद सिंह नामक एक हेड कांस्टेबिल भी रहता था, जो एकाक्ष था। कम्मोद सिंह को आजाद की बहुत तलाश रहती थी, वह मास्टर साहब से अधिकतर आजाद के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए कहा करता था कि यदि आजाद हमारी गिरफ्त में आ जाय

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १३।

तो हमारे लिए पौ बारह हो जाय, इस पर मास्टर साहब खिल खिलाकर हँसते हुए चुटकी लिया करते थे।[१]

भगवानदास माहौर को मास्टर रुद्रनारायण जैसे क्रांति के पुरोधाओं का निकट से सम्पर्क प्राप्त था। माहौर ने जब से क्रांति के क्षेत्र में कदम रखा तब से वे जीवनान्त क्रांति धर्मी बने रहे। ०९ अगस्त १९२५ की काकोरी ऐतिहासिक डकैती के बाद मास्टर रुद्रनारायण ने भगवानदास माहौर तथा उनके साथियों में सदाशिव मलकापुर तथा विश्वनाथ वैशम्पायन को एक लम्बे अर्से तक सुरक्षित रखा, मास्टर साहब ही इस प्रकार का जोखिम उठा सकते थे।

क्रांतिदल का पुनर्गठन और भगवानदास माहौर

०९ अगस्त १९२५ की काकोरी ट्रेन डकैती एवं १९२९ के असेम्बली बम काण्ड के बाद हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ के कुछ सांगठनिक पुरोधा जेल-प्रवास में चले गये थे और कुछ फरारी हालत में थे, क्रांतिकारी संगठन कुछ अस्त-व्यस्त सा हो गया था, ऐसे में शचीन्द्र नाथ सान्याल, शचीन्द्र नाथ बख्शी जैसे समर्पित संगठनकर्ता क्रांतिकारी संगठन के पुनर्व्यस्थापन पर जुट गये। उ०प्र० के बनारस, आगरा, झाँसी एवं कानपुर जैसे प्रमुख केन्द्रों में सांगठनिक गतिविधियाँ पुनः शुरू हुईं।

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, भाग- १,२, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १५।

भगवानदास माहौर चन्द्रशेखर आजाद तथा भगत सिंह के अति विश्वसनीय व्यक्ति थे। क्रांतिदल से जुड़े हर क्रांतिकारी युवा का एक सांकेतिक या छद्म नाम (Code name) होता था।

माहौर का दलीय नाम

दल में चन्द्रशेखर आजाद पण्डित जी एवं बलराज के नाम से जाने जाते थे, भगत सिंह का दल का नाम रणजीत था, विजय कुमार सिन्हा बच्चू नाम से विश्रुत थे। विजय कुमार सिन्हा ने हँसी-हँसी में माहौर के लिए हनुमान या महावीर जैसा दलीय नाम सुझाया, जिस पर भगत सिंह अपनी मुस्कराहट न छिपा सके और कहा कि यह ठीन न रहेगा, नाम वह होना चाहिए, जिससे उसकी पहचान न हो सके, माहौर भगत सिंह के इस गंभीर विनोद से बहुत प्रभावित हुए। अन्त में भगवानदास माहौर का दलीय नाम कैलाश रखा गया, जो भगत सिंह द्वारा ही सुझाया गया था।[१]

भगत सिंह और भगवानदास माहौर

भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद, ये ऐसे दो नाम हैं जिन्हें यदि भारत की सशस्त्र क्रांति के प्रतीक कहा जाय तो इसमें कोई अतिशयोक्तिनहीं होगी, वैसे तो सशस्त्र क्रांति के बीज का अंकुरण आध्यात्मिक-अवनि में ही हुआ था किन्तु वह धार्मिक क्षेत्र से ऊपर उठ कर समाजवाद के सलिल से पुष्पित और पल्लवित हुआ, जिसमें भगत सिंह का अप्रितम योगदान था, जिसे अंग्रेजी में कार्नर स्टोन या मोड़ का पत्थर कहा

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४३।

जाता है, समय और समाज की आवश्यकताओं की माँग ने भगत सिंह की ओर उत्तर भारत के सशस्त्र संघर्षियों को मोड़ दिया था, भगत सिंह ने क्रांतिधर्मी विचारों को धार्मिकता से परे किया।[१]

भारत का गुप्त क्रांति धर्मी आन्दोलन जहाँ इटली के मैजिनी, गैरी बाल्डी और आयरलैण्ड के सिनफिन जैसे मध्य वर्गीय चरित नेताओं के आदर्शों से अनुप्राणित था, वहीं अब भगत सिंह के कारण स्वाधीनता आन्दोलन रूसी-क्रांति तथा मार्क्स और लेनिन के समाजवादी आदर्शों से अनुस्यूत हो गया। भगत सिंह ने ही भारत के क्रांतिकारी आन्दोलन को "इन्कलाब जिंदाबाद" तथा "साम्राज्यवाद का नाश हो" आदि जैसे मंत्र नारे दिये।

काकोरी युगीन पं० रामप्रसाद बिस्मिल, शचीन्द्र नाथ सान्याल और जोगेश चन्द्र चटर्जी आदि के भारतीय प्रजातंत्र संघ (The Hindustan Republican Association) का भगत सिंह तथा उनके साथियों के प्रभाव से हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ के रूप में विकास हुआ। इस तरह से यदि देखा जाय तो भगत सिंह मात्र २३ वर्ष, ०५माह और २४ दिनों की उम्र में ही अपनी नियोजित क्रांति-साधना और राष्ट्र निष्ठा के बल पर गौरव के उस आरेख पर पहुँच गये, जहाँ पर एक शतजीवी संघर्षी क्रांतिकारी भी नहीं पहुँच पाता।[२]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३८, ३९।

२. वही, पृ०सं- ३९।

भगवानदास माहौर की भेंट शचीन्द्र नाथ बख्शी तथा चन्द्रशेखर आजाद से १९२४ में झांसी में हुई थी, माहौर की जिस समय आजाद से मुलाकात हुई थी, उस समय १९२५ के काकोरी काण्ड की पूर्वपीठिका बन रही थी। काकोरी काण्ड के बाद केवल चन्द्रशेखर आजाद तथा कुन्दल लाल गुप्त ही अवशेष के रूप में पुलिस की पकड़ से बचे थे, शेष क्रांतिदल के शीर्ष या प्रथम पंक्ति के पुरोधा जेल के अन्दर हो गये थे।[२]

ऐतिहासिक काकोरी ट्रेन डकैती की घटना के बाद हिसप्रस के सदस्य या क्रांतिकारी युवा तत्कालीन संकट से उबर भी नहीं पाये थे कि १९२९ के असेम्बली बम काण्ड के बाद क्रांति के त्रिनायकों यथा- भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के द्वारा स्वेच्छा से गिरफ्तार हो जाने से हिसप्रस लगभग छिन्न-भिन्न हो गया था, केन्द्रीय संगठन को बहुत आघात पहुँचा था। भगत सिंह से जिस समय माहौर का प्रथम परिचय हुआ था, उस समय वहाँ पर प्रसिद्ध क्रांतिकारी विजय कुमार सिन्हा भी थे, भगत सिंह, विजय कुमार सिन्हा तथा सुखदेव एक कोने में बैठे आपस में बात-चीत कर रहे थे, माहौर उनके लिए नवागन्तुक थे, वे सभी माहौर जी को देखकर मुस्करा रहे थे, भगत सिंह के द्वारा माहौर के सम्बन्ध में कहे गये शब्दों को स्वयं माहौर ने सुन लिया था- 'ऐसा लगता है कि डारविन का कहना ठीक है, ये महाशय बन्दर और आदमी के बीच की कड़ी हो सकते हैं'', यह सुनकर विजय कुमार सिन्हा जोर से हंस पड़े।[१]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४१, ४२।

२. वही, पृ०सं०- ४२

माहौर जी को पहले तो यह घटना समझ में नहीं आयी किन्तु थोड़ी देर में उनकी समझ में आ गया कि ये सब लोग मेरे शरीर तथा शक्ल की विवेचना कर रहे हैं, गम्भीर होकर भगत सिंह ने माहौर को संकेत कर अपने निकट बुलाया, उन्होंने भगवानदास माहौर से बड़ी सद्‌भावना एवं सदाशयता से बात-चीत की, जिसका माहौर पर अनुकूल असर पड़ा, भगवानदास माहौर की भगत सिंह से इस प्रथम परिचय के बाद से ही उनके प्रति श्रद्धा बढ़ने लगी।

भगत सिंह के बल का माहौर पर प्रभाव

माहौर का भगत सिंह से प्रथम परिचय के बाद उपस्थित क्रांतिपुत्रों की स्नान-साधना शुरू हुई, नहाने के पूर्व भगत सिंह ने चन्द्रशेखर आजाद की पीठ में तेल मालिश की और आजाद ने भगत सिंह की पीठ पर तेल लगाया, दोनों एक दूसरे के हाथ मलने लगे, फिर दोनों में जोर-आजमाइश होने लगी, भगत सिंह ने आजाद को उठा कर पटक दिया, जिससे उनके घुटने छिल गये। इस घटना के पूर्व माहौर आजाद की ताकत का लोहा माना करते थे किन्तु स्नान के समय घटी इस घटना के बाद माहौर भगत सिंह के शारीरिक बल के प्रशंसक हो गये, इसके बावजूद माहौर इस नतीजे पर अवश्य पहुँचे थे कि इस उठा-पटक में आजाद ने अपनी पूरी ताकत का प्रयोग नहीं किया है, वरना ताकतवर आजाद की पटकनी इतनी सुगम न होती, सम्भव है कि आजाद ने ऐसा अपने परम मित्र भगत सिंह के मान को रखने के लिए किया हो।[१]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४२,४३।

कलाई-पंजा की लड़ाई के क्षेत्र में भगत सिंह माहौर से पीछे

भगवानदास माहौर शारीरिक सौष्ठव में भले ही आगे न रहे हों किन्तु शारीरिक क्षमता में वे कभी कम नहीं रहे, वे बलिष्ठ थे, इसके अतिरिक्त भगवानदास माहौर और सदाशिवराव मलकापुरकर कलाई-पंजा की लड़ाई में अग्रणी थे। भगत सिंह ने भी कलाई में जोर आइमाई की किन्तु भगवानदास माहौर एवं सदाशिव से इस कला में जीत न पाये, इसके अतिरिक्त जब भगत सिंह एवं माहौर में मित्रता और बढ़ गई तो दोनों में कभी-कभी हाथा-पाई भी हो जाती थी।[१]

'भक्षण चक्र', भगत सिंह और भगवानदास माहौर

मातृभूमि के रक्षक सपूतो की दिनचर्या पर दृष्टिपात करने से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि ये देश के दीवाने देहाभिमान से परे होकर उसे जीवित रखने के सामान्य उपायों से भी नीचे के संसाधनों का सहारा लेकर मातृभूमि की वंदना करते थे। उनके सादगी भरे जीवन की पुष्टि के लिए यहाँ पर एक या दो प्रसंगों का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा।

भगत सिंह एक खाते-पीते परिवार के एक समृद्ध सदस्य थे। उन्हें देखकर यह कोई आसानी से कयास नहीं लगा सकता था कि एक सम्पन्न परिवार का युवा गंदे कपड़ों तथा रूखा-सूखा खाने से परहेज किये बिना फाँके-मस्त बनकर क्रांतिकारी परिवार में ऐसे घुल-मिल जायेगा कि

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४३।

पहनना तथा रूखा-सूखा भोजन स्वाभाविक था, किन्तु भगत सिंह के व्यवहार ने स्वाभाविकता से सांठ-गांठ कर ली थी, वे कर्तव्य-भावना से बंधे थे।[१]

दल की आर्थिक तंगी

क्रांतिकारियों का कंचन से छत्तीस का आँकड़ा रहता था, क्रांतिदल की माली हालत खराब थी, क्रांतिकारियों को कमजोर आर्थिक के कारण बाजार से पूडियाँ खरीदकर खाने के लिए पैसे नहीं मिलते थे, उसके बदले में बाजार से खाद्य सामग्री खरीद कर घर में ही बनाकर खाने की हिदायत थी।

लौह लाड़लों की तत्कालीन गोरों से ही नहीं अपितु लक्ष्मी से भी अनबन थी, ये कर्म के कुरुक्षेत्र में कुबेर से भी लड़ते रहे किन्तु जर्जर आर्थिक अभाव को ये अपनी जीवटता पर हावी नहीं होने देते थे। इनके पास बर्तनों का भी अभाव था, ये क्रांतिवीर अक्खड़ आदत के होते थे, कभी-कभी इनके पौरुष तथा पाक (पाक विज्ञान) के बीच सामंजस्य देखे ही बनता था, ये लोग दाल को मिट्‌टी के बर्तनों में बनाते थे, भोजन बनाने की कला में ये माहिर तो होते नहीं थे, ये तो जीने के लिए खाते थे, खाने के लिए नहीं जीते थे। ये पाकवीर दाल में मिर्च तथा नमक तो डाल देते थे किन्तु इन्हें यह ज्ञान नहीं था कि दाल में हल्दी भी डाली जाती है।[२]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४४।

२. वही, पृ०सं०- ४४, ४५।

इनके द्वारा पकायी गयी दाल के दर्शन कर भूख स्वयं भाग जाती थी। ये पाकशास्त्री मौजीले होते थे, आग में अधपके व जले टिक्कड़ों को बनाकर चलते-फिरते भोजनालय के चारो ओर ये क्रांतिकारी ऐसे बैठ जाते थे मानो वे किसी लंच या डिनर के सुसज्जित सेटों पर बैठों हों। उनकी इस पाक कला को भक्षण चक्र कहा जाता था, जिनकी तुलना अघोरी-विद्या से की जाती थी, चन्द्रशेखर आजाद ने तो हालात से सामंजस्य स्थापित कर अपने आपको वांछित परिवेश में डाल लिया था।

भगत सिंह एक सुखी व सम्पन्न परिवार से आये थे, उनके लिए इस हालात में भेंट करना मुश्किल हो सकता था, किन्तु उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर ऐसा अवसर ही नहीं आने दिया कि उन पर उँगली उठ सके। वे मित्रों द्वारा निर्मित भोजन को एक या दो ग्रास में इस तरीके से ग्रहण कर लेते थे कि मानो वे पूरी तरह संतुष्ट हो गये हों और रूमाल से मुँह पोछकर खड़े होकर भोजन की तारीफ के पुल भी बांध देते थे। उसके बाद उन्होंने आर्थिक प्रबन्ध कर भोजन की समुचित व्यवस्था भी बनायी, जिससे क्रांतिकारी अच्छा भोजन कर सकें।[१]

जोगेश चन्द्र चटर्जी एक प्रमुख क्रांतिकारी थे, वे आगरा की जेल में बंद थे, हिसप्रस की यह योजना की थी कि जब योगेश चन्द्र चटर्जी को आगरा जेल से अन्य जेल में ले जाया जा रहा हो, उसी बीच पुलिस से उन्हें छुड़ा लिया जाय, इस योजना को साकार करने हेतु क्रांतिकारियों ने आगरा में पड़ाव डाल दिया था, जिसमें भगवानदास माहौर थे, संयोगवश चटर्जी का

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४५।

जेल-स्थानान्तरण कुछ महीनों के लिए रुक गया, फलतः हिसप्रस की योजना साकार न हो सकी, आगरा-प्रवास में भगवानदास माहौर ने भगत सिंह के क्रांति विषयक विचार एवं उद्देश्य सुने, किन्तु उनका उद्बोधन माहौर को अधिक प्रभावित न कर सका। माहौर जी यह जानते थे कि हम देश के लिए लड़ रहे हैं।

कुठे गुन्तला, भगत सिंह और भगवानदास माहौर

दिसम्बर १९२८ में एक दिन प्रसिद्ध क्रांतिकारी विजय कुमार सिन्हा भगवानदास माहौर को ग्वालियर से लौहार ले गये, वहाँ पर माहौर को उन्हें लाहौर में आगरा के साथी मिले और नये चेहरों में हंसराज बोहरा और जय गोपाल से उनकी प्रथम भेंट हुई, हंसराज बोहरा भगत सिंह के स्नेही पात्र थे। एक दिन हंसराज बोहरा क्रांतिकारियों के ठहराव - स्थल पर आया और भगत सिंह को आवाज लगायी, भगत सिंह मकान की ऊपरी मंजिल पर थे। भगत सिंह ने ऊपर से आवाज लगाकर कैलाश (भगवानदास का दलीय नाम) को पुकारा और कहा कि नीचे जाकर साइकिल को ऊपर चढ़ा लाओ, भगवानदास माहौर किसी अन्य धुन में थे, वे अनसुरी कर गये। भगत सिंह माहौर के मनोभावों को समझकर कह दिया कि रहने दो। उसके बाद उन्होंने राजगुरु से साइकिल ऊपर मंगवा ली। उसके पश्चात् भगत सिंह माहौर से बोले- हनुमान जी, आपकी बुद्धि भी वैसी ही है, मुझे लोग पहचान न लें इसलिए मैं स्वयं साइकिल ऊपर नहीं लाया था, भगत सिंह ने यह हास-परिहास में कहा था।

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ५२, ५३।

उसके बाद भगत सिंह बोले कि हम अगर न भी चाहें तो भी आप गाना अवश्य गायेंगे। जल्दी कीजिए, गीत सुना दीजिए, फिर हमें और कार्य करने हैं। हंसराज बोहरा ने भी भगत सिंह के प्रस्ताव का समर्थन किया, उसने कहा कि सुना है कि आप बहुत अच्छा गाते हैं। भगत सिंह को मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान था, वे मेरी मंशा को ताड़ गये कि यह गीत तो गाना चाहता है किन्तु इस लहजे में कहने पर नहीं गाना चाहता।

भगवानदास माहौर ने कहा कि अभी मूड नहीं है, इस पर भगत सिंह बोले कि गवैये जैसे नखरे न कीजिए, सुना डालिये झटपट। भगत सिंह के माहौर को अधिक खिजाने पर माहौर न उनके एक घूँसा मार दिया, परिणामतः दोनों में मुक्केबाजी होने लगी। भगत सिंह ने माहौर की जम कर पिटाई कर दी, माहौर के पिटने के बाद मित्रों ने बीच-बचाव किया, भगत सिंह ने कहा कि कैलाश (माहौर) ने आक्रमण किया है, मैं तो आत्मरक्षा में लड़ा हूँ, दोनों के बीच संधि हो सकती है, किन्तु शर्त मैं रखूँगा, भगत सिंह की बात का साथियों ने समर्थन किया, भगत सिंहने कहा कि संधि इस पर निर्भर करेगी कि कैलाश अपना वही गीत- 'कुठे गुन्तला' सुनाये।[१]

कुठे गुन्तला एक मराठी गीत था, जिसे माहौर अधिकांशतः गाया करते थे, मित्रों के दबाववश माहौर ने वही मराठी गीत गाया-

---

१. भगवानदास सेठ, झाँसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १४४, १४५।

सखये तो प्राण माझा

राजा कुठे गुन्तला

मन उदास चिन्ता वाही

तिल उसंत जीवा नाही

अधीर दर्शनाला

राजा कुठे गुन्तला

श्रंगार अंगार वरचा

अंगार साचां

रुचे न मनाला

राजा कुठे गुन्तला

इसका अनुवाद माहौर ने इस प्रकार किया -

हे सखि वह मेरा प्राण, मेरा राजा

वहां उलझकर रह गया,

मेरा मन उदास है, जीव को जरा भी कल नही है

दर्शनों के लिए अधीर है

वह कहाँ उलझ गया

शरीर का श्रृंगार अंगार हो गया है

मन को अच्छा नहीं लगता

मेरा राजा कहाँ उलझ गया [१]

---

१. भगवानदास सेठ, झाँसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १४५।

माहौर ने 'कुंठे गुन्तला' नामक गीत गाया, गीतकाल में भगत सिंह माहौर की तरफ पीठ करके लेट गये, जिस पर माहौर ने टिप्पणी करते हुए कहा कि गाना सुनने की तमीज़ तो है नहीं और ऊपर से कहते हैं- गाना गाइये। इन्हें (भगत सिंह) कहिए कि इधर मुँह करके बैठे। इस पर भगत सिंह ने व्यंग किया, माफ कीजिए मैं संधि की शर्त वापस लेता हूँ, गाने के साथ यदि शक्ल भी देखनी पड़े तो इससे अच्छा होगा कि गाना ही न सुना जाय।इस पर सभी मित्र हँस पड़े, हंसराज बोहरा ने माहौर के गाने की तारीफ की। उसके बाद लाहौर में ही माहौर का दूसरा उपनाम 'कुठे गुन्तला' पड़ गया, जिसे सभी क्रांतिकारी मित्र माहौर को बुलाने के लिए प्रयोग करते थे।

लाहौर षडयन्त्र केस में हंसराज बोहरा और जयगोपाल अप्रूवर (मुखबिर) बनने पर उन्होंने भगवानदास माहौर का यही नाम बताया था। कुठे गुन्तला के नाम से माहौर का वारण्ट भी निर्गत हुआ था, उस समय के फरार लोगों की सूची में भगवानदास माहौर का नाम कुठे गुन्तला ही छपा था, क्रांतिकारी मित्र इस नामकरण के बाद माहौर के दलीय नाम कैलाश के स्थान पर उन्हें इसी नाम से पुकारते थे। माहौर इस नाम से प्रसिद्ध हो गये थे।[१]

भगवानदास माहौर में स्वर तथा साहित्य का अद्‌भुत संगम था, वे क्रांतिदल को नैराश्य के क्षणों में अपने प्रभावी गायन द्वारा नव प्रेरणा प्रदान करते थे, दल के सभी मित्र उनकी गायन कला के कायल थे।

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ५३।

ग्वालियर मे क्रांति-विस्तार और भगवानदास माहौर

काकोरी-केस के बाद क्रांति-दल बिखर गया था, जिसे पुनर्गठित करने में चन्द्रशेखर आजाद ने पुनर्प्रभावी भूमिका निभायी, इस सिलसिले में बुन्देलखण्ड तथा अन्य क्षेत्रों के कई हिस्सें में दल के पुनर्स्थापन पर आजाद ने केन्द्रीय भूमिका निभायी। उत्तर भारत में एक बार फिर दल के गठन की हलचलें तेज हो गयीं

झांसी में चन्द्रशेखर आजाद ने बिखरे सूत्रों को पुनः एक सूत्र में पिरोने का कार्य प्रारम्भ किया। झांसी में उस समय सक्रिय क्रांतिकारियों की संख्या बारह के लगभग थी, जिनमें भगवानदास माहौर, सदाशिव मलकापुरकर, बालकृष्ण, सोमनाथ, कालिका प्रसाद अग्रवाल और सीताराम भागवत इत्यादि थे। आजाद ने माहौर को ग्वालियर में दल के विस्तार के लिए भेजा। माहौर ने १९२८ में ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज में बी०ए० प्रथम में प्रवेश लिया था।

भगवानदास माहौर में संगठन क्षमता कम नहीं थी। वे पहले ग्वालियर में विक्टोरिया कालेज के हॉस्टल में रहते थे, बाद में आजाद के सुझाव पर माहौर शहर के बाहरी भाग के एक कोने पर नाका चन्द्रवदनी में मकान लेकर रहने लगे थे, उनके साथ विजय कुमार सिन्हा, सुखदेव और वटुकेश्वर दत्त कुछ दिनों से रह रहे थे।[१]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४६, ४७।

एक रात को सदाशिव भगत सिंह को लेकर ग्वालियर आ धमके, रात का समय था, माहौर के किराये वाले मकान के निकट एक ऊँची पहाड़ी थी, भगत सिंह को यह उपत्यिका पसंद आयी, वे देर रात तक पंजाबी भाषा में सुखदेव से बाते करते रहे, भगत सिंह बातों मे इतने व्यस्त हो गये कि उन्हें इस बात का ध्यान नहीं रहा कि यह लाहौर न होकर लश्कर है, जहाँ प इतनी देर रात में बैठे रहना लोगों के ध्यान को आकृष्ट करने का कारण बन सकता है। माहौर को जिस बात की आशंका थी, वही हुआ, एक पहरेदार सिपाही ने उन दोनों को रात में देर तक जोर-जोर से बाते करनें के कारण टोका, जो दोनों पक्षों को नागवार गुजरा, सिपाही अपने रोब पर था और ये वाग्वीर भी टोका-टांकी के आदी नहीं थे, वह सिपाही पुनः दो-तीन साथियों के साथ आया और पुनः वही राग अलापने लगा। भगत सिंह तथा सुखदेव ने अवसर को पहचानकर मामले को सुलझाया किन्तु सिपाहीगण ने कहा जब प्रातः थाने आओगे तो पता चल जायेगा, तुम्हारी कान्सपरेसी समझते हैं, यह कह कर चले गये। भगत सिंह ने माहौर को जगाकर यह सब दास्तान सुनाया, जिस पर उन्होंने बम एवं पिस्तौल जैसे प्रतिबन्धित सामग्री वहाँ से हटा दी और माहौर ने प्रातः अपनी सूझ-बूझ से मामले का निस्तारण करवा लिया।[१]

भगवानदास माहौर भगत सिंह तथा आजाद के निर्देशों को पूरी निष्ठा से अनुपालन करते थे। उन्होंने आगरा तथा ग्वालियर में दल के विस्तार में प्रभावी भूमिका निभायी थी।

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४६, ४७।

निष्कर्ष

मास्टर रुदनारायण का जन्म लक्ष्मणपुर अर्थात लखनऊ में हुआ था, किन्तु उनका सारस्वत विकास शूरों के शहर शाहजहाँपुर में हुआ था। पं० राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ एवं ठा० रोशन सिंह जैसे वीरों की इसी धरती में उनका शचीन्द्र नाथ बख्शी एवं चन्द्रशेखर आजाद से सम्पर्क हुआ था, वे १९२४ की शाहजहाँपुर में हुई क्रांतिकारियों की बैठक में भी सहभागी हुए थे, इस तरह उनके मनोक्षितिज में शिक्षा काल में ही राष्ट्रानुराग का अंकुरण हो चुका था।

मास्टर रूद्रनारायण झांसी की सरस्वती पाठशाला में कला-शिक्षक थे, मास्टर साहब के प्रयासों से ही झांसी में क्रांतिकारी संगठन विस्तार पा सका, ये अपने घर में व्यायामशाला खोले थे, जिसमें भगवानदास माहौर एवं अन्य युवा कसरत-कुश्ती का अभ्यास करते थे। हिसप्रस की ओर से शचीन्द्र नाथ बख्शी झांसी में क्रांतिदल को खड़ा एवं सरसब्ज करने की दृष्टि से आये थे।

मास्टर साहब के घर ही १९२४ में माहौर जी को बख्शी बाबू तथा चन्दशेखर आजाद के दर्शन हुए थे, माहौर उस समय चौदह बसंत देख चुके थे, चौदह वर्षीय युवा भगवानदास माहौर अपनी उम्र के किशोर काल में ही क्रांति पाठी हो गये थे, उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे सदैव राष्ट्र धर्मी रहे। उन्होंने झांसी तथा ग्वालियर में क्रांति-विस्तार के क्षेत्र में प्रभावी योगदान प्रदान किया। वस्तुतः माहौर जी झांसी के क्रांतिकारी आन्दोलन के भीष्म पितामह कहलाने वाले मास्टर रुद्रनारायण के सम्पर्क से ही क्रांति के क्षेत्र में उतरे थे, तत्पश्चात् वे क्रांतिधर्मी संघर्ष के साफल्य शिखर की ओर अनवरत अग्रसर रहे।

चतुर्थ अध्याय

चन्द्रशेखर आजाद
और
भगवानदास माहौर

4

चन्द्रशेखर आजाद और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर उस कच्ची धातु की तरह थे जो बिना निखरे भाव-जगत में अपनी कीमत के आकलन से परे रहती है। भगवानदास माहौर भारतीय मणिभूमि के वह हीरे थे, जिन्हें मास्टर रुद्रनारायण, शचीन्द्र नाथ बख्शी, चन्द्रशेखर आजाद और भगत सिंह ने अपनी प्रोसेसिंग तकनीक में ढालकर एक बेशकीमती हीरा बना दिया था।

भगवानदास माहौर जन्मना संगीतज्ञ थे, साथ ही उनकी वैचारिक अवनि में सबसे पहले विश्रुत रचना धर्मी मामा नाथूराम माहौर ने विचार रोपण किया था। भगवानदास माहौर को शिक्षा काल में ही १९२४ में क्रांतिकारियों के क्रांतिकारी पुरोधा चन्द्रशेखर आजादके दर्शनों का सुयोग मिला था। माहौर आजाद के चुम्बकीय व्यक्तित्व से इतने आकृष्ट हो गये कि वे फिर अपने को आजाद से अलग नहीं कर सके, इसके पूर्व कि भगवानदास माहौर आजाद के निकट और विश्सनीय साथी रहे हैं, का विवेचन किया जाय, यहाँ पर आजाद के संदर्भ में उनसे जुड़े कुछ प्रसंगों का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा।[१]

आजाद के जीवन का ऊषाकाल और आन्दोलन

चन्द्रशेखर आजाद का उस सोंधी माटी में जन्म हुआ था, जिसमें से किसान और मजदूरों की मेहनत की महक आ रही थी, आजाद का जन्म

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ५९, ६०।

मध्य प्रदेश की अलीराजपुर रियासत के भावरा ग्राम में हुआ था, आजादी के बाद रियासतों के विलयन से भावरा मध्य भारत के म०प्र० में आ गया और आज वह झावुआ जिले मे आता है। आजाद ने बचपन में ही आदिशवासी तथा किसानों के जीवन को निकट से देखा था, इसलिए प्रारम्भ से ही उनकी मनोभूमि में जनवादी विचारों का वपन हो चुका था, जो बचपन में ही बम्बई - प्रवास के पानी से अंकुरित हो गया था, आजाद बम्बई में भी कुछ दिन श्रमिकों के बीच रहे, वहाँ पर मेहनत - मजदूरी की। बम्बई में आवासीय असुविधा तथा प्रदूषित पर्यावरण ने आजाद को पुनः संयुक्त प्रान्त की ओर प्रस्थानित कर दिया, वे उन्नाव निवासी शिवनायक मिश्र की मदद से एक संस्कृत पाठशाला में प्रवेश पा गये।

आजाद का मन अनुशीलन में नहीं लगा। उन्होंने मुम्बई तथा बनारस के प्रवास मे ही अनुभव कर लिया था कि सामंजस्य और व्यवहार प्रवणता ये ऐसे दो साधन हैं, जिनके सहारे आत्मीयता एवं विश्वास हासिल किया जा सकता है। आजाद का मन संस्कृत के पठन-पाठन में भी अधिक नहीं लगा। गांधी जी ने १९२१ में बनारस में काशी विद्यापीठ जैसे राष्ट्रधर्मी शिक्षण संस्थान की स्थापना की थी, आजाद ने विद्यापीठ में प्रवेश लिया, उस समय गांधी जी का असहयोग आन्दोलन चल रहा था, आजाद संस्कृत कालेज बनारस में धरना देते हुए गिरफ्तार कर लिये गये।

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ५९, ६०।

२. वही, पृ०सं०- ६०।

अदालत और किशोर चन्द्रशेखर

किशोर चन्द्रशेखर को पिकेटिंग के अपराध में बंदी बनाकर अदालत में पेश किया गया। न्यायाधीश ने किशोर सत्याग्रही से प्रश्न किया कि तुम्हारा नाम क्या है?

उत्तर मिला- 'आजाद'

तुम्हारे पिता का क्या नाम है?

उत्तर मिला- स्वाधीनता

तुम्हारा 'घर' कहा हैं?

उत्तर मिला- कारागार

इन प्रश्नों के उत्तरों से चिढ़कर मजिस्ट्रेट ने किशोर चन्द्रशेखर को पन्द्रह बेतों की सजा दी। चन्द्रशेखर को जिस समय बेत लगाने के लिए टिकटिकी में बांधा गया तो उन्होंने हर बेत पर 'महात्मा गांधी की जय' का नारा लगाया। चन्द्रशेखर आजाद ने माफी के स्थान पर बेतों की मार को महत्ता प्रदान की और किशोर काल में ही चर्चित हो गये।[१]

आजाद : एक उपनाम

किशोर चन्द्रशेखर ने गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में जिस साहस का परिचय दिया था, वह सचमुच प्रशंसनीय था, उनके इस किशोर

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-१, मिर्जापुर, क्रांतिकारी प्रकाशन, १९६५, पृ०सं०- ६०।

क्रांतिधर्मी आचरण के चोटी के राष्ट्रीय नेता भी कायल हो गये थे, किशोर चन्द्रशेखर ने बेतों की सजा खाकर अपने संघर्षी जीवन का शिलान्यास किया था। उसके बाद चन्द्रशेखर को एक प्रमुख राष्ट्रवादी नेता श्रीप्रकाश ने 'आजाद' उपनाम प्रदान किया, जो चन्दशेखर के साथ जीवनान्त जुड़ा रहा, इसे आजाद ने सार्थक कर दिया, वे कभी भी पुलिस की गिरफ्त में नहीं आये, वे हमेशा कहा करते थे-

"दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।"[१]

आजाद ने अपने जीवन के कर्म-कुरुक्षेत्र में इस क्रांति-घोष को चरितार्थ करके दिखा दिया। उनका यह दावा कि- "कोई भी जीते जी मेरे शरीर पर हाथ न लगा सकेगा।" सच साबित हुआ।

चन्द्रशेखर आजाद के साथ 'आजाद' शब्द संश्लिष्ट होकर जीवन भर जुड़ा रहा, उन्हें चन्द्रशेखर के स्थान पर 'आजाद' के नाम से ही अधिक जाना गया, वे इसी उपनाम से लोक विश्रुत हो गये। वे अपनी प्रतिज्ञा में खरे तरे, उन्हें पुलिस की गोली नहीं मार पायी, वे जीवनान्त आजाद रहे, वे अपनी ही एक गोली से गोलोक वासी हुए।[२]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १००।

२. वही, पृ०सं०- १०२।

क्रांतिदल की सदस्यता और चन्द्रशेखर

चन्द्रशेखर ने जिस समय काशी विद्यापीठ में प्रवेश लिया, उसके पूर्व मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी विद्यापीठ में पढ़ रहे थे। चन्द्रशेखर के प्रवेश लेते ही विद्यापीठ के प्रवेशार्थी कौतूहल और आश्चर्य से देखने लगे, इसका एक कारण यह था कि चन्द्रशेखर उम्र के हिसाब से नीचे की कक्षा में प्रविष्ट हुए थे और दूसरा कारण यह था कि चन्द्रशेखर ने इतनी कम उम्र में आजादी के लिए क्षमा के स्थान पर वेतों की सजा को स्वीकार किया था।

बनारस क्रांतिकारियों का गढ़ था, वहाँ पर कई क्रांतिकारी संगठन अस्तित्व में आकर सक्रिय थे। मन्मथनाथ गुप्त तथा प्रणवेश चटर्जी क्रांति-दल की दीक्षा ले चुके थे, चन्द्रशेखर की असहयोग आन्दोलन में सहभागिता ने उसे क्रांतिकारियों की दृष्टि में चढ़ा दिया था, राष्ट्रनिष्ठ क्रांतिकारी कभी भी अवसर को हाथ से जाने नहीं देते, प्रणवेश ने चन्द्रशेखर से मित्रता स्थापित की, इन्हीं के माध्यम से चन्द्रशेखर हिन्दुस्तान प्रजातांत्रिक संघ से जुड़े।[१]

इस तरह चन्द्रशेखर का क्रांतिकारी दल में प्रवेश हुआ। क्रांतिकारी संगठन में आने के बाद मात्र ०९ वर्षों की कठोर क्रांति-साधना के बाद चन्द्रशेखर आजाद भारत के गौरवशाली-गगन के वह नक्षत्र बन गये, जहाँ पर एक शतजीवी क्रांतिकारी भी नहीं पहुँच सकता।

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-१, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६०, ६१।

प्रणवेश चटर्जी काकोरी ट्रेन डकैती में एक सदस्य था, किन्तु पकड़े जाने पर वह कमजोर सिद्ध हुआ, उसने मुखबिर बनकर क्रांतिकारियों के अनेक गुप्त रहस्य बताये, जिसके कारण कई क्रांतिकारी पकड़े गये।[१]

झांसी में पुनः संगठन-शिल्प, आजाद और भगवानदास माहौर

०९ अगस्त, १९२५ की काकोरी ट्रेन डकैती मात्र एक सांयोगिक घटना नहीं थी अपितु यह भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ी क्रांति की प्रथम आध्यायिका थी, काकोरी काण्ड में मुखबिर साथियों के कारण कुन्दनलाल गुप्त तथा आजाद को छोंड़कर शेष सभी काकोरी-क्रांतिकारी पकड़े गये। आजाद फरार हो गये, वे झांसी पहुँचे। चन्द्रशेखर आजाद ने धीरे-धीरे दल के बिखरे सदस्यों से मिलना प्रारम्भ किया।

भगवानदास माहौर का १९२४ से ही आजाद से सम्पर्क हो गया था। वे आजाद के झांसी-आगमन के बाद उनसे सप्ताह में कम से कम दो बार अपने मित्रों सहित मिलने लगे। माहौर और उनके मित्र काकोरी से सम्बन्धित खबरों की कतरन तथा पुलिस गतिविधियों की सूचना आजाद तक पहुँचाते रहते थे।[२]

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-१, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६१।

२. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १४, १५।

ढिमरपुरा, आजाद और भगवानदास माहौर

काकोरी ट्रेन डकैती के बाद पुलिस-धर-पकड़ तेज हो गयी थी, आजाद फरारी अवस्था में चल रहे थे, वे झांसी में थे, पुलिस को मुखबिर द्वारा यह ज्ञात हो गया था कि झांसी क्रांतिकारियों के संगठन का एक केन्द्र बन चुका है। मास्टर रुद्रनारायण ने आजाद से कहा कि अब आपका यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है, आजाद की शरीरगत पहचान सुगम थी। इस पर मास्टर साहब ने यह निश्चय किया कि ओरछा निकट ढिमरपुरा गाँव में आजाद को ठहराया जाय, उन्होंने आजाद के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि आपको सातार तट पर हनुमान मंदिर में साधु वेश में रहना है,जिसे आजाद ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसके पूर्व भी आजाद महंत के मठ में साधु-वेश में रह चुके थे, इसलिए उन्हें साधु बनने में कोई संकोच नहीं हुआ, वे कमर में मूंज की करधनी बांध लंगोट लगाकर यात्रा में निकल पड़े, उन्होंने अपने साथ एक कम्बल तथा रामायण का एक गुटका भी रखा, वे सातार-तट पर हनुमान भक्त ब्रह्मचारी कहलाने लगे। आजाद के मंदिर में जमने के बाद मास्टर साहब कभी-कभी उनके यहाँ हो आते थे।

उस काल में साधु-संतों के प्रति श्रद्धा अधिक रहती थी, गाँव में साधु भूखे नहीं रहते थे, आजाद ने कुछ दिन मधुकरी से काम चलाया फिर उनकी जब भोजन इच्छा होती तो गाँव के किसी एक गृहस्थ से इच्छा प्रकट करते थे और वह उन्हें भोजन करा देता था। भगवानदास माहौर

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १६।

तथा कुछ साथी आजाद के निकट सप्ताह में दो बार अवश्य हो आते थे, साथ ही आजाद क्रांति-दल के सम्बन्ध में कभी भी बेपरवाह नहीं हुए। वे सदैव उनकी जानकारी रखते थे।[१]

रामायणी और शिक्षण कार्य

आजाद का ढिमरपुरा गाँव में धीरे-धीरे प्रभाव बढ़ने लगा, वे गाँव वालों को पहले रामायण सुनाना प्रारम्भ किया, फिर हनुमान जी के मंदिर के चबूतरे में गाँव के छोटे बच्चों के लिए पाठशाला प्रारम्भ कर दी, कैसी विडम्बना थी कि अध्ययन से भागने वाला आजाद स्वयं अध्यापन करने लगा, आजाद चर्चित होने लगे। उनके कार्य-व्यवहार से प्रभावित होकर गाँव के ठा० मलखान सिंह ने बच्चों के स्कूल के लिए अपने घर के सामने की चौपाल दे दी। आजाद का एक और उपनाम हरिशंकर भी था, अब ब्रह्मचारी हरिशंकर का दिन का समय चौपाल में बच्चों के बीच कटता था। आजाद के सामने भोजन की भी समस्या नहीं थी, ठा० मलखान सिंह दोनों वक्त उन्हें अपने साथ रसोई में ले जाकर भोजन कराते थे, धीरे-धीरे आजाद ठाकुर परिवार में इतने घुल-मिल गये कि उन्हें परिवार का ही एक सदस्य माना जाने लगा, कभी-कभी चौपाल में बाते करते-करते जब अधिक रात हो जाती तो ठाकुर लोग आजाद को चौपाल में ही सोने के लिए विवश करते, आजाद को वहीं सोना पड़ता।[२]

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १६।

२. वही, पृ०सं०- १६, १७।

ठाकुर परिवार में ब्रह्मचारी का विश्वास इतना जम गया था कि जब मलखान सिंह बाहर जाते तो वे तिजोरी की चाबी भी ब्रह्मचारी को दे जाते थे। ठाकुरों के शस्त्रों पर भी ब्रह्मचारी का अधिकार था। मलखान सिंह के साथ शिकार खेलने भी जाते थे, जहाँ वे ब्रह्मचारी जी अच्छा निशाना भी लगाते थे। आजाद कभी-कभी झांसी के मित्रों को ढिमरपुरा बुलाकर उन्हें निशानेबाजी में दीक्षित भी करते थे। भगवानदास माहौर अपने मित्रों के साथ ढिमरपुरा सप्ताह में दो बार हो आते थे। निशाना के प्रशिक्षण ने आजाद के साथियों को एक कुशल निशानेबाज बना दिया था। काकोरी काण्ड के बाद उनके साथ पकड़ से बचे एक मित्र कुन्दल लाल गुप्त आजाद से मिलने ढिमरपुरा आये थे। उन्होंने उनसे मिलकर दलीय संगठन की भावी रूप रेखा तय की। आजाद उस समय नम्बर दो कहलाते थे। इसके अतिरिक्त बीच-बीच में मास्टर रुद्रनारायण आजाद से ढिमरपुरा जाकर मिल आते थे।[१]

दृढ़ चरित्र के धनी आजाद

चन्द्रशेखर आजाद में तो वैसे गुणों का समुच्चय था किन्तु उन गुणों में एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण था उनका लगोंट का कच्चा न होना। एक बार ढिमरपुरा में ही उनके चरित्र की अग्नि परीक्षा हुई, जिसमें उन्होंने साफल्य के शिखर को छू लिया था, ढिमरपुरा में एक सुन्दर प्रौढ़ा उनके पीछे पड़ी हुई थी, ठा० मलखान सिंह के एक बहन थी, जिसे आजाद जीजी कहा करते थे, वे बहुत मृदु स्वभाव की थीं, झांसी से आने वाले

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १६।

ब्रह्मचारी के हर मित्र की वे बहुत आवभगत करती थीं, वह झांसी से आने वाले हर अतिथि को एक आटे का लड्डू तथा एक कटोरा दूध देती थीं, उसे प्राप्त कर वह अतिथि देवता अपनी थकान हल्की कर लेता था, उसके बाद आजाद से उनकी भेंट हो जाती थी। वे आजाद पर पूर्ण भरोसा करती थीं।[१]

एक बार जीजी की एक सहेली, जो कई बच्चों की माँ एवं विधवा थी, ने आजाद के चरित्र की परीक्षा लेनी चाही, वह सम्पन्न घराने की होने के कारण शरीर-सौष्ठव की धनी थी, उसकी वासना की भूख आँखों में परिलक्षित होती थी, वह प्रौढ़ा एक विवाह का निमंत्रण देने ठाकुर परिवार में आयी थी। उस युवती ने ब्रह्मचारी को कई बार देखा था, वह उन पर आसक्त हो गयी थी, वह अपनी काम-भावना को जीजी से न छिपा सकी, जीजी ने उसे बहुत समझाया कि ब्रह्मचारी रसिक मिजाज के नहीं है, किन्तु वे नहीं मानी, उस समय गर्मी के दिन थे, ब्रह्मचारी रात को ठाकुर के घर की छत पर ही सोते थे, सभी भाई घर के बाहर थे, घर में केवल औरतें थीं। इसका लाभ उठाकर वह प्रौढ़ा एक दिन चाँदनी रात में छत पर लेटे आजाद के पास पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ने लगी, आजाद क्रांतिकारी संगठन के सन्दर्भ में चिन्तन कर रहे थे, उनका ध्यान भग्न हुआ था, उन्होंने पैरों के झंकारों की आवाज सुनी, उन्होनें सांचा कि शायद वह प्रौढ़ा जीजी के साथ आ रही होगी, भोजन के बाद कभी-कभार जीजी ब्रह्मचारी के साथ काम-काज के सम्बन्ध में छत पर चर्चा किया करती थीं।[२]

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २०, २१।

२. वही, पृ०सं०- २१, २२।

वह महिला बिना किसी लज्जा के ब्रह्मचारी की चारपायी पर बैठ गयी, महिला के इस अप्रत्याशित आचरण पर ब्रह्मचारी सकपका कर चारपायी पर से उठ कर बैठ गये, आजाद जी इस प्रतीक्षा में थे कि शायद जीजी आ रही होंगी किन्तु वह न आयीं, दोनों चुप थे, थोडी देर में आजाद ने उससे आने का कारण पूँछा, महिला अपनी वासना को अपने नैनों से कह देना चाहती थी किन्तु ब्रह्मचारी को नैन और सैन की भाषा का बोध नहीं था, वह महिला लगातार ब्रह्मचारी की ओर खिसक रही थी, आजाद ने उससे पुनः कहा कि रात को इस तरह अकेले नहीं आना चाहए। इस पर महिला हँसी, उनकी तरफ लगातार बढ़ती रही, जब चारपायी पर जगह न बची तो आजाद उठकर खड़े हो गय और क्रोधित होकर बोले कि तुम यहाँ से नहीं जा रही हो तो मैं ही यहाँ से चला जाता हूँ। इस पर आजाद को महिला ने धमकाया कि यदि तुम मेरी भावना को नहीं समझोगे तो मैं चिल्लाकर तुम्हें बदनाम कर दूँगी, किन्तु देश के लिए दृढ़वती आजाद पर इस धमकी का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आजाद दस-बारह फीट ऊची छत से कूद कर हनुमान मंदिर की ओर चले गये, महिला ने देखा कि ब्रह्मचारी की मनोभूमि को मदनबाण बेध नहीं पाये, उसने घबराकर छत से नीचे की ओर झांका, आजाद कूदकर दूर निकल चुके थे। वह महिला तुरन्त जाकर जीजी से मिली, जीजी ने उसे बहुत खरी-खोटी सुनायी। उन्हे यह भी डर था कि यदि ब्रह्मचारी ने भाई लोगों से कह दिया तो घर में बवण्डर मच जायेगा।[१]

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २२।

दूसरे दिन ब्रह्मचारी अपनी नैत्यिक क्रियाओं से निपट कर चौपाल में बच्चों को पढ़ाने आये किन्तु बिना खाना खाये हनुमान मंदिर लौट गये, जीजी स्वयं आजाद के पास गयीं और क्षमा मांगी, आजाद ने परिस्थिति का अध्ययन किया और झांसी में रहने को उपयुक्त न पाकर ढिमपरपुरा में रहना स्वीकार कर लिया किन्तु उन्होंने एक शर्त रखी, जब तक वह महिला उस घर में रहेगी, वे घर के अन्दर नहीं आयेंगे, उन्होंने कहा कि भोजन या तो चौपाल में पहुँचा दिया जाय या मंदिर में भेज दिय जाय।

वह महिला जब तक ठाकुर परिवार में रही, वे घर के अन्दर नहीं गये, घर से जाते समय उस महिला ने भी आजाद से क्षमा प्रार्थना की, कुछ दिनों बाद ठा० मलखान सिंह को भी वह घटना पता चल गई, इससे ब्रह्मचारी के प्रति उनकी श्रद्धा और भी बढ़ गयी, इतना ही नहीं अपने क्रांतिकारियों साथियों के बीच भी आजाद के दृढ़ चरित्र का बहुत अच्छा असर पड़ा, उनके प्रति मित्रों का आदर-भाव और भी बढ़ गया।[१]

पुलिस पूँछताछ और आजाद की दृढ़ता

चन्द्रशेखर आजाद छद्म वेश में ब्रह्मचारी के रूप में ढिमरपुरा में रहकर क्रांतिकारी संगठन की देख-रेख करते थे। आजाद की दिनचर्या बहुत सन्तुलित एवं व्यवस्थित रहती थी। वे प्रतिदिन सातार में स्नान कर हनुमान मंदिर के अखाड़े में पाँच सौ डण्ड एवं एक हजार बैठकें लगाने के

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २२।

साथ वे हाथों से मुगदर भी घुमाते थे, तत्पश्चात् दिन में बच्चों का स्कूल चलाते थे एवं रात में तुलसीदास रामायण का पाठ करते थे। वे ढिमरपुरा में पूरी तरह जम गये थे।[१]

एक दिन आजाद एक साधु के साथ झांसी से ओरछा लौट रहे थे, उन्हें मार्ग मे दो सिपाही मिल गये,उन दोनों सशस्त्र कर्मियों ने आजाद तथा साधु को रुकने का आदेश दिया। सिपाहियों ने उनसे पूछा कि क्या तुम आजाद हो? वे बिना किसी झिझक के तपाक से बोले कि बच्चा ! हम तो आजाद ही हैं, क्या साधुओं को कोई बन्धन बांध सका है? हम लोग हनुमान जी के भक्त हैं, भक्ति करते और मस्त रहते हैं, हनुान जी की चोला चढ़ाने में देर हो गयी है, हम चल रहे हैं, इस पर पुलिस वालों ने उनसे थाने चलने की जिद करने लगे, आजाद कुछ दूर तो उनके साथ गये, उन्हें समझाते भी रहे, उन्होंने जब देखा कि सिपाहियों पर समझाने-बुझाने का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है तो वे दृढ़ता के साथ बोले कि तुम्हारे थाने के दरोगा से हनुमान जी बड़े हैं, मैं हनुमान जी के आदेश को मानूँगा, तुम्हारे दरोगा का नहीं, आजाद के बदले हुए भावों को देखकर पुलिस वाले सहम गये, उनकी आजाद से आगे कहने की हिम्मत नहीं हुई, आजाद शीघ्रता से ढिमरपुरा चले गये।[२]

---

१. शिव वर्मा, संस्मृतियाँ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६६, ६७।

२. वही, पृ०सं०- ६७

चन्द्रशेखर आजाद के सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि उनका क्रांतिकारी मित्रों के प्रति प्रेम और भाईचारा प्रभावी होता था, उसमें छलावा या कपट का कोई स्थान नहीं होता था, यही कारण है कि उनके द्वारा, जिन्हें दल में लाया गया, कोई भी अप्रूवर नहीं बना। आजाद ढिमुरपुरा में रहते गाँव तथा झाँसी के मित्रों के बीच अपनी पकड़ बना ली थी। उनकी वेशभूषा भी बदल गयी थी, अब वे ढिमरपुरा के नम्बरदार के भाई बन चुके थे, आजाद अब धोती-कुर्ता धारण करते थे। उन्हें एक साइकिल भी मिल गयी थी, जिसके कारण उनका आवागमन सुगम हो गया था। वे ढिमरपुरा से झांसी तथा झांसी से ढिमरपुरा साइकिल द्वारा ही आते-जाते थे।

वे दल के पुनर्गठन पर सक्रिय हो गये थे, काकोरी के बाद दलीय नेतृत्व उन्हीं के हाथों में था। उन्होंने भगत सिंह, सुखदेव, शिवर्मा, कुन्दनलाल, विजय कुमार सिन्हा तथा सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय से सम्पर्क स्थापित कर पंजाब तथा उत्तर प्रदेश मे दल का पुनर्गठन किया। भगवानदास माहौर सहित कई क्रांतिकारी साथियों की यह मांग हुई थी कि आजाद लाहौर, दिल्ली, आगरा, कानपुर और बनारस आदि नगरों में क्रमशः आकर दल का निरीक्षण और संचालन करें। आजाद जगह-जगह आने-जाने लगे किन्तु उन्होंने झांसी को ही अपना केन्द्र बनाये रखा। चन्द्रशेखर आजाद अब दल में पण्डित जी के नाम से विश्रुत हो गये थे।उन्हें कई बार अपने साथियों के मनोविनोद का भाजन भी बनना पड़ता था। वे अक्सर झांसी आ जाते थे, जिस पर भगत सिंह ने एक बार झुंझलाकर माहौर से यह कहा था कि यार पता करो, पण्डित जी का झांसी में कोई चक्कर तो नहीं है।[१]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६९।

आजाद पुनः जाँच के घेरे में

आजाद ढिमरपुरा में कुछ दिन और रुकते किन्तु वहाँ के हनुमान मंदिर में घटी एक घटना ने आजाद को भी लपेटे में ले लिया, हुआ यह था कि कुछ दिनों से आजाद के अतिरिक्त एक और साधु हनुमान मंदिर में आकर टिक गया था। एक दिन उस साधु ने एक कहार की हत्या कर दी, इस सम्बन्ध में जब तफशीश होने लगी तो ब्रह्मचारी भी उस लपेट में आ गये, पुलिस ने उनसे भी पूँछतांछ की, पुलिस ने जब उनका नाम तथा पता पूँछा तो उन्होंने बड़ी गम्भीरता के साथ उत्तर दिया - साधुओं का क्या कोई ठौर ठिकाना भी होता है, इन सब झंझटों से बचने के लिए हमने ब्रह्मचारी का व्रत धारण किया है, साधु से उसका ठौर-ठिकाना पूछने पर उसका व्रत/साधना भंग होती है। ढिमरपुरा के ठाकुर परिवार तथा गाँव वालों ने ब्रह्मचारी की बातों का पुरजोर समर्थन किया, उनके पक्ष में वे लोग खुलकर आगे आये।

गाँव वाले तथा ठाकुर परिवार के कारण पुलिस ने आजाद से अधिक पूछतांछ नहीं की, इस घटना के बाद आजाद इस मतीजे पर पहुँचे कि ढिमरपुरा में रहना अब निरापद नहीं है, अन्यथा किसी भी दिन पुलिस से सीधी टक्कर हो जायेगी। फलतः वे एक रात जिस तरह ढिमरपुरा आये थे, उसी तरह वे वहाँ से चले भी गये।[१]

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३३, ३४।

ढिमरपुरा से पुनः झांसी–आगमन

आजाद ने ब्रह्मचारी जी के वेश को वहीं पर तिलांजलि देकर वहाँ से झांसी जाने का निश्चय किया। वे एक दिन धोती, कमीज, कोट व सिर पर एक टोपी तथा पैरों में पम्पशू पहने हुए मास्टर रुद्रनारायण के घर पहुँच गये, जिन्हें देखकर मास्टर साहब स्वयं आश्चर्य में पड़ गये, उन्होंने आजाद को देखकर तुरन्त भांप लिया कि ढिमरपुरा में कुछ गड़बड़ अवश्य हो गयी है। उन्होंने यह तुरन्त सोंच लिया कि अब आजाद के लिए नई व्यवस्था करनी होगी। दोनों में काफी विचार–विमर्श हुआ, अन्त में यह निर्णय हुआ कि आजाद झांसी में रहकर कुछ काम–काज करेंगे।[१]

बुन्देलखण्ड ड्राइविंग कम्पनी, रामानंद और आजाद

मास्टर रुद्रनारायण ने आजाद को मोटर मैकेनिज्म क्षेत्र में उतारा, उन्होंने स्वजातीय मित्र रामानंद ड्राइवर के साथ आजाद को रख दिया, आजाद का नाम पड़ा– हरीशंकर। वे सदर बाजार, झांसी की बुन्देलखण्ड मोटर कम्पनी में मोटर चलाने तथा सुधारने का कार्य सीखने लगे। रामानंद टीकमगढ़ निवासी थे, टीकमगढ़ में उनका घर–परिवार था, मास्टर साहब के एक रामदयाल नामक परिचारक भी रामानंद के साथ मोटर ड्राइविंग सीखता था, रामानंद मास्टर साहब की मोटर ठीक करने के

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग–२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०– ३४।

लिए उनके घर आते-जाते रहते थे। मास्टर साहब में सहजता व सरलता का अद्भुत संगम था।

रामानंद को पता था कि हरीशंकर एक क्रांतिकारी है, किन्तु उन्हें यह पता नहीं था कि हरीशंकर ही आजाद हैं। लाहौर षडयत्र केस में फणीन्द्रनाथ के अप्रूवर बन जाने के बाद कई क्रांतिकारियों के पते-ठिकाने बताने के बाद उसने झांसी का भी उल्लेख किया, उसके द्वारा बतायी गयी सूची में रामानंद का भी नाम था। पुलिस ने रामानंद को गिरफ्तार कर उन्हें देश के कई स्थानों पर आजाद की जानकारी के लिए बहुत घुमाया।

चन्द्रशेखर आजाद उस्ताद सिराजुद्दीन तथा कल्लू पुरोहित से मोटर-नुस्खे सीखते थे। आजाद ने हिन्दू-मुसलमान में कभी भी विभाजन-रेखा नहीं खींची, सिराजुद्दीन आजाद को बहुत मानते थे, आजाद भी उनके प्रति पूरे सम्मान का भाव रखते थे।[१]

आजाद मदद करने में माहिर थे। एक बार की बात है, सिराजुद्दीन की लड़की की शादी थी, एतदर्थ ओरछे से घी लाना था, रियासतों में घी अच्छा तथा सस्ता मिलता था। दो पीपे घी कन्धों में लादकर १४-१५ मील ढ़ोकर ओरछे से लाना था, जो एक सुगम कार्य नहीं था, आजाद को मालूम होने पर वे तुरन्त तैयार होकर रामानंद को साथ लेकर ओरछा गये और वहाँ से जंगल के रास्ते दो पीपे कंधे पर रखकर रामानंद के साथ घी ले आये। इस पर उस्ताद सिराजुद्दीन बड़े खुश हुए, बाद में रामानंद के उस्ताद से सम्बन्ध बिगड़ जाने पर वे लीलाघर की मोटर कम्पनी पर कार्य करने लगे, आजाद भी रामानंद के साथ रहे।

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३४, ३५।

क्विक सिल्वर-आजाद और चुनौती

आजाद में साहस कूट-कूट कर भरा हुआ था, आजाद हर काम में आगे रहते थे, वे प्रदत्त कार्य तुरन्त निपटा देते थे, इसलिए उनका नाम क्विक सिल्वर पड़ गया था, असंभव शब्द तो उनके शब्दकोष में था ही नहीं, एक दिन बुन्देलखण्ड मोटर कम्पनी में हैण्डिल लगाकर मोटर को स्टार्ट करने का प्रयास हो रहा था, मोटर स्टार्ट नहीं हो रही थी, वे तुरन्त उस कार्य को करने के लिए आगे आये, लोगों ने उन्हें मना किया किन्तु वे न माने, चुनौती स्वीकार करना आजाद की कार्य पद्धति का एक हिस्सा बन चुकी थी।[१]

उन्होंने पूरी शक्ति के साथ हैण्डिल घुमाया, हैंण्डिल ने उल्टा झटका मार दिया, जिससे उनके हाथ की कलाई की हड्डी टूट गयी, उससे उन्हें बहुत दर्द हुआ, मित्रगण उन्हें अस्पताल ले गये, हड्डी बैठाने के लिए क्लोरोफार्म दिया जाना था, आजाद ने उसे लेने से मनाकर दिया, वे क्लोरोफार्म लेना नहीं चाहते थे, वे जानते थे कि उसे लेने से बेहोशी आ जायेगी और उस अचेतन अवस्था में मुँह से कुछ भी निकल सकता है, जिससे उनके क्रांतिकारी होने का भेद भी खुल सकता है। उन्होंने डाक्टर से कहा कि रहने दीजिए, मैं किसी गड़रिये से हाथ की हड्डी बैठवा लूँगा किन्तु मित्र अजाद की बात नहीं माने, उन्हें क्लोरोफार्म लेने के लिए मजबूर कया, क्लोरोफार्म देते समय डाक्टर ने आजाद से कहा कि राम-राम कहिए, इस पर आजाद बिगड़ कर बोले कि एक तो मेरा हाथ टूट गया है, उस पर भी मैं राम-राम कहूँ मुझे ईश्वर से घिघियाना नहीं है, इस पर

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३४, ३५।

डाक्टर ने कहा कि तो हाय-हाय कहिए, आजाद डाक्टर के इस मत से सहमत हो गये, वे थोड़ी देर बाद बेहोश हो गये।

आजाद को बेहोशी काल में जिस बात का डर था, वही हुआ, अनचाहे क्रांति से सम्बन्धित कुछ बातें मुँह से निकल गयीं, उन्हें जब होश आया तो डाक्टर के व्यवहार में परिवर्तन नजर आया, डाक्टर ने आजाद को शीघ्र स्वस्थ होने का भरोसा दिलाया और कहा कि हाथ शीघ्र ठीक होने पर तुम इसका प्रयोग देशहित में कर सकते हो। यह घटना १९२७ की है। रामानंद की धर्म पत्नी गुनार देवी भी आजाद के दुर्घटना काल में आजाद की सेवा करती रहीं। आजाद के प्रति इस प्रकार के व्यवहार को देखकर गुनार देवी के चरित्र के प्रति भी पड़ोसी शंका करने लगे, पड़ोसी तो आजाद को साधारण ड्राइवर समझते थे किन्तु आजाद के चरित्र तथा वास्तविकता के सम्बन्ध में रामानंद तथा उनकी पत्नी अच्छी तरह जानती थीं, उन्हें आजाद पर पूर्ण भरोसा था। आजाद को भी उन पर पूर्ण विश्वास था।[१]

भगवानदास माहौर की चूक

आजाद के हाथ की जिस समय हड्डी टूटगयी थी, उस समय उनके हाथ की हड्डी टूटने भर की विपत्ति उनके पीछे नहीं पड़ी थी, अपितु उसकाल में उनकी आर्थिक दशा बहुत खराब थी, उन्हें भोजन तक के लाले पड़ जाते थे।

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७२।

आजाद कभी-कभी मास्टर रुद्रनारायण के यहाँ जाकर भोजन कर लेते थे, किन्तु उन्हें यह मंजूर नहीं था, क्योंकि वे स्वावलम्बन पर ही विश्वास रखते थे, वे अपनी उपेक्षा सहन नहीं कर पाते थे। एक दिन वे टूटा हाथ झोली में डाले भगवानदास माहौर से मिलने उनके घर पहुँच गये, माहौर दरवाजे के सामने खड़े अपने एक सहपाठी से बात करने में मशगूल थे, आजाद माहौर के पास न आकर उनके दूसरे दरवाजे के निकट खड़े हो गये, माहौर आजाद की पीड़ा पर ध्यान न देकर वे अपने मित्र से ही बाते करते रहे, माहौर ने जब आजाद की तरफ रुख नहीं किया तो उन्हें अपने प्रति माहौर की बेरुखी पसन्द न आयी, उल्टे कदमों वापस लौट गये, माहौर आजाद को बुलाते ही रहे किन्तु वे वापस नहीं लौटे।

आजाद दूसरे दिन माहौर के पास पुनः आये, माहौर को आजाद के प्रति किये गये व्यवहार पर आत्मग्लानि हो रही थी, वे बहुत सहमें हुए थे। माहौर ने धीरे से उनसे पूछा कि आप कल क्यों चले गये, आजाद कुछ देर शान्त रहे और फिर बोले कि चला न जाता तो फिर क्या करता? मेरी हालत तुम देख रहे हो, गन्दे कपड़े पहने हूँ, हफ्ते भर से नहाया नहीं है, बदन से बदबू आ रही है, खैर कोई बात नहीं है, मैं तुम्हारे दिल को जानता हूँ, तुम्हारा उद्देश्य मेरी उपेक्षा करना नहीं था किन्तु तुम अपी धुन में इतना मस्त थे कि तुम्हें दूसरे की चिन्ता ही नहीं थी, यह उचित नहीं है, मेरे स्थान पर यदि कोई दूसरा होता तो बहुत बुरा मान जाता, आजाद द्वारा व्यक्त किये गये विचारों से माहौर बहुत लज्जित हुए, इसके बावजूद आजाद ने माहौर को पुनः समस्थिति में ला दिया।[१]

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४१।

आजाद झांसी के तीन मित्रों- भगवानदास माहौर, सदाशिव मलकापुरकर एवं विश्वनाथ वैशम्पायन के बहुत निकट थे, आजाद की ओर से ऐसा दिन शेष नहीं रहता था, जब वे इन तीनों तरस्वियों से मुलाकात न करते हों, आजाद विश्वनाथ वैशम्पायन के घर बहुत कम जाते थे। वैशम्पायन की माँ द्वारा आजाद से की गयी पूँछतांछ के कारण वे उनसे सतर्क रहते थे। इन तीनों मित्रों के घरवाले उन्हें आजाद के नाम से ही जानते थे। विश्वनाथ वैशम्पायन की माँ को आजाद से कोई शिकायत नहीं थी, वे इस शंका से अवश्य घिरी रहती थीं कि एक मोटर मैकैनिक से वैशम्पायन से मित्रता क्यों है, इसके पीछे क्या रहस्य है? उनको आजाद तथा विश्वनाथ का मेल या दोस्ती विचित्र लगती थी।

कुछ दिनों बाद भेद खुलने पर जब उन्हें यह पता चला कि हरीशंकर और कोई नहीं एक महान क्रांतिकारी आजाद थे, तो उनकी आजाद के प्रति बहुत श्रद्धा बढ़ गयी। आजाद के पत्र वैशम्पायन के पिता के पते पर घर आते थे, वे उन्हें बिना पढ़े ही वैशम्पायन के माध्यम से आजाद को पहुँचा देते थे।

आजाद के माहौर के परिवार से रिश्ते

भगवानदास माहौर के यहाँ आजाद एवं उनके मित्रों को चिन्तन की स्वतन्त्रता अधिक रहती थी। वे अपने परिवार में अकेले अध्येता थे, इस कारण उनकी परिवार में अधिक इज्जत थी।[१]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७२।

माहौर की माँ और आजाद

ये सभी क्रांतिकारी माहौर की माँ के निकट घण्टों बैठते थे। ये सारे लोग सबसे पहले माहौर की माँ से माहौर के विरुद्ध मोरचा खोलते थे, उसके बाद माहौर की माँ माहौर के विरुद्ध बिगड़ना शुरू होती थीं, जिस पर आजाद एवं उनके मित्र पूरा लुफ्त उठाते थे। वे अधिकतर हरीशंकर की प्रशंसा या बढ़ाई करती थीं, इसके साथ ही साथ यह भी कहती थीं कि तुम सब एकई थारी के चट्टा-बट्टा हो। आजाद माहौर की माँ के प्रिय बेटे थे, वे अक्सर कहा करती थीं कि "केवल हरीशंकर अच्छा है, सदू, विश्वनाथ और भगवान जे तो ऐ नई गँमार हैं।" आजाद माहौर की माँ को खुश करने में बड़े माहिर थे, वे इस अवसर की खोज में रहते थे कि माँ किसी काम को करने के लिए कहे, वे उनके कार्य को तुरन्त कर दें,जिस पर माहौर को भला-बुरा मिले और स्वयं को शुभाशीष, माहौर को ऐसे अवसरों पर आजाद के प्रति क्रोध आता था।[१]

आजाद मित्रों की माँओं के आदर्श बेटे थे

चन्द्रशेखर आजाद भगवानदास माहौर, सदाशिव की माँ एवं जहाँ कहीं भी गये, वहाँ पर सभी माँओं के आदर्श बेटे बन जाते थे। भगवानदास माहौर की माँ की दृष्टि में आजाद में सभी गुण मौजूद थे, वे आजाद को सद्गुणी मानती थीं।

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७३।

भगवानदास माहौर का घर एक पक्का सनातन धर्मी था, माहौर के घर जाकर आजाद भी एक पक्के सनातनधर्मी बन चुके थे, माहौर की माँ माहौर को आर्य समाजीपन तथा किरस्टान पना के लिए कोसा करती थीं। आजाद जब भी माहौर के घर जाते तो वे बिना हाथ पैर धुले माहौर के यहाँ पानी तक नहीं पीते थे। माहौर को माँ के सामने आजाद द्वारा धर्म-कर्म का उपदेश सुनना पड़ता था। वे (आजाद) मिट्‌टी के बर्तन के स्थान पर ताँबे या पीतल के पात्र में पानी पीते थे।[१]

आजाद का जहाँ माहौर के घर पर एक प्रकार से सनातनी व्यवहार था, वहीं वे मास्टर रुद्रनारायण के घर दूसरी प्रकार का व्यवहार करते थे। आजाद मास्टर साहब के घर पर इतना घुल-मिल गये थे कि वे अपनी भावज (मास्टर साहब की पत्नी) के हाथ से पतेली खींचकर उसमें हाथ डालकर खिचड़ी चाट डालते थे।

आजाद के भोजन के लिए रोटियों की चोरी

आजाद वैसे तो मास्टर साहब एवं अपने मित्रों के घर भोजन कर आते थे किन्तु कभी-कभी उनके मित्रों को भोजन के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती थी। भगवानदास माहौर को माँ के हाथों का बना भोजन चौके में बैठकर ही करने को मिलता था, घर के बर्तनों तक तो माहौर की कोई पहुँच नहीं थी, चौके के अन्दर प्रवेश-रेखा तो मानो माहौर के लिए लक्ष्मण रेखा से कम नहीं थी, माहौर का यह मानना था कि रावण

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४२, ४३।

भले ही सीता को चुराने के लिए लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन कर ले किन्तु मेरे घर में उस समय सनातनी चौके के का इतना आतंक था कि मेरे द्वारा भीतरी चौके की माता-रेखा का उल्लंघन संभव नहीं था। उस माता-रेखा को लांघकर रोटियों के बर्तन से दो राटियाँ चुरा लेने का साहस उस समय माहौर में नहीं था, माहौर को आजाद के लिए रोटियाँ चुराने का एक सही रास्ता सूझा था कि वे अपनी थाली में बहुत सी रोटियाँ रखवा लेते थे, वे थाली उठाकर अपने कमरे में चले जाते थे, जहाँ पर कुछ रोटियाँ स्वयं खा लेते थे और कुछ रोटियाँ आजाद के लिए बचा लेते थे। इस तरह का उपाय भी माहौर को आजाद ने ही सुझाया था। ऐसा करने पर एक बार माहौर को कुछ भी खाने को नहीं मिला, किन्तु माहौर अपने जिद पर अड़े रहे।[१]

माहौर ने इसका एक और रास्ता खोजा, चौके से उठने वाले धुँआ के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि यह मेरी आँखों में समाता है, मुझे अंधा तो होना नहीं है, आँखों के डाक्टर ने धुँअे से बचने की सलाह दी है, तुम खाना दो या ना दो, मैं धुँअे में बैठकर खाना नहीं खाँऊगा।[२] यह उपाय भी आजाद ने ही माहौर को सुझाया था, कौन माँ चाहेगी कि बेटे की आँख खराब हो जाय, जब आजाद माहौर के घर आये तो माँ ने माहौर की शिकायत आजाद से की, माँ के तर्कों को सुनने के लिए उन्होंने माहौर को डांटा और चौका विज्ञान पर एक व्याख्यान दिया, भगवानदास माहौर ने जब अपने नेत्रों की बात रखी तो आजाद कुछ नहीं बोले, आजाद माहौर के

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७४।

२. वही, पृ०सं०- ७४, ७५।

मत का समर्थन करते हुए उनकी माँ से कहा कि यह तो सच है कि आपके चौके में धुँआ भरा रहता है, जिससे आँखें तो खराब हो जायेंगी, माहौर साफ-सुथरे ढंग से अच्छी तरह से जब स्नान आदि कर लें तो आप उन्हें चौके के बाहर खा लेने दिया करें, आखिर 'आपद् धरम' भी तो कुछ हुआ करता है, माहौर की माँ भी यही चाहती थीं कि आजाद इसे अधर्म की श्रेंणी में न रखें, उनकी दृष्टि में जब एक सनातनी ब्राह्मण हरीशंकर ने मान लिया तो मानो ईश्वर ने मान लिया हो। इससे माहौर को यह लाभ मिला कि वे आजाद के लिए आसानी से रोटियाँ चुरा सकते थे। इतना ही नहीं माहौर जब अधिक माँगते तो यह जानकर प्रसन्नता होती कि इसे खुलकर भूख लग रही है।[१]

आजाद के प्रति माहौर की भावुकता

भगवानदास माहौर को आजाद द्वारा चुराई गई रोटियों से पेट भरते देख कर एक बार वे बहुत भावुक होकर आजाद से कहा हम लोग तो बड़े आराम से तरह-तरह का भोजन करते हैं और आप नित्य-प्रति इसी तरह बासी रोटियों एवं अचार से अपना पेट भरते हैं। इस पर आजाद ने जो उत्तर दिया, वह सचमुच उनकी सादगी, सन्तोष तथा समर्पण का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उन्होंने कहा कि तुम बेवकूफ हो क्या? मेरे लिए तीन घरों से तीन प्रकार की रोटियाँ आती हैं, साथ ही आम, नीबू और करेले का अचार भी आता है, तुम्हारे घर का करेले का अचार तो मुझे बहुत अच्छा लगता है, कभी-कभी कई प्रकार की शाक - भाजी भी मिल जाती है। इससे

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७५।

सुन्दर और कौन सा भोजन होता है? देख नहीं रहे हो कि कैसा भैंसासुर हो रहा हूँ और तू वही टुटरूँटू। माहौर ने आजाद से कहा कि आप मास्टर रुद्रनारायण के यहाँ सबके साथ बिना संकोच भोजन करते हैं, आपके लिए उसी तरह का प्रबन्ध रोजाना क्यों न किया जाय। इस पर आजाद ने माहौर से कहा कि तू इस चक्कर में न पड़, अभी तुम नहीं समझते हो कि किसी के भी यहाँ प्रतिदिन भोजना करना अच्छा नहीं होता। आजाद ने इस सम्बन्ध में अपने विचारों को बढ़ाते हुए कहा कि मास्टर साहब के यहाँ मुझे बड़े आदर भाव से भोजन मिल जाता है, तुम लोगों के यहाँ तो थोड़ा बहुत परदा भी है, किन्तु यदि किसी के यहाँ रोजाना भोजन किया जाय तो पहले जैसा प्रेम नहीं रह जाता। तुम अभी यह सब न समझ सकोगे, तुम इस खिटपिट में न पड़ो। मुझे भोजन सम्बन्धी कोई परेशानी नहीं है, मजे से खाना खाता हूँ और मस्त रहता हूँ।[१]

आजाद की बुद्धिमत्ता

एक दिन माहौर के घर में आजाद, वैशम्पायन सदाशिव और भगवानदास माहौर एक ही थाली में बैठकर खा रहे थे, वे जब सहभोज में थे उसी समय माहौर का छोटा भाई राधाशरण आ गया, उसने इन सभी को एक ही थाली में भोजन करते देख लिया, माहौर की माँ एक सनातनी विचारधारा की थीं, इन सबको एक ही थाली में खाते देखकर वह अवाक्

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४४, ४५।

रह गया, उसकी उम्र लगभग ९-१० साल थी, वह यह भ्रष्टाचार देख अपनी माँ को बाई कहकर चिल्लाने ही वाला था कि आजाद की प्रत्युत्पन्नमति ने हालात को बिगड़ने से बचा लिया। आजाद एक समूचा ग्रास एक ही झटके में निगल कर कहा कि, लो नहीं मानते, अभी बुलाता हूँ माँ को, राधे, जरा देखो, इन भंगियों को, म्लेच्छ कहीं के, एक ही थाली में खाने को बैठे हैं, कब से समझा रहा हूँ, ये सब मानते ही नहीं हैं। माँ को तो जल्दी बुलाओ, आजाद के इस त्वरित आचरण से तो यही प्रतीत हो रहा था कि मानो आजाद इस म्लेच्छपन में सम्मिलित नहीं हैं, दोषी केवल वे तीनों ही प्रतीत हो रहे थे। इस घटना से माहौर की माँ को यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि हरीशंकर धर्म-कर्म में दीक्षित एक कट्टर ब्राह्मण-बेटा है।[१]

माहौर की तुलना में आजाद पर अधिक विश्वास

भगवानदास माहौर की माँ को आजाद पर पक्का भरोसा रहता था। वे आजाद की असलियत से परिचित नहीं थीं। [१]इस घटना के बाद जब माहौर और उनके क्रांतिकारी मित्र पकड़े गये, जब खुफिया माहौर के घर बार-बार आ रही थी, माहौर के पीछे पड़ी हुई थी, उस समय जब उनकी माँ को यह मालूम हुआ कि हरीशंकर ही आजाद थे और वे ही माहौर सहित सभी मित्रों के मुखिया थे तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, भगवानदास माहौर जब ०९ वर्ष बाद १९४५ में जेल से रिहा हुए और

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४५।

२. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७५।

उन्होंने आजाद के बारे में माँ को विस्तार से बताया तो वे प्रेम-विह्वल हो उठीं, वे बार-बार आजाद के पराक्रम के बारे में माहौर से पूँछती और कहतीं- जे जे गुन हते बामे।

आजाद और माहौर की उम्र में लगभग चार-पाँच वर्ष का अन्तर था, आजाद माहौर से उम्र में बड़े थे, माहौर अपने माता-पिता की दृष्टि में एक अनुभवहीन युवा थे, आजाद माहौर की माँ के बड़े बेटे बन चुके थे। माहौर को यदि कहीं पर रात-दिन का कार्य हो या फिर उन्हें दल के किसी कार्य से झांसी से बाहर जाना हो तो उनके लिए माँ-बाप की आज्ञा के बजाय हरीशंकर की अनुमति ही पर्याप्त होती थी। आजाद जब माहौर के किसी कार्य से बाहर जाने के औचित्य की पुष्टि कर देते थे तो उनके माँ-बाप की दृष्टि में यह सिद्ध हो जाता था कि माहौर पढ़ाई-लिखायी के ही कार्य से बाहर गया था, उसने कोई गलत कार्य नहीं किया है, आजाद ने यह अधिकार माहौर के माता-पिता के प्रति विश्वास पैदा करके ही प्राप्त किया था।[१]

आजाद का नाटक और माहौर की निष्ठा

भगवानदास माहौर आजाद द्वारा निर्दिष्ट क्रांति सम्बन्धी कार्यों को करने में कभी भी पीछे नहीं रहते थे, वे जब कभी दल के कार्य से रात भर आजाद के साथ बाहर रहते, सवेरा होने पर वे माहौर से कहते कि तुम रुको, मैं तुमसे पहले तुम्हारे घर जाऊँगा। आजाद माहौर से पहले उसके घर पहुँचते, माहौल बनाकर माँ से पूँछते कि माहौर कहाँ है?

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७५।

माँ माहौर पर नाराज़गी जाहिर करते हुए कहतीं कि वह इसी तरह घर से रात-रात भर गायब रहता है, अभी तक घर वापस नहीं आया, इस पर आजाद चोरी और सीना जोरी करते हुए कहते कि माहौर का इस तरह रात-रात भर गायब रहना उचित नहीं है, बहुत गलत बात है, वे माँ से कहते कि आप उसे अच्छी तरह डाँटती नहीं है, वे पहले माहौर के विपक्ष में बोलते फिर उसके पक्ष में तर्क देते हुए कहते कि संभव है माहौर परीक्षा की तैयारी के लिए किसी सहपाठी के यहाँ गया हो, अधिक रात हो जाने पर सहपाठी के माँ-बाप ने उसे अकेले न आने दिया होगा। संभव है कि वह सीपरी बाजार के अपने सहपाठी हरदास के घर गया हो, इसके बाद आजाद ने कहा कि मैं पता लगाकर शीघ्र आता हूँ। आजाद साइकिल लेकर जाते और भगवानदास माहौर को लाकर माँ के हवाले करते हुए कहते कि मैंने कहा था ना कि जनाब हरदास के यहाँ होंगे, ये वहीं पर उनके तख्त पर पड़े सो रहे थे, यदि मैं वहाँ न पहुँचता तो यह श्रीमान् पता नहीं वहाँ पर कब तक सोते रहते? आप यहाँ पर पुत्र-चिन्ता में घुटती रहतीं? उसके बाद आजाद ने माहौर को व्याख्यान पिलाते हुए कहा कि तुम्हें अपनी माँ पर दया नहीं आती, तुम घर से यह कहकर जाते हो कि मैं पढ़ने जा रहा हूँ, भला पढ़ने से कौन रोकेगा, खूब पढ़ो किन्तु यह कहाँ की बुद्धिमानी है कि रात भर पढ़ा जाय और प्रातः जब पढ़ने का सही समय होता है, उस समय खर्राटे भर कर सोया जाय, तुम बहुत मूर्ख हो, घरवालों को बताकर जाया करो, यदि तुम ने घर पर नहीं कहा था तो मुझसे ही कह दिया होता, मैं आकर घर में सूचित कर देता, माँ तो चिन्ता में न डूबतीं।[१]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७६, ७७।

आजाद ने कहा कि तुम तो पूड़िया खाकर सो गये, इधर माँ ने रात भर खाना नहीं खाया, तुम बड़े दुष्ट हो, माहौर आजाद की नाट्य लीला से वाकिफ थे, माहौर को उनकी माँ ज़रा भी डाँट न पाती थी, माहौर को हरीशंकर ही भला-बुरा कर देता था। इस तरह आजाद माहौर के घर पर इसी तरह के नाटक करते रहते थे। पहले तो माहौर को आजाद की इस नेपथ्य-निष्ठा पर हँसी आती थी किन्तु धीरे-धीरे वह भी एक कुशल अभिनेता बन गयो थे।[१]

माहौर मंचन के क्षेत्र में विद्यार्थी जीवन में ही प्रवीण हो गये थे। एक बार कालेज के शिक्षार्थियों ने श्रीमती मंजरी नामक ड्रामा खेला, जिसमें माहौर जी ने प्रतिनायक का अभिनय किया। नाटक के निर्णायकों ने उत्कृष्ट अभिनय के लिए माहौर का चयन किया, माहौर को नाट्य-मंचन में प्रथम पुरस्कार मिला, जिसे उन्होंने आजाद के चरणों में रखते हुए कहा कि अभिनय की कला के भी आप ही मेरे गुरू हैं। भगत सिंह को माहौर की सफलता पर आश्चर्य हुआ था।[२]

माहौर आजाद की सूझ-बूझ के कायल थे

चन्द्रशेखर आजाद प्रत्युत्पन्नमति के क्षेत्र में आगे थे, माहौर तथा उनके साथी उनकी बुद्धिमत्ता के बेहद प्रशंसक थे। आजाद ने कई

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७७।

२. वही, पृ०सं०- ४९।

अवसरों पर संकट के क्षणों में मित्रों को तात्कालिक निर्णय लेने की अपनी क्षमता के आधार पर कई बार बचाया। लश्कर ग्वालियर के जनकगंज मोहल्ले में क्रांतिकारियों का एक बम फैक्ट्री थी, माहौर, चन्द्रशेखर आजाद कैलाशपति सदाशिव और गजानन सदाशिव पोतदार भी थे। उस फैक्ट्री में बम का मसाला तैयार किया जाता था, मकान मालिक या रिश्तेदार के दो-छोटे बच्चे थे, जिनकी तोतली आवाज के माहौर तथा उनके साथी कायल थे, वे बहुत अच्छा गाते थे, वे कभी-कभी क्रांतिकारियों के घर पहुँच जाते थे। माहौर को वे बच्चे प्रिय थे। माहौर बच्चों को घर इसलिए आने देते थे ताकि कोई इन क्रांतिधर्मी मित्रों के प्रति शंका न कर सके।[१]

एक दिन आजाद, माहौर तथा उनके मित्र बम फैक्ट्री में अन्दर से कुण्डी बंदकर भीतर बम के सामान की जांच-परख कर रहे थे, सभी लोग लगभग नंगे बदन थे, शरीर पर मात्र लंगोट था, वे दोनों बच्चे तथा मकान मालिक अन्दर चले आये, अंदर कुण्डी तो लगी थी किन्तु वह ढ़ीली थी, जिसके कारण उन बच्चों ने हाथ डालकर उसे खोल लिया था और वे अन्दर आ गये। वे सभी मित्र बच्चों तथा उनके पिताजी को देखकर अवाक रह गये, सारा सामान बिखरा पड़ा था, बदन नंगे थे। इसके पहले कि वे बच्चे तथा मालिक ओर आगे आते, आजाद की सूझ-बूझ ने बिगड़ने वाले हालात को सम्हाल लिया।[२]

---

१. विश्वनाथ वैशम्पायन, अमर शहीद चन्द्रशेखर, भाग-२,३, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४५।

२. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७७।

आजाद ने तत्काल एक मटका पानी चौक में इस तरह फैला दिया कि वे बच्चे तथा पिता जी वहीं पर ठिठक कर रुक गये, वे उनसे बोले कि बिच्छू इत्यादि निकल आये थे, इसलिए सफाई कर रहे थे। आजाद द्वारा उनसे आइये, जरा ठहरिये कहने की औपचारिकता के बीच माहौर तथा मित्रों ने कपड़े पहन लिये तथा सामान को ढक दिया था।[१] बच्चे तथा वे महाशय जब मकान को देख-सुनकर चले गये तो आजाद माहौर पर बहुत बिगड़े, तुम इन बच्चों को आवश्यकता से अधिक छूट दे रखे हो, वे हाथ डालकर कुण्डी खोलकर अन्दर चले आये, तुम जरूर कुछ न कुछ अनिष्ट करा डालोगे, तुमसे कितनी बार कहा कि बच्चों से सावधान रहा करो किन्तु एक तुम हो कि इस दिशा में ध्यान ही नहीं देते हो, थोड़ी सी असावधानी कोई भी बड़ा कारण उत्पन्न कर सकती है, आजाद ने गंभीर होकर एक सूत्र वाक्य कहा- "जो दूसरों के अनुभव से सीख ले, वह बुद्धिमान है, जो अपने अनुभव से सीख ले, वह मूर्ख है जो अपने अनुभव से भी न समझे उसके बारे में क्या कहा जाय,'' आजाद द्वारा डाँट खाने के बाद माहौर उठे और कुण्डी को ठोक-पीट कर ठीक कर दिया। आजाद के द्वारा रोष व्यक्त करने के बाद माहौर की इतनी हिम्मत नहीं पडी कि वे उनके समक्ष अपनी बात रख सकते। यहाँ पर इस बिन्दु को रेखांकित करना उल्लेखनीय होगा कि ऐसा नहीं था कि आजाद बच्चों के प्रति सहिष्णु एवं स्नेहिल नहीं थे। आजाद बहुत सहृदय व्यक्ति थे किन्तु यदि कोई उनकी शक्ति को चुनौती दे तो वे उसे सहन नहीं कर सकते थे।[२]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७९, ८०।

२. वही, पृ०सं०- ८०।

आजाद की सहृदयता

आजाद बहुत सहृदय एवं मिलनसार इन्सान थे। आजाद केवल दल के सेनापति ही नहीं थे अपितु क्रांतिकारी-मित्रों के अग्रज भी थे, जिन्हें अपने सभी संघर्षी मित्रों की छोटी से छोटी आवश्यकता का भी ध्यान रहता था। वे उनका इस प्रकार ध्यान रखते थे, यथा- मोहन (बटुकेश्वरदत्त) की दवायी आयी कि नहीं, हरीश (जयदेव कपूर)को कमीज मिली कि नहीं, रघुनाथ (राजगुरु) को जूता मिले कि नहीं, बच्चू (विजय कमार सिन्हा) का स्वास्थ्य ठीक हुआ कि नहीं, ये उनकी मित्रों के प्रति नैत्यिक पृच्छायें थीं, वे अपने मित्रों को लेकर रोजाना इसी तरह की जानकारी रखते थे। आजाद उनका सदैव खयाल रखते थे, जिससे उनकी सहृदयता को सहज रूप में समझा जा सकता है, उनमें कठोरता और कोमलता का अद्भुत संगम था।[१]

एक्शन, आजाद और महोबा

क्रांतिकारी संगठनों पर कंचन कोप तो रहता ही था, उनकी तंग हालत क्रांतिकारियों की हिम्मत को तो हरा नहीं पाती थी, काकोरी-ट्रेन डकैती के बाद आजाद को डकैती डालने की नीति पसन्द नहीं थी किन्तु अपने साथियों के वशीभूत होकर कई बार उन्हें अपने साथियों के अनचाहे प्रस्ताव को मानना पड़ता था, आजाद को इसी क्रम में एक बार अनिच्छा से साथियों द्वारा कानपुर के एक मंदिर में डकैती डालने के प्रस्ताव को मानना पड़ा था। बैठक में यह तय हुआ था कि शिववर्मा, भगवानदास माहौर और राजगुरु एक्शन पर जायेंगे, आजाद ने उनके निर्णय को अनुमोदन तो दे

---

१. शिववर्मा, संस्मृतियाँ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-७५।

दिया था किन्तु स्वयं बहुत उदास हो गये थे, वे बात-बात पर खीज उठते थे, माहौर ने आजाद के इस रुख को देखकर शिववर्मा से पूँछा कि क्या मामला है, आज पण्डित जी बहुत बिगड़ रहे हैं, क्या बात है? शिववर्मा केन्द्रीय समिति के सदस्य थे, माहौर ने यह माना था कि उन्हें वर्मा जी से पूँछने का कोई हक नहीं है, इस पर शिववर्मा ने माहौर से कहा कि कोई बात नहीं है, सारा मामला एक्शन का है।

शिववर्मा ने कहा कि आजाद की यह सोंच है कि उनके बिना एक्शन ढंग से नहीं हो पायेगा, हम तो आजाद को सुरक्षित रखना चाहते हैं किन्तु वे हैं कि बात-बात पर उफन पड़ते हैं, शिववर्मा ने माहौर से कहा कि इन्हें कुढ़ते हुए भी तो नहीं छोंड़ा जा सकता है, देखना, इन्हें यदि एक्शन में चलने को भर कह दिया जाय, आजाद तुरन्त खुश हो जायेंगे। शिववर्मा आजाद के निकट गये और बोले कि पण्डित जी लोग एक्शन पर जा रहे हैं, उन सब में जोशीलेपन और जीवटता तो है परन्तु अनुभव नहीं है, कोरे जोश से काम तो नहीं चलता, आप यदि एक्शन में साथ रहते तो कुछ और ही बात होती। शिववर्मा के इस कथन ने मानो उनके मुँह की बात ही छीन ली, पण्डित जी तो यही चाहते थे, वे तुरन्त बोले कि मैं तो यही सोंच रहा था कि तुम कैलाश (भगवान दास माहौर) को तो लिये जा रहे हो, किन्तु मौके पर क्या लुक - लुककर बैठे, पता नहीं, मैं साथ में रहूँगा तो यह ठीक ढंग से कार्य करेगा। पण्डित जी को एक्शन में चलने को पूछ भर लेने से उनकी सारी झुँझलाहट दूर हो गयी। शिवर्मा माहौर की तरफ आँख से संकेत कर मुस्कराये।[१]

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६७, ८७।

मंदिर-डकैती की योजना कुछ परिस्थितियों के कारण पूरी नहीं हो पायी, उस योजना को इन क्रांतिवीरों ने आजाद की बुद्धिमत्ता के कारण पूरा नहीं किया, यदि आजाद सचमुच में उस एक्शन में न होते तो ये जोशीले जवान एक-दो का खून अवश्य कर देते, जो बहुत ही बुरा होता किन्तु आजाद की सूझबूझ ने उस हादसे को टाल दिया वे सब खाली हाथ लौट आये। भगवानदास माहौर इस योजना के पूर्ण न होने से बहुत उदास थे, लौटते समय रास्ते में आजाद और उनके मित्रों ने देखा कि एक सज्जन चौराहे पर पूजा उतार चढ़ा गये हैं, आजाद ने भगवानदास माहौर से कहा कि कैलाश, देखो, उसमें कुछ पैसे एवं नारियल तो नहीं है, यदि उस पूजा में सवा रुपया एवं नारियल हो तो फिर क्या कहना है, उसे उठा लाओ, कैलाश-पूजा के पास गये और देखा कि उस पूजा में कुछ नहीं था, न पैसे थे और न नारियल और न मिठाई, माहौर झुंझलाये हुए तो थे ही, उन्होंने उस पूजा-उतारा दो ठोकरें मारी, जिसके कारण दीपक लुढ़का और बुझ गया, आजाद ने माहौर से पूँछा कि कुछ लाये हो या नहीं, माहौर ने जवाब दिया कि उसमें कुछ भी नहीं था, आजाद ने पूँछा कि दीपक काहे का था, तेल का या घी का, माहौर ने कहा कि घी का, इस पर पण्डित जी बोले, देखा, मैंने कहा नहीं था कि तुम मौके पर कुछ न कुछ लुक-लुक कर ही डालते हो, तुम दीपक को बुझाकर घी तो पी सकते थे, उसे भी मिट्‌टी में मिला दिया, तुम हो न मूर्ख।[१]

आजाद ने भगवानदास माहौर से कहा कि आज प्रातः तुमने किसका मुंह देखा था, माहौर ने झुंझलाकर कह दिया- 'आपका' इस पर पण्डित जी हंस कर बोले कि अबे, मेरा मुँह देखा होता तो कुछ करके न

---

१. भगवानदास सेंठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-३४, ३५।

आता, आईना देखा होगा, आईना, आजाद ने **प्रात लेइ जो नाम हमारा ता दिन ताहि न मिले अहारा** जैसी अर्धाली सुनाकर सभी को हँसाने की चेष्टा की। इस तरह से यह कहा जा सकता है कि आजाद ने जोश के साथ होश को कभी भी खोया नहीं, वे अपने साथियों के प्रति सदैव हम दर्द रहे। उन्हें अपने मित्रों की सदैव चिन्ता रहती थी।[१]

ग्वालियर के क्रांतिदल का गठन, गजानन पोतदार और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर उन गिने-चुने क्रांति प्रमुखों में से एक थे, जिन पर चन्द्रशेखर आजाद एवं भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी सूरमा विश्वास करते थे। माहौर जब ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज के विद्यार्थी थे, उस समय आजाद ने उन्हें ग्वालियर क्षेत्र के क्रांति सपूतों को संगठित कर उनको राष्ट्रीय धारा से जोड़ने का दायित्व सौंपा था, जिसे माहौर ने पूरी सिद्दत के साथ निभाया।

गजानन सदाशिव पोतदार एक शांतिप्रिय सामान्य युवा थे, जिनका झांसी के 'सुबाल समाज' तथा चन्द्रशेखर आजाद, माहौर एवं मलकापुरकर जैसे क्रांतिनिष्ठों से सम्पर्क हुआ, वे तिनके से तीर बन गये, ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज में पोतदार बी०एस-सी० तथा माहौर बी०ए० के छात्र थे दोनों की निकटता प्रगाढ़ता में बदल गयी। पोतदार ने क्रांतिधर्मी दीक्षा माहौर से ही ग्रहण की। वे क्रांति-दल से पूरी तरह जुड़ गये।[२]

---

१. भगवानदास सेंठ, झांसी का शेर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-३६, ३६।

२. डॉ० विश्वम्भर आरोही, भगवानदास माहौर अभिनन्दन ग्रन्थ, ग्वालियर-१, जयेन्द्रगंज, दुर्गा कालोनी, १९७२, पृ०सं०- ०१।

भगवानदास माहौर ने ग्वालियर में संगठन-विस्तार में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। वहाँ से रिवाल्वर, गोली, बारूद आदि प्राप्त करने का प्रयास किया जाता रहा, भगवानदास माहौर ने हास्टल छोंड़कर ग्वालियर के नाका चन्द्रबदनी नामक स्थान पर एक मकान किराये पर लिया, इस मकान में एक मंदिर था, जिसमें मकान मालिक ब्राह्मण प्रतिदिन पूजा करने आया करता था, वह मकान पुलिस चौकी के सामने था। भगत सिंह, सुखदेव, विजय कुमार सिन्हा, बटुकेश्वर दत्त तथा भगवानदास माहौर इसी मकान में रहते थे।[१]

साण्डर्स वध के बाद जिन क्रांतिपुत्रों को गोरी-सरकार सारे देश में खोज रही थी, वे वीर क्रांतिकारी इसी मकान में शरण लिए हुए थे, एक बार उस मकान की छत से बटुकेश्वर दत्त गिर पड़े, जिससे उनके हाथ में फ्रेक्चर हो गया। पोतदार ने बटुकेश्वर दत्त के इलाज की व्यवस्था इस ढंग से की कि, जिससे उनसे अधिक पूँछतांछ न हुई।

आजाद की सूझ-बूझ से खतरा एक बार पुनः टला

विक्टोरिया कालेज में वार्षिक समारोह होना था, जिसमें छात्रों द्वारा एक नाटक का मंचन होना था, उस नाटक में भगवानदास माहौर को खलनायक की भूमिका निभानी थी, पोतदार को पात्रों के मेकअप करने की

---

१. डॉ० विश्वम्भर आरोही, भगवानदास माहौर अभिनन्दन ग्रन्थ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०३।

जिम्मेदारी सौंपी गयी थी, नाटक में अभिनय के लिए कुछ असली रिवाल्वरों की व्यवस्था की गयी थी। इन रिवाल्वरों को देखकर पोतदार, माहौर, बटुकेश्वर दत्त एवं विजय कुमार सिन्हा की योजना उन्हें उड़ा देने की बन गयी थी, किन्तु चन्द्रशेखर आजाद को जब इन क्रांति पुत्रों की इस योजना का पता चला तो उन्होंने तुरन्त आदेश दिया कि ऐसी बेवकूफी न कर बैठना, जिससे सभी के ऊपर सुरक्षा का खतरा मड़राने लगे एवं मकान में रखी विस्फोटक एवं अन्य सामग्री की सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाये।

क्रांतिकारियों के बीच जन-सोच

उस समय जब देश पराधीन था, सरफ़रोश सपूतों के लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि था, ऐसे में आम लोग क्रांतिकारियों के प्रति किस प्रकार का दृष्टिकोण रखते थे, इस सन्दर्भ में यहाँ पर एक या दो रुपकों/उद्धरण का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। ग्वालियर में भगत सिंह एवं उनके साथियों के प्रवास-काल में माहौर के साथ पोतदार भी गतिविधियों में संलग्न रहते थे। ग्वालियर कालेज के पास रामप्रसाद नामक हलवाई की मिठाई की दुकान थी, जिसमें लगभग काफी छात्रों का उधार खाता चलता था, पोतदार का भी उस दुकान में एक उधार खाता खुला था, जिसका वे मासिक भुगतान करते थे। पोतदार को महीने में औसतन चार-पाँच रुपयों की मिठाई का मासिक बिल चुकाना पड़ता था।[१]

---

१. डॉ० विश्वम्भर आरोही, भगवानदास माहौर अभिनन्दन ग्रन्थ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०३।

भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त और सुखदेव आदि उस हलवाई के यहाँ से पोतदार के खाते के अन्तर्गत मिठाई खरीद लाते थे। उनके द्वारा मिठाई की अधिक खरीद के कारण वह बिल पाँच रुपयों से बढ़कर पचहत्तर रुपये तक पहुँच गया, जिसे देखकर रामप्रसाद परेशानी में पड़ गया। उन दिनों क्रांतिकारियों के समाचार छपा करते थे, उनकी गिरफ्तारी की खबरें भी प्रकाशित होती थीं, कभी-कभी क्रांतिकारियों की हुलिया या चित्र भी छपते थे, उन पर हजारों का इनाम रहता था, रामप्रसाद हलवाई समाचार पढ़ता रहता था, उसने यह भाँप लिया था कि पोतदार के यहाँ ठहरे अतिथि कुछ ऐसे ही लोग प्रतीत हो रहे हैं, जिनकी सरकार को तलाश है, भगत सिंह, दत्त एवं विजय कुमार सिन्हा जब उसकी दुकान पर मिठाई लेने आते तो वह उन्हें बड़े गौर से देखता था, उन्हें उधार देने में उसने कभी भी अनिच्छा जाहिर नहीं की, पोतदार जब उसकी उधारी देने पहुँचे तो उसके उत्तर ने यह सिद्ध कर दिया कि राष्ट्रहित चिन्तन करने वाला एक आम व्यक्ति उन सरफ़रोशों के प्रति कितना हम दर्द था।[१]

उस हलवाई ने पोतदार से कहा कि रुपयों की कोई बात नहीं है, मैं तो अपने को धन्य मानता हूँ, कि आपके कारण इन महापुरुषों के दर्शनों का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, खाता कोई अर्थ नहीं रखता, मैंने रातों-रात बदल दिया है, उस पन्ने को फाड़कर दूसरा लगा दिया है, उस खाते में मैंने सिर्फ चार रुपये ही चढ़ाये हैं, जो औसतन आपके खाते में चढ़े रहते थे, ईश्वर न करे कि मुझे आपके लोगों के विरुद्ध कोई गवाही देनी

---

१. डॉ० विश्वम्भर आरोही, भगवानदास माहौर अभिनन्दन ग्रन्थ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०३।

पड़े कि ये राष्ट्र भक्त आपके पास आते थे और आपके खाते में से ही खाते-पीते थे। इस दृष्टान्त से यह सिद्ध होता है कि देशहित सोचने वाले एक आम आदमी की सांच भी कितनी महत्वपूर्ण और मर्मस्पर्शी होती है।

भुतहा मकान, पोतदार एवं भगवानदास माहौर

परीक्षोपरान्त सत्र प्रारम्भ होने पर पोतदार को दल के हाई कमान द्वारा यह आदेश मिला कि हॉस्टल में न रहकर शहर में अन्यत्र मकान लेकर रहें। पोतदार ने जनकगंज में अपना ठौर-ठिकाना जमाया, उन्होंने मकान मालिक का पता लगाने की बहुत कोशिश की, मगर यह पता न चला कि मकान किसका है? वह मकान वर्षों से गैर आबाद था, भुतहा मकान के रूप में जाना जाता था, पोतदार ने उस खाली मकान पर कब्जा जमाया।

भगवानदास फरारी जीवन जी रहे थे, वे तथा अन्य क्रांतिकारी साथी भुतहा मकान पर ही आकर ठहरते थे, चन्द्रशेखर आजाद भी कभी-कभार इसी मकान पर आकर ठहर जाते थे। इसी मकान में बम-कारखाना खोलने का निश्चय हुआ, आवश्यक सामग्री जुटायी गयी, कुछ सामान कालेज के लैब से चुराये गये, पिकरिक एसिड, गनकाटन, फलमीनेट और मरकरी आदि जटिल रसायन तैयार किये गये।[१]

मसाला तो तैयार कर लिया गया किन्तु बमों के खोल नहीं मिल पाये, खोल के विकल्प के रूप में सिगरेट के डिब्बों का प्रयोग किया गया,

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर अभिनन्दन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०४।

उसमें कीलें लगाकर उसे कसा गया, एक बम तैयार कर लिया गया किन्तु उसका परीक्षण करने भवानदास माहौर, विश्वनाथ तथा पोतदार ग्वालियर के बाहर जंगल गये, माहौर ने वैशम्पायन तथा पोतदार को एक सुरक्षित स्थान पर खड़ा कर दिया। उस सुरक्षित स्थान से पोतदार तथ वैशम्पायन को केवल बम की शक्ति का अनुमान भर लग सकता था। भगवानदास माहौर ने एक अच्छी सी ओट लेकर बम फेंका, बम वांछित शक्ति का निकला, बम के सफल परीक्षण को देखकर वे तीनों बहुत प्रसन्न हुए। इसी बीच उस बम-कारखाने में लाहौर या कानपुर से ढलवा लोहे के खोल भी आ गये, जिनमें एक ऐसी तकनीक का प्रयोग किया गया था, जिससे बम-विस्फोट की प्रयोगधर्मिता को नया बल मिला। इनमें ऐसी व्यवस्था की गयी थी कि बम कुछ ऊँचाई से जमीन पर गिरने पर ही हैमर से कैच से छूटकर टोपी पर पड़े और बम विस्फोट हो।[१]

पोतदार का वह भुतहा मकान पूरी तरह बम बनाने का कारखाना बन गया था। उस मकान में बहुत सारे बम बना लिए गये थे। पोतदार और उनके मित्र उसी स्थान पर सोते थे, जहाँ पर बम रखे रहते थे, इस तरह वे सरफ़रोश मृत्यु की गोद में ही सोते रहते थे।[२]

चन्द्रशेखर आजाद बम निर्माण एवं उनके परीक्षण से बहुत प्रसन्न हुए, किन्तु वे देखने और सुनने भर को पर्याप्त नहीं मानते थे, उन्होंने बम-विस्फोट के मसाले की बानगी ली, आजाद ने बहुत ही छोटी

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर अभिनन्दन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०४, ०५।

२. वही, पृ०सं- ०५।

सी पुड़िया बनायी, उसे एक पत्थर पर रखकर उस पर हथौड़ा दे मारा, जोरदार धमाका हुआ, मकान हिल उठा, आजाद के हाथ को भी झटका लगा, पोतदार तथा उनके मित्रों ने कई दिनों तक उनके कंधे तथा हाथ की मालिश की। चन्द्रशेखर आजाद ने पोतदार तथा उनके मित्रों की विस्फोटक सामग्री के निर्माण की बहुत प्रशंसा की, आजाद पोतदार आदि से उम्र में अधिक बड़े नहीं थे किन्तु उनका अपने मित्रों के प्रति वात्सल्य विलोड़न रहता था, जिसके कारण सभी क्रांतिकारी साथी आजाद से अभिभूत रहते थे।[१]

पोतदार और कालेज के प्रोफेसर

भगवानदास माहौर और सदाशिव मलकापुरकर के भुसावल स्टेशन पर बमों के साथ पकड़े जाने के बाद पोतदार अपने भुतहा-मकान की इतनी सावधानी से सफाई की कि जिससे वहाँ पर किसी भी प्रकार की विस्फोटक सामग्री का कोई अंश तक शेष न रहे, पोतदार भी भगवानदास तथा मलकापुरकर के साथ मिशन में थे किन्तु टिकिटों को अदला-बदली कर माहौर ने पोतदार को बचा दिया था, ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज के छात्र तथा प्रोफेसर यह जानते थे कि पोतदार भगवानदास माहौर का क्रांतिकारी साथी है। माहौर के साथ रहने के कारण पोतदार कालेज में अधिक अनुपस्थित रहे थे।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर अभिनन्दन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०५।

२. वही, पृ०सं- ०६।

एक दिन रसायन तथा भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर्स ने पोतदार से यह कहा था कि तुम इन दिनों काफी गैर हाज़िर रहते हो, हम लोगों ने तुम्हारी उपस्थिति दिखा दी है, तुम अब अनुपस्थित न रहना, जाओ और अध्ययन में जुट जाओ। हिन्दू प्रोफेसर्स अंग्रेज प्रिंसिपल से डरते थे फिर भी दिल्ली केस में पोतदार के गिरफ्तार होने के बाद मुकदमें के दौरान उन्होंने जो बयान दिये, उससे पोतदार की गैरहाज़िरी सिद्ध नहीं हुई। यह एक तरह से प्राध्यापकों की क्रांतिकारियों तथा देश के प्रति सकारात्मक चिन्तन एवं सहयोग थ। दिल्ली षडयन्त्र केस दो वर्षों तक चला। बैरिस्टर आसफ अली के कुशल बचाव से पोतदार बरी हो गये थे।

निष्कर्ष

चन्द्रशेखर आजाद का झांसी-प्रवास क्रांतिकारी दल के सांगठनिक आलोक में अपना एक अलग महत्व रखता है, १९२४-१९३१ के बीच लगभग ०७ वर्षों के आजाद के सामीप्य सलिल से अभिसिंचित होकर झांसी के तत्कालीन शौर्य को नवोन्मेष मिला। भगवानदास माहौर ने १९२४ में झांसी में आजाद के दर्शन किये थे, उसके बाद माहौर, वैशम्पायन तथा सदाशिवराव मलकापुरकर ने क्रांति के क्षेत्र में जितने भी झण्डे गाड़े, उन सबके पीछे आजाद का ही योगदान था।

आजाद का अवदान वस्तुतः झांसी जैसी वीरशालिनी वसुधा में मील का पत्थर सिद्ध हुआ, झांसी नगर आजाद के कारण ही क्रांति का केन्द्र

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर अभिनन्दन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०६।

बना, चन्द्रशेखर आजाद ने अपने एक दशक से कम के प्रवास में ही वहाँ पर वह पौरुष शाला स्थापित कर दी, जिससे भगवानदास माहौर, विश्वनाथ वैशम्पायन तथा सदाशिवराव मलकापुरकर जैसे कई पुरोधा निकले, जिनके राष्ट्रधर्मी अनुदाय ने उन्हें एक नयी पहचान प्रदान की। चन्द्रशेखर आजाद, भगवानदास माहौर, विश्वनाथ वैशम्पायन, सदाशिवराव मलकापुरकर की उम्र में कोई बड़ा अन्तर नहीं था किन्तु चन्द्रशेखर आजाद की सूझ-बूझ, सदाशयता और साहृदयता ने क्रांतिकारी मित्रों के बीच आजाद के प्रति आत्मीयता का एक नया आरेख खड़ा कर दिया था।

आजाद में बुद्धिमत्ता और वीरता का अद्भुद संगम था, उनमें सांगठनिक क्षमता भी बहुत थी, वैसे तो मास्टर रुद्रनारायण झांसी में पहले से ही राष्ट्रधर्मी कार्य कलापों में क्रियाशील रहते थे किन्तु आजाद के बाद वहाँ पर देशधर्मी कार्य संस्कृति को नया आयाम मिला। भगवानदास माहौर के क्रांतिधर्मी आचरण की आजाद ने ही पूर्व पीठिका बनायी थी। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आजाद के सामीप्य ने ही माहौर को शौर्य की नयी सुर्खिया प्रदान कीं।

पंचम् अध्याय

भुसावल बम काण्ड और भगवानदास माहौर

5

भुसावल बम काण्ड और भगवानदास माहौर

चन्द्रशेखर आजाद के प्रयासों से हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संघ या हिसप्रस जैसे प्रभावी क्रांतिकारी संगठन की अनेक शाखायें उत्तर भारत में स्थापित हो चुकी थीं, हिसप्रस के बैनर तले क्रांति-चेतना के प्रचार-प्रसार की योजना विधिवत चल रही थी। ग्वालियर में १९२८ के पूर्व तक क्रांतिकारी आन्दोलन का केन्द्र ग्वालियर ही था किन्तु भगत सिंह एवं दत्त द्वारा असेम्बली में बम फेंकने के बाद गोरी सरकार ने क्रांतिकारियों की धर-पकड़ बहुत तेज कर दी थी, तब ग्वालियर भी क्रांतिकारियों के लिए निरापद नहीं रहा।

चन्देशेखर आजाद के कारण उस समय झांसी भी क्रांतिकारी गतिविधियों की केन्द्र-स्थल बनी हुई थी, आजाद ने क्रांति-दल के विस्तार को लेकर यह योजना बनायी थी कि दक्षिण भारत को भी क्रांतिकारियों के लिए चयनित किया जाय। उन्होंन एतदर्थ भगवानदास माहौर तथा सदाशिवराव मलकापुरकर का चयन किया। प्रसिद्ध क्रांतिकारी राजगुरु पहले से ही महाराष्ट्र में क्रांति-चेतना को जाग्रत करने में जुटे हुए थे। आजाद ने माहौर तथा मलकापुरकर को कुछ विस्फोटक सामग्री को अपने साथ ले जाकर राजगुरु का पता लगाने के लिए भेजा था। चन्द्रशेखर आजाद ने विश्वनाथ वैशम्पायन को अपने साथ रख छोंड़ा था, माहौर तथा मलकापुरकर दोनों को अकोला जाना था। माहौर तथा सदाशिव दोनों राजगुरु को खोजने निकले थे।[१]

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर-भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-५८।

ट्रंक, सदाशिव और भगवानदास माहौर

आजाद के निर्देशानुसार सदाशिव तथा भगवानदास माहौर ने अपने साथ बम बनाने की कुछ सामग्री की व्यवस्था की, उन्होंने एक ट्रंक में (बक्शा) रासायनिक पदार्थ, दो जीवित बम, दो पिस्तौलें तथा साठ कारतूसें रखीं। सदाशिव तथा माहौर दोनों ट्रंक सहित भुसावल पहुँचे, जिस समय ये दोनों स्टेशन पहुँचे, संध्या का समय था, इन दोनों को राजगुरु का पता लगाने के लिए अकोला जाना था, भुसावल स्टेशन से दूसरी ट्रेन पकड़नी थी, इन दोनों के पास आपत्तिजनक सामग्री भी थी, जिसे छोंडा भी नहीं जा सकता था। सदाशिव राव मलकापुरकर ने एक कुली बुलाया और उससे उस सामान को अकोला जाने वाली गाड़ी पर रखने के लिए चलने को कहा।

भुसावल में एक्साइज की कड़ी निगरानी

भुसावल में उस समय अफीम, भांग, चरस और गांजा इत्यादि मादक पदार्थों की देख-रेख के लिए एक्साइज विभाग द्वारा कड़े इन्तजाम किये गये थे। सदाशिव तथा माहौर भुसावल के हालातों से परिचित नहीं थे। इन्हें पता नहीं था कि भुसावल स्टेशन में आपत्तिजनक सामग्री पर गोरी सरकार द्वारा कड़ी नजर रखी जा रही है। ये दोनों सामान के साथ कुली लिए भुसावल स्टेशन से निकले तो एक्साइज पुलिस वाले ने कुली को टोका और तलाशी देने को कहा। वह पुलिस खान था, जो शुद्ध देशी मराठी बोल रहा था।[१]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर-भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-५८।

सदाशिवराव मलकापुरकर ने आगे बढ़कर उस पुलिस वाले को समझाने की कोशिश की, किन्तु सदाशिव की बातों का पुलिस वाले पर कोई प्रभाव नहीं पडा, कुली, पुलिस वाले तथा सदाशिव में नोंक-झोंक होने लगी। माहौर जी को लगा कि कुछ गडबड़ होने वाला है। भगवानदास माहौर की जेब में भी एक पिस्तौल था, कुछ कारतूस पड़े हुए थे। उन्होंने उनको व्यवस्थित किया।

माहौर का संकेत, माउजर का मोह तथा सदाशिव

भगवानदास माहौर को यह आभास हो रहा था कि कुछ अनिष्ट हो सकता है, उन्होंने सदाशिव मलकापुरकर को संकेत किया कि गड-बड़ सामग्री तथा ट्रंक को छोंड़कर खिसक लिया जाय, किन्तु आजाद द्वारा दिया माउजर संयोग से उसी ट्रंक में बंद था, जिसके व्यामोह से सदाशिव अपने आपको अलग नहीं कर पा रहे थे, इस कारण वहाँ से सदाशिव नहीं हटे, फलतः माहौर को भी वहीं पर रुकना पडा, माहौर भी उस बहस में सरीक हो गये। भगवानदास माहौर ने तलाशी लेने वाले उस पुलिस वाले से कहा कि क्यों परेशान कर रहे हो, इसमें कुछ भी नहीं है, यह कह कर माहौर ने ट्रंक (बक्शा) खोला, कपड़ों से ढका हुआ माउजर ऊपर ही रखा था, माहौर ने इसे इस साफगोई से सामान निकाला कि पुलिस वालों को माउजर दिखा ही नहीं, ट्रंक में रासायनिक पदार्थों से भरी हुई शीशिओं को माहौर ने उठाकर उनको दवाओं की शीशियाँ बताया, इसी बीच में सदाशिव को यह ध्यान नहीं रहा कि वे अलग रखे माउजर को उठाकर वहाँ से हट जाते।[१]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर-भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-५८, ५९।

तलाशी देते-देते अन्त में उस ट्रंक में रखे साठ कारतूस पुलिस वालों को मिल गये, बस कारतूस दिखे क्या, वे लगे चिल्लाने- कारतूस! कारतूस! तलाशी वाले पुलिस ने सीटी बजाना शुरु किया, जिसके कारण स्टेशन में पुलिस की दौड़ धूप शुरू हो गयी।[१]

सदाशिव का ट्रंक लेकर भागना खतरनाक सिद्ध हुआ

पुलिस की तेज-कदमी को देखकर भगवानदास माहौर ने अपने हाथ की अटैची को दूर फेंक कर सदाशिव को संकेत किया कि भाग चलो। इस पर सदाशिवराव मलकापुरकर ने बजाय माउजर भर लेने के वे पूरे ट्रंक को उठा कर भागने लगे, भागते समय उनका पैर सिगनल के तारों में फंस गया जिसके कारण वे गिर पड़े और बेहोश हो गये। ट्रंक लेकर भागना ही उनके लिए मुसीबत बन गया। पुलिस चोर-चोर चिल्ला रही थी, भीड़ भी इन दोनों के पीछे दौड़ रही थी। भगवानदास माहौर ने भीड़ के बीच से मार्ग बनाने की दृष्टि से दो हवाई फायर भी किये।

माहौर अन्जान स्थान के कारण फंस गये

भुसावल स्टेशन पर भगवानदास माहौर हिम्मत कर तेजी से दौड़ते हुए रेलिंग को पार कर सड़क पर तो पहुँच गये किन्तु उन्हें भुसावल के भूगोल का ज्ञान नहीं था, वे वहाँ की रास्तों, गलियों तथा कार्यालयों से

---

१. रामसिंह बघेले, क्रांतिवीर भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-१५।

अपरिचित थे। इसी कारण माहौर पुलिस की गिरफ्त में आ गये। उनके पीछे पुलिस तो पड़ी हुयी थी, भीड़ भी पीछा कर रही थी। वे अन्जान स्थान होने के कारण पुलिस लॉक अप के सामने ही जा पहुँचे। माहौर की पिस्तौल में मात्र एक गोली बची थी। उन्होंने वह पिस्तौल तथा कारतूस फेंक दिया। पुलिस वालों ने उन्हें लॉक अप में बंद कर दिया। उन्हें सदाशिवराव वहाँ पर पहले से ही मौजूद मिले।[१]

माहौर, सदाशिव और माउजर का व्यामोह

चन्द्रशेखर आजाद के निजी हथियारों में माउजर सबसे अधिक प्रिय शस्त्र था, वे माउजर को बहुत उपयोगी मानते थे, आजाद ने एक बार माहौर से माउजर के बारे में कहा था-"देख तू पकड़ा जायेगा या मर जायेगा तो उतनी हानि होगी, जितनी इस पिस्तौल के चले जाने से होगी, चीज (पिस्तौल) की कदर तू क्या जाने?"[२] आजाद के उस वक्तव्य को सदाशिव राव मलकापुरकर ने भी सुना था, इसी कारण सदाशिव ट्रंक को लेकर भाग रहे थे, क्योंकि माउजर उसी बक्से के अन्दर रखा था। पकड़ने के बाद उन्हें सर्वाधिक कष्ट इस बात का रहता था कि आजाद का माउजर पुलिस के पास है। इसका बदला लेने के लिए उनके मस्तिष्क में नाना प्रकार के विचार जन्म लेते रहते थे। उन्होंने इसी चक्कर में पुलिस को कई बार चकमा देने की कोशिश भी की किन्तु वे सफल न हो सके, क्योंकि सदाशिव में चालाकी के स्थान पर सच्चाई, लगन और साहस ही प्रमुख था, इस प्रकार वे पुलिस को झांसा न दे पाये।

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर-भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ५९।

जलगाँव-अदालत, सदाशिव एवं माहौर

भगवानदास माहौर और सदाशिवराव मलकापुरकर को गिरफ्तार कर गोरी सरकार ने जलगाँव अदालत में मुकदमा चलाया। लाहौर षडयंत्र के दो अप्रूवर जयगोपाल और फजीन्द्र घोष को माहौर तथा सदाशिव के खिलाफ गवाही देने के लिए लाहौर से बुलाया गया। वे दोनों गवाही देकर चले गये। सदाशिव आजाद के माउजर के विछोह को सहन नहीं कर पा रहे थे। वे इस सम्बन्ध में सदैव चिन्तन करते रहते थे। सदाशिवराव मलकापुरकर को आजाद द्वारा माउजर पर दिया गया विचार याद था।[१]

सदाशिव की योजना

सदाशिवराव मलकापुरकर के दिमाग में यह विचार आया कि ये दोनों अप्रवर सेशन अदालत में केस चलने पर गवाही देने के लिए पुनः आयेगें, पकड़ा गया सामान, जिसमें माउजर भी होगा, पेशी के दिन दिखाने के लिए अदालत में लाकर जज की मेज पर रखा जायेगा, उस स्थिति में यदि हमें एक पिस्तौल मिल जाय तो काम बन सकता है, मुखबिरों को ठिकाने लगा दिया जाय, गोली चलने पर हड़बडी मच जायेगी, इसी भागम-भाग में मेज से माउजर को हथिया कर फरार हो जाया जाये।[२]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर-भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ५९, ६०।

२. डॉ० विश्वम्भर आरोही, भगवानदास अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-०८, ०९।

सदाशिवराव की यह योजना भगवानदास माहौर को भी पसंद आयी। माहौर तथा सदाशिव के केस की पैरवी के लिए झांसी के स्वातन्त्र्य सेनानी तथा कांग्रेसी नेता रघुनाथ विनायक धुलेकर जलगाँव आया करते थे, माहौर तथा सदाशिव घुलिया जेल में बंद थे, इन पर जलगाँव-अदालत में मुकदमा चलता था। ये दोनों कानूनी सलाह लने के बहाने धुलेकर को घुलिया जेल बुलिया।[१]

धुलेकर साहब, माहौर तथा सदाशिव के बीच जेल में अनोखे अंदाज में बात-चीत हुई। उन्होंने अपनी योजना को आजाद तक पहुँचाने का निवेदन किया। माहौर तथा सदाशिव ने धुलेकर जी से कहा कि यदि आजाद हमें एक पिस्तौल भिजवा देंगे तो हम मुखबिरों को मार सकते हैं।

आजाद ने भगवती भाई को भेजा

धुलेकर और उन दोनों बंदियों के बीच हुई वार्तालाप के बाद धुलेकर ने चन्द्रशेखर आजाद के पास उन दोनों का संदेशा भिजवा दिया। आजाद ने जनवरी १९३० में माहौर तथा सदाशिव की योजना को जाँचने-परखने के लिए भगवती भाई को उनके पास भेज दिया। भगवती भाई एक वकील की हैंसियत से दोनां से जेल में मिले, उन दोनों के उत्साह को परखकर वे सन्तुष्ट हो गये। भगवती भाई ने कहा कि एक पिस्तौल, अन्तिम आदेश तथा हिदायतें समय पर मिल जायेंगे। माहौर तथा सदाशिव के पास पिस्तौल भेजने का प्रबन्ध भगवती चरण बोहरा तथा सदाशिव के बड़े भाई शंकर राव मलकापुरकर ने किया।

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२४, १२५।

आजाद का माहौर को आदेश

माहौर तथा सदाशिव के केस की सुनवाई जलगाँव की सेशन अदालत में प्रारम्भ हई, २१ फरवरी १९३० का दिन था, लाहौर के बदनाम मुखबिर इन दोनों के विरुद्ध गवाही देने वाले थे। आजाद की हिदायत तथा आदेश इन्हें मिल चुके थे- "यदि परिस्थिति ऐसी हो कि एक ही एप्रूवर को मारा जा सके तो फणीन्द्र घोष को मारा जाये, दोनों को मारा जा सके तो दोनों को मारा जाय, परन्तु दोनों को मारने के उद्योग में कहीं ऐसा न हो कि वे बच निकलें और कोई गलत आदमी मारा जाय। तुम दोनों को इस काम में पड़ने की जरूरत नहीं है। इस कार्य को भगवानदास अंजाम देंगे, इस बात का प्रयास किया जाय कि इस केस में सदाशिव न फंस सके। दोनों को फाँसी पर चढ़ने या लड़कर मरने की आवश्यकता नहीं है, यदि इससे कुछ अधिक हो सकता हो, तो सदाशिव अपने विवेक का प्रयोग करें।"

आजाद द्वारा भेजी गयी यह हिदायत माहौर तथा सदाशिव को रघुनाथ विनायक धुलेकर द्वारा जबानी मिली थी, आजाद के आदेश के बाद सदाशिव का मुँह उतर गया। उन्हें माहौर से जलन होने लगी। माहौर का दल में औरों की तुलना में निशाना बेहतर था। इस कारण आजाद ने मुखबिरों को मारने का दायित्व माहौर को सौंपा, मुखबिरों को मारने की योजना सदू के दिमाग की उपज थी किन्तु उसका श्रेय माहौर को मिल रहा था, इस स्थिति में सदाशिव यही मना रहे थे कि माहौर को बुखार आ जाय या ऐसा कुछ हो जाये कि जिसके कारण माहौर मुखबिर को मारने में असमर्थ हो जाय, सदाशिव अपनी मानस योजना को अपने हाथों पूर्ण कर सकें।[१]

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर एवं यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२५।

२० फरवरी १९३० को सदाशिव के बड़े भाई शंकर राव मलकापुरकर खाने के साथ भात के कटोरे में एक भरा हुआ पिस्तौल माहौर तथा सदाशिव को जेल में दे आये। इस तरह से दोनों की जो यह इच्छा थी कि एक पिस्तौल मिल जाय, पूरी हो गयी।

जेल में सभ्य जीवन का स्वांग

माहौर तथा सदाशिव जब से घुलिया जेल में पहुँचे थे, तभी से एक सभ्य एवं सीधे-सादे कैदी बनकर वे पुलिस वालों का पूर्ण विश्वास अर्जित करने में सफल हो गये थे। वे इस तरह का अभ्यास जेल में पाँच महीनों से कर रहे थे। माहौर तथा सदाशिव ने गायन तथा उनके हित सम्वर्धन के चिंतन द्वारा पलिस वालों को अपना मित्र बना लिया था।

पुलिस वाले उन पर इसलिए भी विश्वास करते थे कि ये दोनों राष्ट्र हित में जेल-जीवन जी रहे रहे थे, इस कारण सुरक्षा प्रहरियों की इनके प्रति हमदर्दी या सद्भावना थी। माहौर तथा सदाशिव स्वार्थों की पूर्ति के लिए उनको परेशान नहीं करते थे, कभी ऐसी-वैसी शिकायत भी उनकी अधिकारियों के पास नहीं पहुँचीं, जिससे वे नाराज होते। उन दोनों का अधिकारियों से आचरण मृदुल रहता था।[१]

माहौर तथा सदाशिव की जब भी तलाशी होती तो वे कभी विरोध नहीं करते थे। जेल अधिकारियों के दोनों के प्रति आदेश कठोर थे, जैसे वे जब भी कोठरी से बाहर निकलें, उन्हें तुरन्त हथकड़ी लगा दी जाय,

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२५।

परन्तु पहरे के प्रहरी न तो तलाशी के लिए उनसे विशेष आग्रह करते थे और न ही हथकड़ी के लिए हठ करते थे, बल्कि ये दोनों पुलिस वालों के हित में खुद कहते कि हथकड़ी डाल दें अन्यथा यदि कोई अधिकारी देख लेगा तो आपके लिए अच्छा नहीं होगा। इस तरह दोनो जेल में सभ्य जीवन का स्वांग कर जेल कर्मियों का विश्वास हासिल कर लिया था।[१]

मुखबिर की मूर्खता

२१ फरवरी १९३ को जलगाँव के सेशन जज की अदालत में मुखबिर की गवाही होने वाली थी, मुखबिर भी किस धातु के बने होते हैं, जो अपने मित्रों को फाँसी दिलाने के लिए उनके विरुद्ध अपने-अपने मुँह खोलते हैं, मुखबिर कितने मूर्ख और स्वार्थी होते हैं, अपने को बचाने के लिए दूसरों को मौत की भट्ठी में झोंक देने में कोई कोर-कसर नहीं छोंड़ते। मुखबिनों को देखने एवं सुनने की दृष्टि से अदालत में लोगों की भीड़ एकत्रित हो गयी।

माहौर तथा सदाशिव पुलिस द्वारा सबजेल से डेढ़ मील दूर सेशन जज की अदालत में पैदल ले जाये गये। कोर्ट का समय हुआ। माहौर तथा सदू को अभियुक्तों के लिए निर्धारित कठघरे में ले जाकर बैठा दिया गया, चूँकि इन दोनों को प्रहरियों से अच्छा-खासा व्यवहार बन गया था, इस कारण दोनों की ऊपरी तौर पर पुलिस द्वारा तलाशी ली गयी, जबकि माहौर के कोट की जेब में पिस्तौल पड़ा था, जिसे वे अपने साथ अदालत ले गये थे।[१]

---

१. डॉ० विश्वम्भर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १०।

केस की सुनवायी के रूप में गोरों का नाटक प्रारम्भ हुआ। माहौर तथा सदाशिव को कुछ सिपाही तथा एक उप पुलिस निरीक्षक घेरकर खड़े हुए थे। मुखबिरों के खड़े होने का स्थान जज की बैठक के नीचे ठीक इनके कठघरे के सामने था।

स्थान की जटिलता

मुखबिर द्वारा बयान देते समय यदि कठघरे से गोली चलायी जाती तो हड़बडाहट में दर्शकों, जज,असेसर पेशकार या अन्य किसी भी आदमी के गोली लग सकती थी, माहौर तथा सदू के समक्ष स्थान की अपनी एक अलग जटिलता थी। इसके अतिरिक्त अदालत में आजाद का माउजर तथा साठ कारतूस भी मेज पर रखे थे, वे माहौर तथा सदू को अपनी ओर ललचा रहे थे। दोनों ने बुन्देली भाषा में आपस में यह सलाह की कि इस पिस्तौल तथा कारतूस का प्रयोग होना चाहिए, मलकापुरकर ने माहौर से कहा कि मैं इन्हें उठा लूँगा, इस पर माहौर ने कहा कि पहले यह देखना कि मैं क्या कुछ कर पाता हूँ या नहीं, अवसर मिलने पर पिस्तौल तथा कारतूस लेकर दोनों लोग निकल चलेंगे। ये सोचते थे कि यदि माउजर आजाद को पुन: दे सकें तो फिर पूँछना ही क्या है?[१]

बयानों की शुरुआत

सबसे पहले जय गोपाल मुखबिर गवाही देने आया, आजाद ने दोनों को हिदायत थी कि यदि एक को ही मारा जाय तो पहले फणीन्द्र को

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२७।

मारा जाय, माहौर जेब के अन्दर पड़े पिस्तौल के ट्रिगर पर अँगुली रखे थे। जय गोपाल की गवाही में काफी समय लग गया, उसके बाद लंच के लिए अदालत उठ गयी। दोनों मुखबिर लाहौर पुलिस की सुरक्षा में थे। सुरक्षा कर्मियों के बैठने के लिए कचहरी के बरामदे में एक रावटी लगी थी, उस तम्बू में पंजाब गुप्तचर विभाग के उच्च अधिकारी बैठे हुए थे, रावटी के द्वार पर पंजाब पुलिस का उप पुलिस निरीक्षक नानकशाह मुस्तैदी के साथ ड्यूटी पर तैनात था, थोड़ी दूर पर पंजाब पुलिस का एक और सिपाही संगीन के साथ लैस ड्यूटी पर खड़ा था।

भगवानदास माहौर तथा सदाशिव दस पुलिस कर्मियों के साथ कमरे से बाहर निकले इनके लिए बरामदे के नीचे बैठने के लिए दो कुर्सियों का प्रबन्ध कर दिया गया था, ये दोनों उन पर बैठ गये,इनको दस पुलिस वाले तथा एक हवलदार घेर कर खड़े हो गये। माहौर तथा सदाशिव के दाहिने हाथ एक ही हथकड़ी से बंधे थे, सामने वाली रावटी में इनके शिकार मौजूद थे, सदाशिव ने माहौर से कहा कि अवसर अनुकूल है, अवसर तो बढ़िया था, दोनों अप्रवर तथा दोनों सी०आई०डी० अधिकारी इनके शिकार हो सकते थे किन्तु दोनों एक ही हथकड़ी से बंधे थे।[१]

माहौर का वार

सदाशिव मलकापुरकर के बड़े भाई शंकर राव मलकापुरकर इनके निकट ही खड़े थे, उन्होंने इनके लिए खाने का प्रबन्ध कर दिया, जिसके बहाने माहौर ने अपने सुरक्षा कर्मियों से हथकड़ी खुलवा ली।

---

१. रामसिंह बघेले, क्रांतिवीर भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-१८, १९।

हथकड़ी के दोनों कड़े सदू के हाथ में पड़ गये, माहौर का हाथ खाली हो गया, पुलिस ने एप्रूवरों, माहौर तथा सदू के बैठने की जगह के बीच के स्थान को दर्शकों के लिए खाली करा लिया, अब माहोर के मुखबिरों तक पहुँचने का रास्ता साफ हो गया, माहौर खाना खा रहे थे, उसी बीच उन्होंने त्वरा के साथ अपने जेब से पिस्तौल निकाली फिर तम्बू की ओर झपटे, रावटी के द्वार पर तैनात उप पुलिस निरीक्षक माहौर को रोकने के लिए खड़ा हुआ, माहौर ने उसे अपने रास्ते से हटाने के दृष्टिकोण से भागते-भागते उसकी जांघ में एक गोली मारी, जो उसके कूल्हे को स्पर्श करती हुई निकल गई, वह दरवाजे को छोंड़कर भागा, इतने में माहौर ने जयगोपाल तथा फणीन्द्र दोनों पर एक-एक गोली चलायी। माहौर इस ताक पर थे कि मुखबिरों को शीघ्र निपटाकर आजाद के माउजर तथा ६० कारतूसों को हथिया लिया जाये।[१]

यदि पिस्तौल न फंसता

आजाद की हिदायत एवं आदेश का माहौर ने तो अनुपालन कर ही दिया था किन्तु दुर्भाग्य से पिस्तौल जाम हो गया, वे गोलियाँ मुखबिरों के ठिकाने पर नहीं बैंठीं, यद्यपि जयगोपाल घायल हो गया था, दोनों अपनी-अपनी कुर्सियों के नीचे लुढ़क गये थे, इसके कारण माहौर को यह भ्रम हो गया था कि लगता है काम हो गया। माहौर द्वारा मुखबिरों पर फायर के बाद भगदड़ मच गयी, वहाँ पर भीड़ इतनी थी कि सब एक दूसरे के ऊपर हो रहे थे, माहौर को अदालत के कमरे तक पहुँचने का मार्ग नहीं मिल रहा था, घायल उप पुलिस निरीक्षक नानकशाह भागने का मार्ग खोज

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२९।

रहा था, पर भीड़ के कारण वह भी तम्बू के आस-पास चक्कर काट रहा था, माहौर का पिस्तौल तो फंस ही चुका था, माहौर के पास इतना समय भी नहीं था कि वे उसको ठीक कर सकते, माहौर का नानकशाह से पुनः सामना हो गया, माहौर ने गलतीवश फंसे हुए पिस्तौल को नानकशाह पर फिर से तान दिया, इस पर नानकशाह यह कहते हुए माहौर पर टूट पड़ा कि बाबू, हमने आपका क्या बिगाड़ा है, हमें क्यों मार रहे हो, नानकशाह का भारी भरकम शरीर था, कुछ देर बाद माहौर ने अपने को उनके शरीर के नीचे दबे पाया।[१]

उसके बाद तो सभी शक्तिशाली बन गये, किसी ने माहौर पर लातें चलायीं तो किसी ने उन्हें घूसा मारा, माहौर को तो नानकशाह के चौड़े सीने ने बचाया, अन्यथा उन पर सुरक्षा बलों की अधिक मार पड़ गयी होती और वे भुर्ता बन गये होते। उधर सदू के हाथों में हथकड़ी थी वे कर ही क्या सकते थे? वे माहौर को टकटकी निगाहों से देखते भर रहे। सदाशिवराव मलकापुरकर की खुशनुमा योजना बिना वांछित परिणाम के समाप्त हो गयी। माहौर की जल्दबाजी भी साफल्य के मार्ग की एक बाधा रही।[२] माहौर की असफलता पर सदाशिव ने कुछ कहा तो नहीं पर उनके मन में यह विचार आये बिना कैसे रह सकता है- "इससे अच्छा तो यह होता कि पण्डित जी मुझे ही यह काम करने दिया होता। उनके निशानेबाज ने सब गुड़-गोबर कर दिया। आजाद ने जब यह सुना होगा तो उनके दिमाग में भी यही विचार आया होगा-

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२७, १२८।

२. वही, पृ०सं०- १२८।

"मैं पहले ही यह जानता था कि समय पर जल्दबाजी और लुक लुक न करे तो कैलाश ही काहे का। मूर्ख ने एक पिस्तौल फिर व्यर्थ खो दिया।''[१]

भीड़ माहौर तथा सदाशिव के साथ

माहौर द्वारा मुखबिरों पर गोली चलाने के बाद जनता ने मारने वालों की जय के नारों से अदालत को निनादित कर दिया। उनका जोश देखते ही बनता था, जहाँ पर जिस हालत में आदमी थे, सर्वत्र माहौर तथा सदाशिव ही चर्चा एवं समर्थन के केन्द्र बिन्दु थे। जनता ने पुलिस-वाहन पर पथराव किया, उनमें देश भक्ति हिलोरें ले रही थी और मुखबिरों के प्रति घृणा बहुत अधिक थी, कुछ लोगों ने कचहरी में भी आग लगाने की कोशिश की, इस सिलसिले में ४० व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया, उन पर दंगा करने को लेकर केस चला, कईयों को सजा हुई।[२]

समय का अजीब संयोग होता है, अक्टूबर १९२९ में भुसावल में जहाँ जनताया भीड़ माहौर तथा सदाशिव कि विपरीत थी, साथ ही इनके भुसावल में पकड़े जाने पर वहाँ के समाचारों ने लिखा था, 'झांसीके शेर कठघरे में', वहीं फरवरी १९३० को जनता इन वीरां के प्रति फिदा थी और "मारने वाले की जय'' के नारे लगा रही थी।

---

१. भगवानदास माहौर, शिववर्मा एवं मलकापुरकर, यश की धरोहर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२८।

२. वही, पृ०सं०- १२८, १२९।

अदालत की कार्यवाही स्थगित करके मुखबिरों को उसी समय लारी में बैठाकर एक सुरक्षित स्थान की ओर रवाना कर दिया गया, उस समय जनता गद्दार मुर्दाबाद के नारे लगा रही थी, लारी पर पत्थरों की वर्षा कर रही थी, जलगाँव में धारा १४४ लगा दी गयी, चार-पाँच माह के अन्तराल में जनता ने माहौर तथा सदाशिव को आँखों पर बिठा लिया था, उनके साथ हो गयी थी।

जलगाँव में पहले आर्म्स एक्ट के अन्तर्गत माहौर तथा सदाशिव पर मुकदमा चलाया गया, जिसमें अधिक से अधिक दो वर्ष की कड़ी कैद की सजा थी, बाद में इन दोनों पर हत्या करने के प्रयत्न के अन्तर्गत एक कार्यवाही और जुड़ गयी, इन्हें आजीवन कारावास की लम्बी सजाएं सुनायी गयीं।[१]

माहौर जी से केस के दौरान जब अपना बयान देने के लिए कहा गया तो उन्होंने केवल इतना ही कहा- 'देश द्रोहियों तथा उन लोगों से जो हमारे देश का उत्पीड़न और विनाश कर रहे हैं, मुझे बात नहीं करना है, मुझे दु:ख है, कि अब मेरे पास गोलियाँ नहीं हैं।

---

१. भगवानदास सेठ, झाँसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६४।

निष्कर्ष

भुसावल बम काण्ड तथा जलगाँव-अदालत काण्ड क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास के वे पृष्ठ हैं, जिन पर आजाद के माहौर तथा मलकापुरकर जैसे अग्निधर्मा साथियों का जीवन्त साहस अंकित है।

शिवराम हरि राज गुरु ब्राह्मण परिवार के पूना के बहादुर सपूत थे, साण्डर्स-वध तथा असेम्बली बम काण्ड के बाद चन्द्रशेखर आजाद की यह धारणा थी कि बिखरे हुए संगठन को पुनः सक्रिय किया जाय, भगवानदास माहौर तथा सदाशिव मलकापुरकर, आजाद के विश्वस्त साथी थे। राजगुरु उस समय पूना में सक्रिय थे, आजाद ने माहौर तथा मलकापुरकर से पूना जाकर राजगुरु से मिलने को निर्देशित किया था, माहौर तथा मलकापुरकर को वहाँ पर स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए आवश्यक सांघर्षिक सामग्री तैयार करनी थी।

भगवानदास माहौर तथा मलकापुरकर आजाद द्वारा प्रदत्त माउजर, दो जीवित बम तथा साठ कारतूसों के साथ अकोला के लिए रवाना हुए, उन्हें भुसावल में ट्रेन बदलकर कर अकोला जाना था, उन दिनों भुसावल में मादक द्रव्य नियंत्रक (एक्साइज) की सघन चौकसी थी, माहौर तथा मलकापुरकर को सघन जाँच के बारे में पता नहीं था। पुलिस द्वारा दोनों की तलाशी के दौरान विस्फोटक सामग्री मिलने पर माहौर तथा मलकापुरकर की योजना पर पानी फिर गया, इसके बावजूद माहौर के

संकेत पर यदि मलकापुरकर बक्से से आजाद के माउजर को उठाकर माहौर के साथ भाग खड़े होते तो शायद इतिहास के पृष्ठों में कुछ और अंकित होता।

माहौर तथा मलकापुरकर को पुलिस द्वारा गिरफ्तार करने के बाद भुसावल बम केस के नाम से मुकदमा चलाया गया, इतना होने पर भी यदि जयगोपाल तथा फणीन्द्र घोष जैसे गद्दार साथी उनके विरुद्ध गवाही न देते तो संभवतः माहौर एवं मलकापुरकर को न आजीवन कारावास का दण्ड मिलता और न ही मातृ भूमि के मुक्ति-मिशन में भितरघाती अवरोध उत्पन्न होता।

षष्ठ अध्याय

भारत छोड़ो आन्दोलन और भगवानदास माहौर

6

भारत छोड़ो आन्दोलन और भगवानदास माहौर

१६वीं सदी में भारत वाणिज्यिक विकास के उतुंग शिखर पर था, भारत का तत्कालीन वैभव विदेशियों को फूटी आँखों नहीं सुहाता था, फलतः राष्ट्र के समृद्ध स्वरूप को फ्रांसीसी, डच,पुर्तगाली एवं गोरों की नजर लग गयी थी, १६वीं सदी में भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हो गयी, तत्पश्चात् गोरों का भारतीयों के प्रति दमन एवं उत्पीड़न प्रारम्भ हुआ, जिसका प्रतिरोध १७वीं सदी से ही प्रारम्भ हो गया था। उसके बाद १७५७ में प्लासी का समर अंग्रेजों ने भारत भितरघातियों के सहयोग से जीत लिया था। प्लासी-पराजय तो मानों भारतीयों के लिए अभिशाप सिद्ध हुई, यहाँ पर अत्याचार का आरेख बहुत ऊँचा हो गया, भारतीयों के प्रतिशोध की परत के नीचे चेतना-चिंगारी सुलगने लगी जो १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य समर के रूप में उद्दीप्त हो उठी।[१]

सत्तावनी समर के बाद १८८५ में कांग्रेस की स्थापना हुई, जिसके बैनर तले स्वातन्त्र्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ। भारत का मुक्ति संग्राम चार-चार चरणों से होकर गुजरा, हर चरण ने राजनीतिक चेतना को नई गति प्रदान की किन्तु १९२० से १९४७ तक चलने वाले गाँधी आन्दोलन का एक अलग महत्व रहा। गाँधीजी ने १९२० में असहयोग आन्दोलन छेड़कर गोरों को अपने अहिंसक संग्राम के आगाज से अवगत कराया।

---

१. सुन्दरलाल, भारत में अंगरेजी राज्य, खण्ड- २, नई दिल्ली, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार १९८२, पृ०सं०- ५५९।

उसके बाद १९३०, १९३२ एवं १९४१ के क्रमशः सविनय अवज्ञा आन्दोलन, लगान बंदी तथा व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन से गोरी सरकार को बापू की जन शक्ति का आभास हुआ। भारत की आजादी के लिए लड़े गये सशस्त्र संघर्षों का कम योगदान नहीं रहा, लगभग एक सदी के सांघर्षिक इतिहास में तीन ऐसे अवसर आये, जब फौलादी गोरी सत्ता हिल गयी, उन्हें हिन्दुस्तानियों के एकजुट साहस ने प्रभावी चुनौती दी। वे तीन सशस्त्र संघर्ष थे- १८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम, १९१४ का गदर-समर तथा १९४२ का लोक युद्ध।

इन तीनों सामरिक ललकारों से अंग्रेजों के हौसले पस्त ही नहीं हुए अपितु उन्हें यह भी पता चल गया कि हिन्दुस्तान में गोरी सरकार की राहें निरापद नहीं है, साथ ही यह भी लगने लगा था कि उसके दिन कभी भी लद सकते हैं। देश में परतन्त्रता-पटाक्षेप के पूर्व का पुरोधत्व सही अर्थों में एक निर्णायिक समर-निनाद था, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। १९४२ का भारत छोड़ों आन्दोलन एक तरह से वह सामरिक रणभेरी थी, जिसने आँग्ल सत्ता को यह चेता दिया था कि भारतीय संघर्ष निर्णायक दौर पर है।[१]

भारत छोड़ो आन्दोलन एक लोक युद्ध था

भारतीय धरती में लगभग दो दशकों से अधिक के प्रशिक्षण या अहिंसक तकनीक की प्रयोग धर्मिता के बाद गाँधी जी ने संघर्ष को एक नया कलेवर प्रदान किया, उन्होंने १९४२ में अंग्रेजों! भारत छोड़ो का नारा

१. शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ों आन्दोलन, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०४।

दिया, उन्होंने आजादी के लिए अन्तिम लड़ाई छेंड़ दी, जो सही अर्थों में अंग्रेजों, भारत छोड़ो, नारा न होकर एक संकल्प हो गया, वह प्रस्तावना होकर एक प्रेरणा बन गया, वह गाँधी का बयान न होकर एक व्यवहार हो गया।

१९४२ की अगस्त क्रांति आजादी के इतिहास का सबसे सशक्त एवं ज्योतित परिच्छेद है, ०८ अगस्त १९४२ को कांग्रेस ने भारत छोड़ो आन्दोलन के प्रस्ताव को पारित कर दिया था, उसी रात गोरी सरकार कांग्रेस के सभी वरिष्ठ नेताओं को जेल के सीकचों में बद कर दिया था।[१]

जवाहर और पटेल द्वारा अगस्त प्रस्ताव का समर्थन

०७ अगस्त १९४२ को जवाहर लाल जी ने महासमिति के समक्ष भारत छोड़ो प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा था कि "यह प्रस्ताव कोई धमकी नहीं है, यह तो मात्र एक निमंत्रण है, इसके द्वारा हमने यह बताया है कि हम क्या चाहते हैं, हमने सहयोग का हाथ आगे बढ़ाया है, किन्तु उसके पीछे एक साफ इशारा है यदि कुछ बातें न हुई तो परिणाम क्या हो सकता है? यह स्वतन्त्र भारत के सहयोग का दावतनामा है किन्तु दूसरी शर्त पर हमारा सहयोग नहीं है हो सकता।" इसके बाद बहुत जोर देकर जवाहर लाल ने कहा कि– "अब तो हम आग में कूद चुके हैं, या तो सफल होकर निकलेंगे या उसी में जलकर भस्म हो जायेंगे।"[१]

---

१. शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ों आन्दोलन, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०५।

प्रस्ताव का समर्थन करते हुए सरदार पटेल ने कहा कि - "सरकार चाहती है कि हम उसमें और उसके हथियारों में विश्वास करें, क्या हम उन्हीं हथियारों का विश्वास करें, जिन्होंने बर्मा, मलाया के लोगों की रक्षा की? क्या हम ऐसे ही भाग्य का स्वागत करें जो उनका हुआ? वह उन देशों से भाग खड़ी हुई और वहाँ के लोगों को जापानियों के रहमो-करम पर छोंड़ दिया। कौन नहीं जानता है कि वह हमें उसी तरह नष्ट और तबाह करके यहाँ से नहीं चली जायेगी, हम वादों पर कैसे विश्वास करें, जबकि धोखों का तांता लगा हुआ है। कांग्रेस की महासमिति की अध्यक्षता मौलाना अबुल कलाम आजाद कर रहे थे, उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम मामले पर विचार व्यक्त करते हुए मुस्लिम लीग पर कड़े प्रहार किये थे।[१]

गाँधी जी ने महासमिति के समक्ष अगस्त प्रस्ताव पर जो विचार रखे वह सचमुच उनके विचारों का जीवन्त रूप था। उन्होंने हिन्दी तथा अंग्रेजी में कुल मिलाकर ढ़ाई घण्टे तक अनवरत अपना उद्बोधन जारी रखा, उनके उस सम्बोधन को आजादी के इतिहास का एक दुलर्भ दस्तावेज कहा गया। प्रत्यक्षदर्शियों या श्रोताओं का कहना था कि पूरे ढ़ाई घण्टे तक वहाँ पर एक अजीब सन्नाटा छाया रहा, ऐसा मालूम होता था कि उनके एक-एक शब्द में राष्ट्र की मर्म-चेतना अंगड़ाई ले रही है।

राष्ट्र की जनता इस तथ्य से परिचित थी कि प्रस्ताव पारित होने के बाद कांग्रेस के नेतागण दूसरे दिन का अरुणोदय नहीं देख पायेंगे, अगस्त क्रांति के केवल वे नायक बचे जो किसी तरह बच गये थे या फिर

---

१. शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ों आन्दोलन, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०५, ०६।

फरार हो गये थे। ०९ अगस्त १९४२ को सारी जनता ने अपने हाथ में क्रांति मशाल थामी तथा अंग्रेजो, भारत छोड़ो, करेंगे या मरेंगे का अमर निनाद किया, जिससे सारा देश निनादित हो उठा। जब सारा देश अगस्त क्रांति में कूद चुका था तो भला ऐसे में बुन्देलखण्ड जैसे अग्निधर्मा क्षेत्र संघर्षी सहभागिता से अपने को कैसे दूर रख सकता था।[१]

बुन्देल क्षेत्र में अवस्थित झांसी एक ऐसा जुझारू जनपद रहा है, जिसने आन्दोलन के हर चरण में अपनी एक अलग पहचान बनायी है, सत्तावनी समर के पूर्व से ही झांसी शौर्य के क्षेत्र में क्षात्रधर्मी झण्डे गाड़ चुका है। उसके बाद १८५७ से लेकर १९४७ तक नौ दशकों का उसका सघर्षी सफर आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है।

गाँधी जी के खिलाफत आन्दोलन से लेकर भारत छोड़ो आन्दोलन तक के हर गाँधी संग्राम में झांसी ने कंधे से कंधा मिलाकर सामरिक सहभाग किया। गांधी जी ३० नवम्बर १९२० को झांसी पधारे, उनके साथ शौकत अली भी थे। गाँधी के स्वागतार्थ झांसी के जाने-माने कांग्रेसी नेता रघुनाथ विनायक घुलेकर ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। गाँधी जी के विचारों का झांसीवासियों पर अनुकूल असर पड़ा।[२]

---

१. शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ों आन्दोलन, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ०५।

२. जानकी शरण वर्मा, अमर बलिदानी, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २००-२०१।

गाँधी जी २२ नवम्बर १९२९ को पुनः झांसी आये, उनके साथ सीमान्त गाँधी अब्दुल गफ्फार खान थे। गाँधी जी को झांसी ने निराश नहीं किया, उसने उन्हें सदैव सहयोग प्रदान किया, गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में घुलेकर, पं० कृष्ण गोपाल शर्मा एवं पं० रामेश्वर प्रसाद शर्मा ने प्रभावी भूमिका निभायी, शर्मा ने 'उत्साह' तथा 'साहस' जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से भी गोरों के प्रति खूब आग उगली।[1] सरस्वती पाठशाला के अध्यापक बृजभूषण त्रिपाठी तथा हिन्दी मिडिल स्कूल के शिक्षक रामलाल पाण्डेय ने रचना धर्मिता के माध्यम से जन चेतना को जाग्रत करने में अहम् योगदान प्रदान किया।

भारत में गोरो का किसानों के प्रति रुख बहुत ही अमानवीय एवं बर्बर था, समय-समय पर किसानों द्वारा लगान बन्दी आन्दोलन भी चले, सरदार पटेल के नेतृत्व में १९२८ में चलाया गया बारदोली आन्दोलन एक ऐसा ही प्रमुखन लगान बंदी आह्वान था, जिसमें सरदार पटेल को साफल्य प्राप्त हुआ था। इस आन्दोलन को राष्ट्रव्यापी समर्थन मिला था। झांसी के अयोध्या प्रसाद तथा जनवादी नेता लक्ष्मण राव वदम ने इसमें बढ़कर भाग लिया था, जिसके कारण पुलिस ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया था। मार्च १९२९ में सरकार ने कई साम्यवादी नेताओं को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया था, जो मेरठ षडयंत्र केस के नाम से प्रसिद्ध हुआ था।[१]

---

१. जानकी शरण वर्मा, अमर बलिदानी, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २००-२०१।

२. वही, पृ०सं०- २०१, २०२।

इस तरह से यदि देखा जाय तो मेरठ षडयंत्र केस में भी झांसी की अग्रिम भूमिका रही है।

इसके बाद गाँधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी झांसी के कई स्वातन्त्र्य सेनानियों ने प्रभावी अनुदाय प्रदान किया। इस आन्दोलन मं घुलेकर, सीताराम भागवत एवं कुंज बिहारी लाल इत्यादि के नाम उल्लेखनीय रहे हैं।[१]

गांधी जी के नमक सत्याग्रह आन्दोलन में भी झांसी का सहभाग सराहनीय रहा, इस आन्दोलन को झांसी के रघुनाथ विनायक घुलेकर ने अच्छी खासी धार प्रदान की थी, इनके नेतृत्व में चार जत्थे बने थे। घुलेकर ने एक जत्थे का स्वयं नेतृत्व किया, लक्ष्मण राव कदम को इस आन्दोलन में डिक्टेटर बनाया गया था। घुलेकर के जत्थे में एक सौ पचास स्वयं सेवक थे।

झांसी ने आन्दोलन के हर चरण की अगुवायी की, १९२० से लेकर १९४७ तक के हर स्वातन्त्र्य संग्राम में झांसी का प्रतिभाग प्रशसंनीय रहा, आजादी के पूर्व के लोक युद्ध अर्थात भारत छोड़ो आन्दोलन में भी झांसी आगे रही।[२]

---

१. जानकी शरण वर्मा, अमर बलिदानी, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २०१-२०२।

२. वही, पृ०सं०- २०६।

करो-मरो और माहौर

सशस्त्र क्रांति के क्षेत्र में भगवानदास माहौर एक विश्रुत पुरोधा बन चुके थे, माहौर ही केवल क्रांतिधर्मी नहीं थे, अपितु उनके छोटे भाई राधाशरण माहौर भी क्रांति पथ के पथिक बन चुके थे, ०९ अगस्त १९४२ को जब सारा देश भारत छोड़ो आन्दोलन से आप्लावित हो गया था, भला ऐसे मे अग्निधर्मा आचरण की प्रतीक झांसी पीछे कैसी रहती।

गोरी सरकार द्वारा प्रमुख नेताओं की गिरफ्तारी के बाद सारे देश में उत्तेजना फैल गयी थी, हर व्यक्ति अगस्त-क्रांति में स्वयं अपना नेता बन चुका था। पूरे देश में आन्दोलन का एक उफान सा आ गया था। भारत छोड़ो आन्दोलन के सन्दर्भ में झांसी के आत्माराम गोविन्द खरे, लक्ष्मण राव कदम, सीताराम, कृष्ण गोपाल शर्मा, मैथिली शरण गुप्त तथा मास्टर छेदीलाल इत्यादि की प्रभावी भूमिका रही, इन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

भगवानदास माहौर तो क्रांतिकारी के रूप में विख्यात थे ही, साथ ही पुलिस की नजरों में चढ़े थे, वे जेल-यातना भोगते हुए पहले १९३८ में छूटे, उसके भारत छोड़ो आन्दोलन के अन्तर्गत पुनः गिरफ्तार कर लिए गये। उन्हे गिरफ्तार कर फतेहगढ़ की सेण्ट्रल जेल भेज दिया गया। इतना ही नहीं उनके लघु भ्राता राधा शरण माहौर भी अगस्त-क्रांति में बंदी बना लिये गये। इन दोनो माहौर बन्धुओं की गिरफ्तारी के बाद उनके मकान की पहले कुर्की हुई, बाद में उनका मकान भी बिक गया।[१]

---

१. विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर अभिनंदन ग्रन्थ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ४७।

भगवानदास माहौर का १४-१५ वर्षीय जेल-जीवन इस तथ्य की गवाही देता है कि उन्होंने राष्ट्र-हित में अपने आपको पूरी तरह से खपा दिया था। भारत छोड़ो आन्दोलन या करो-मरो के अभियान में माहौर जैसे महारथी पूरी तन्मयता के साथ भाग लिया था। उन्होंने जन-नेतृत्व भी किया।

भगवानदास माहौर में शस्त्र और शास्त्र का अद्‌भुत संगम था, वे एक उच्चकोटि के साहित्यकार, लेखक एवं कवि थे। फिर भी यदि देखा जाय तो उन पर सोहनलाल द्विवेदी की ये पंक्तियाँ पूरी तरह चरितार्थ हो रही हैं-

जंजीरों से चले बाँधने
आजादी की चाह!
घी से आग बुझाने की,
सोची है सीधी राह!
हाथ-पांव जकड़ो, जो चाहो,
है अधिकार तुम्हारा!
जंजीरों से कैद नहीं,
हो सकता हृदय हमारा![१]

इस तरह भगवानदास माहौर के १९२४ से १९४३ तक १५ वर्षों के जेल-प्रवास से इस तथ्य की पुष्टि होती है, वे एक उच्च कोटि के क्रान्त मना पुरोधा थे।

---

१. शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ो आन्दोलन, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०-६५।

निष्कर्ष

भगवानदास माहौर का जीवन एक खुली हुई उस किताब की तरह है, जिसका हर पृष्ठ उनके समर्पित जीवन की पुष्टि करता है। भगवानदास माहौर ने छात्र काल में जब से राष्ट्र धर्मी क्षेत्र में कदम रखा, तब से उनके कदम सदैव अग्रगामी रहे, उन्होंने कभी भी पीछे मुडकर नहीं देखा। वे मास्टर रुद्रनारायण से १९२४ में जुडे तथा उन्हीं के माध्यम से आजाद के दर्शन करने के बाद सशस्त्र क्रांति में कदम रखने से लेकर १९४२ के करो या मरो अभियान तक ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा, जिसमें भगवानदास माहौर का प्रशंसनीय प्रतिभाग न रहा हो।

भगवानदास माहौर ही नहीं, उनके परिवारीजनों में उनके छोटे भाई राधाशरण माहौर भी माहौर के अनुगामी रहे। भगवानदास माहौर का १९४२ के लोक युद्ध में भी प्रभावी अनुदाय रहा।

सप्तम् अध्याय

स्वातन्त्र्योत्तर काल और भगवानदास माहौर

7

स्वातन्त्र्योत्तर काल और भगवानदास माहौर

भारतीय प्राप्य (आजादी) का पथ सुगम एवं सपाट नहीं था, प्लासी-पराजय के एक सौ नब्बे वर्षों की सतत युयुत्सा-यज्ञ में असंख्य सरफरोशी-समिधाओं की आहुति के बाद ही राष्ट्र को स्वातन्त्र्य-साफल्य प्राप्त हो सका।

भारतीय मुक्ति संग्राम उदारवाद, उग्रवाद, क्रांतिकारी एवं गांधीवाद जैसे चतुष्पदीय चरणों से होकर गुजरा। आजादी के प्राप्य में हर युग का अपना एक अलग अनुदाय रहा है, किन्तु इन युगों में क्रांतिधर्मी ललकार की अपनी एक अलग पहचान रही है, वैसे तो भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के बाद से ही भारत में उसके प्रतिकार के प्रयास प्रारम्भ हो गये थे किन्तु सही अर्थों में अग्निधर्मा आवाज का नि:स्सरण १८९७ से माना जाता है, जब मराठी धरती के लौह लाड़लों ने मि० रैण्ड तथा मि० एयर्स्ट जैसे अमानवीय गोरे अधिकारियों को मौत के घाट उतार कर क्रांति का अमर शंखनाद किया जो कालान्तर में क्रांति का मंत्र घोष बना गया। उसके बाद आधी सदी के क्रांतिपुत्रों के लौह प्रयास किसी परिचय के मोहताज नहीं रहे।

१८९७ से १९४७ तक के ५० वर्षों के अन्तराल में क्रांतिकारियों का आयुधी अवदान आशातीत रहा। माँ भारती के इन पुत्रों ने भारत के मुक्ति संघर्ष में अपना सर्वस्व न्योछावर किया। भगवान दास माहौर क्रांति शिरोमणि भगत सिंह के संघर्षों के साथी थे।

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२९।

माहौर ने १९२४ से १९४५ तक दो दशकों से अधिक के समय में स्वातन्त्र्य समर में अपने को कभी पीछे नहीं रखा, वे खतरों के खिलाड़ी रहे, मातृभूमि के पुजारी रहे, बलिदानी पथ के पुरोधा रहे। माहौर स्वातन्त्र्य के पूर्व तथा परवर्ती दोनों ही कालों में राष्ट्र परायण रहे।

भगवानदास माहौर का जेल-प्रवास

भगवानदास माहौर छात्र-जीवन से ही राष्ट्रानुरागी हो गये थे। उसके बाद १९२४ से १९४५ तक वे चन्द्रशेखर आजाद एवं भगत सिंह के साथ उनके बलिदान तक लगभग सभी एक्शन में सहभागी रहे। माहौर ने अपने जेल-जीवन का आधे से अधिक समय अहमदाबाद की सेण्ट्रल जेल में बिताया।[१]

भगवानदास माहौर का कालेज प्रवास इस दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा कि उनके स्वातन्त्र्योत्तर काल के जीवन की पूर्व पीठिका जेल में ही बनी, उन्होंने कारागार में पर्याप्त स्वाध्याय किया, उन्हें पं० परमानंद का सानिध्य भी जेल में मिला, इसके अतिरिक्त जेल-काल में उन्हं कई स्वनाम धन्य हस्तियों के दर्शन भी हुए। इस तरह से यदि देखा जाय तो उनकी जेल-यात्रा भी कम महत्वपूर्ण नहीं रही। भगवानदास माहौर चन्द्रशेखर आजाद के निर्देशानुसाार मलकापुरकर के साथ दक्षिण में क्रांतिकारी दल के सांगठनिक विस्तार के लिए पूना के लिए प्रस्थान किया, जहाँ पर उन्हें राजगुरु के साथ मिलकर कार्य करना था, किन्तु दुर्भाग्यवश माहौर तथा

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२९।

मलकापुरकर दोनो भुसावल स्टेशन में पकड़ लिए गये, उन पर भुसावल बम काण्ड के नाम से केस चला। माहौर ने जलगाँव अदालत में जय गोपाल और फणीन्द्र घोष पर गोली भी चलायी किन्तु निशाना ठीन न बैठने पर वे बच गये। भगवानदास माहौर तथा मलकापुरकर दोनो को सजाएँ हुई, माहौर को आजीवन कारावास की सजा मिली। इन दोनो क्रांतिपुत्रों को घुलिया जेल में बंद कर दिया गया।

भगवानदास माहौर कई जेलों में रहे। माहौर को भुसावल बम काण्ड में ०७ वर्ष तथा जलगाँव अदालत में मुखबिर पर गोली चलाने के कारण आजन्म कारावास की सजा मिली थी। वे पहले चरण में १९२९ से १९३८ तक जेल में रहे। १९३८ में बम्बई कांग्रेस की पहल पर वे जेल से रिहा हुए। माहौर पुनः १९४० में गिरफ्तार कर लिए गये। वे पुनः १९४५ में जेल से रिहा हुए। इस तरह कुल मिलाकर वे १४-१५ वर्षों तक जेल में रहे। उनका जेल प्रवास कई दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है।[१]

भगवानदास माहौर ने अपने जीवन में अध्ययन, मनन एवं चिन्तन को जारी रखा। देवली कैम्प जेल में क्रांतिपुत्रों द्वारा की गयी ऐतिहासिक भूख हड़ताल में माहौर की सहभागिता सराहनीय रही।

फतेहगढ़ की सेण्ट्रल जेल और भगवानदास माहौर

१९४२ के प्रारम्भिक दिनों में देवली कैम्प जेल के विघटन के बाद कैदियों को फतेहगढ़ की सेण्ट्रल जेल स्थानांतरित कर दिय गया।

---

१. राम सिंह बघेले, क्रांतिवीर भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२९।

माहौर देवली से फतेहगढ़ जेल पहुँच गये। फतेहगढ़ जेल में लगभग साठ कैदी स्थानांतरित किये गये। जेल के अन्दर कैदियों की विचार-धारा दो भागों में बंटी रहती थी। पहली विचार धारा का सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय फासीवाद के विरुद्ध मित्र देशों की मदद से था तथा दूसरी का सम्बन्ध अंग्रेजों तथा मित्र देशों की हार से था।[१]

जेल में एक साहित्यिक गोष्ठी बनायी गयी थी, जिसमे शुद्ध साहित्यिक चर्चा होती थी, १९४३ में एक दिन साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें एक साथी ने गोष्ठी के समझौते का उल्लंघन करते हुए जेल के अन्तर्गत प्रचलित दो विचार धाराओं में से एक विचारा धारा पर करारी चोट करते हुए अपी कविता प्रस्तुत की जो माहौर जी को बुरा लगा।[२] उन्होंने एक गजल के माध्यम से विचार रखते हुए कहा-

तब दर्द का दरिया एक, पुरसोजिशे कामिल था।
अब दाग सा बाकी है, सीने में जहा दिल था।।

उनकी इस गजल पर लखनऊ वि०वि० के एक छात्र कैदी सी०एम० अवस्थी ने व्यंगात्मक शाबाशी देते हुए कहा- वाह उस्ताद, इस व्यंग से माहौर तिलमिला उठे। माहौर ने अवस्थी की ओर इशारा करते हुए दो पंक्तियाँ पेश कीं-

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २९, ३०।

२. वही, पृ०सं०- ३०।

अगयार थे और तुम थे, मै था व खामोशी थी,
शिकवे में क्या रखा था, क्या हसद से हासिल था।

माहौर की गजल की इन दो पंक्तियों पर कैदीगण उछल पड़े, वन्स मोर की आवाज गूंज उठी, उन्हें इन पंक्तियों को बार-बार गाना पड़ा, सारी खामोशी काफूर हो गयी, आनंद का वातावरण पैदा हो गया।

देवली कैम्प से फतेहगढ़ सेण्ट्रल जेल मे वे उग्र क्रांतिकारी भेजे गये थे जिनका सी०आई०डी० की फाइलों में नाम अंकित था, जेल में अध्ययन - मनन का गंभीर परिवेश बन गया था, जेल में लगभग तीन-चार हजार पुस्तकों का संकलन था। मन्मथनाथ गुप्त भी इस जेल में थे, उन्होंने तो यहाँ पर लिखने-पढ़ने का कार्यालय सा खोल रखा था, माहौर जेल में कालिदास के ऋतु संहार का भाषा कविता में अनुवाद कर रहे थे।[१]

भगवानदास माहौर गायकी के साथ-साथ संगीत पर भी अपनी रियाज बनाये रखते थे। वे शास्त्रीय गायन में भी अपनी पकड़ रखते थे। वे जेल में आगरे से आये बच्चा बाबू से हारमोनियम सीखते थे। जेल की उस संगीत महफिल में माहौर के अतिरिक्त बच्चा बाबू, गोकुल भाई और राजूदा भी अच्छे शास्त्रीय गायक थे किन्तु महफिल के मुख्य गायक माहौर ही थे। माहौर जैसे कलाकारों के कारण जेल का शुष्क वातावरण भी रसप्लावित हो जाता था।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३२, ३३।

२. वही, पृ०सं०- ३३।

एक बार मन्मथनाथ गुप्त रात भर इन सभी कलाकारों की गायकी सुनते रहे, उन्होंने प्रातः माहौर की ओर संकेत करते कहा कि 'गाना' इसे कहते हैं, इस पर माहौर ने अपने को धन्य समझते हुए मन्मथनाथ को नतमस्तक हो कर प्रणाम किया।[१]

भगवानदास माहौर केवल गायकी में ही निपुण नहीं थे अपितु वे अन्य विधाओं में भी सिद्धहस्त थे। वे एक अच्छे नाट्य कलाकार भी थे।एक बार जेल में शरद चन्द्र चटर्जी के 'ग्रामीण समाज' नामक नाटक का भी मंचन हुआ, जिसमें भगवानदास माहौर के किरदार को बहुत सराहा गया। उस नाट्य मंचन को जेल अधिकारियों ने भी देखा, उन्होंने भी माहौर के अभिनय की तारीफ की।

जेल में कलात्मक क्रियाओं से इतर खेलों का भी प्रबन्ध होता था, खेलों में शतरंज, करम, बैड मिण्टन और वालीवाल प्रमुख रहते थे। एक बार जेल में बैडमिण्टन टूर्नामिण्ट हुआ, जिसमें जेल कैदियों एवं कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने भी पूरा लुफ्त उठाया।

खेल के अन्त में पारितोषिक वितरण समारोह हुआ, जिसमें भगवानदास माहौर द्वारा बनायी गयी ''करम गति टारे नाहि टरी'' नामक पैरोडी का सभी लोगों ने जमकर आनंद उठाया। पाँच मिनट हँसी के कहकहे चले।[२] पैरोडी के शब्द थे-

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३४, ३५।

२. वही, पृ०सं०- ३५।

तमकि ताकि, ताण्डव मुद्राते यद्यपि मार करी
ऐसी चरम रांड, चिरिया भई, ठप्प से चरन परी,
करम गति टारे नांहि टरी।

इस तरह जेल-प्रवास में माहौर की बहुमुखी प्रतिभा में और भी अधिक निखार आया।

अहमदाबाद सेण्ट्रल जेल और माहौर

भगवानदास माहौर ने अपने जेल-जीवन का आधा भाग अहमदाबाद सेण्ट्रल जेल मे काटा।

साप्ताहिक मालिश और माहौर

भगवानदास माहौर स्वतन्त्र विचारों के क्रांतिकारी सेनानी थे, उनकी अहमदाबाद के जेल अधीक्षक से खट-पट हो गयी, इस अनबन के कारण उन्हें कठोर यातनायें झेलनी पड़ीं, उन्होंने उन यातनाओं को सहर्ष स्वीकार किया, किन्तु यातना-अनुभव को वे कभी अपने ओठों पर नहीं लाये।

जेल में माहौर जी की साप्ताहिक पिटाई होती थी, जिसे उन्होंने साप्ताहिक मालिश की संज्ञा प्रदान की थी। माहौर ने अपने जेल-जीवन का अधिकांश हिस्सा अहमदाबाद सेण्ट्रल जेल की अंधेरी कोठरियों में बिताया।[१]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२९, १३०।

माहौर ने इस जेल में भी कई बार छोटी-बड़ी भूख हड़ताल की, नाना प्रकार की मानसिक और शारीरिक यातनाएं झेले, जेल जुल्मों को सहा। जेल जुल्म माहौर जी के लिए आनन्दकर बन गये थे, उन्हें जेल में जो एक नया अनुभव हआ, वे उसे जेल यातना से भी अधिक कष्टकर मानते थे। वे उसे भूल नहीं पा रहे थे।

जेल में पं० परमानंद जी का सानिध्य और माहौर

भगवानदास माहौर पं० परमानंद के प्रति बहुत आत्मीयता रखते थे किन्तु उनको परमानंद के दर्शन बहुत दिनों बाद हुए। माहौर ने छात्र-जीवन में पं० परमानंद के सेलुलर जेल के वृत्तांत को पढ़ा था। पं० परमानंद द्वारा जेल में यमदूत के मूर्त रूप जेलर वारी को पीटा जाना राष्ट्र में एक विश्रुत प्रकरण बन चुका था। माहौर भी पं० परमानंद के इस साहस के बेहद कायल थे।

भुसावल बम केस में माहौर को सजा हुयी । उनका मार्च १९३० में घुलिया जिला से अहमदाबाद सेण्ट्रल जेल स्थानांतरण हो गया था। माहौर रात को अहमदाबाद जेल के दरवाजे पर पहुँचे। माहौर को घुलिया जेल में यह अनुभव हो चुका था कि जेल में जीने के दो तरीके हैं। पहला कैदियों की भाषा में- "कम खाना और गम खाना" और दूसरा था- "रगड़ के खाना और बिगड़ के रहना।"[१]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३०, ३१।

माहौर ने जेल में अपने लिए दूसरे उपाय को चुना। उन्होंने रगड़ के खाना और बिगड़ के रहना का दृढ़ निश्चय किया। इस फार्मूले पर पहले तो कैदी को पीड़ा भोगनी पड़ती है फिर बाद में उसे इस निश्चय का नेह मिलता है कि जहाँ तक संभव होता है तो जेल-अधिकारी बिगड़ कर रहने वाले कैदी को अनावश्यक रूप से छेड़ते नहीं हैं। बिगड़ैल कैदी को एक अलग कोठरी में रखा जाता था। माहौर जैसे ही जेल के दरवाजे पर पहुँचे तो उन्होंने जेल के क्लर्क से बिगड़ के रहने की वृत्ति का परिचय दिया। माहौर को शक थ कि मेरी उस वृत्ति के अपनाने के कारण संभव है कि दरवाजे पर कुछ पूजा हो, किन्तु ऐसा कुछ हुआ नहीं। माहौर को जेल के दरवाजे से क्वारेण्टाइन बैरक में ले जाते हुए जेल-वाडन ने उनसे सहानुभूति दिखायी, जेल वार्डर ने माहौर से कहा कि यहाँ पर कुछ बम वाले और भी हैं। इससे माहौर को कुछ बल मिला, साथ ही आश्चर्य भी हुआ कि यहाँ पर पहले के कौन क्रांतिकारी हैं।[१]

माहौर को सुबह डाक्टरी परीक्षा के लिए अस्पताल ले जाया गया। डाक्टर ने माहौर से कहा कि सात वर्ष से सजा भोग रहे इस पीली टोपी वाले कैदी को जानते हो। पीली टोपी वाले कैदी माहौर को बहुत ही आत्मीय ढंग से देख एवं मुस्करा रहे थे, उस पीली टोपी वाले कैदी के प्रति डाक्टर के आदर के भाव को देखकर माहौर को लगा कि वे कैदी निश्चित रूप से कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति होगे।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३१, ३२।

२. वही, पृ०सं०- ३२।

माहौर की नजर जब उस कैदी के बिल्ले पर गई, जिस पर "परमानंद- गया प्रसाद" नाम अंकित था तो सहसा उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि मेरी कल्पना के पहलवान पं० परमानंद और इस दुबले-पतले कैदी में कितना अन्तर है। उसके बाद पं०परमानंद ने माहौर को उल्लास से अपनी बाहों में भर लिया। इस भाव विह्वल मिलन ने माहौर को कुछ समय के लिए यह एहसास ही नहीं होने दिया कि वे जेल में हैं। वे डाक्टर के सामने पं० परमानंद से बहुत देर तक बातें करते रहे।[१]

पं० परमानंद को जेल में रहते हुए लभगग १४ वर्ष व्यतीत हो गये थे। पं० परमानंद ने गदर आन्दोलन में प्रमुख क्रांतिकारी की भूमिका निभायी थी। माहौर पं० परमानंद से बहुत प्रभावित हुए। उनको दृढ़ता और दायित्व बोध का साबल्य मिला। उन्हें ऐसा लगा कि जैसे मानो पं० परमानंद से ऊर्जा की किरणें निकल रहीं हों और माहौर को लगा कि जैसे उस शक्ति को अपने में अन्तस्थ कर रहे हों। कुछ देर बाद सूचना मिली कि जेल अधीक्षक राउण्ड पर हैं, परमानंद वहाँ से चले गये।

माहौर को अब पता चला कि जेल-दरवाजे पर क्लर्क तथा वार्डरों ने उनके प्रति अच्छा व्यवहार क्यों किया था, माहौर के वहाँ पर पहुँचने से पहले परमानंद जी को यह खबर चल गयी थी कि माहौर की जेल बदली होने वाली है। इस पर उन्होंने क्लर्क तथा वार्डरों आदि से कह रखा था कि उनका एक छोटा भाई जेल स्थानान्तरण के कारण इस जेल में आ रहा है।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३२।

यह सूचना अहमदाबाद जेल में पहले ही पहुँच गयी थी कि बम दल वाला एक खतरनाक कैदी इस जेल में आ रहा है। पं० परमानंद के उर्दात व्यवहार से जेल-क्लर्क और वार्डर उन्हें आदर की दृष्टि से देखते थे। उस समय पं० परमानंद कपड़ा एवं निवाड़ आदि बुनने के कारखाने में प्रवीण हो गये थे, उन्हें जेल में घूमने - फिरने की आजादी मिल गयी थी, क्लर्क आदि से उनका अच्छा परिचय हो गया था, इसी कारण माहौर को जेल-दरवाजे पर 'पूजा' जैसे व्यवहार से गुजरना नहीं पड़ा। पं० परमानंद ने माहौर को पहले से ही अपना छोटा भाई घोषित कर रखा था।[१]

माहौर को एक खतरनाक कैदी समझा जा रहा था, इस कारण उन्हे क्वारेण्टाइन बैरक में नहीं रखा गया। उन्हें घुलिया जेल में ही चेचक का टीका लगया जा चुका था। माहौर को उसी क्वारेण्टाइन बैरक से अलग रखने के लिए छोटा चक्कर के तीसरे वार्ड में भेज दिया गया था, जहाँ पर चालीस कोठरियाँ थी, उन्हीं में से एक कोठरी में पं० परमानंद रहते थे।माहौर जी को यह समझनें में देर नहीं लगी कि इसमें पण्डित जी की तिकड़म ने ही सफलता दिलायी है। वहाँ पर केवल छोटे चक्कर में कोठरियाँ थीं और वे वार्ड नं० ०३, ०४ और ०५ में ही थीं। वार्ड नं० ०५ की कोठरियाँ अंधेरी कोठरियाँ कहलाती थीं। इन पर उन कैदियों को रखा जाता था जो जेल में अपराध करते थे। वार्ड नं० ४ में मनभाड बम काण्ड मे सजा पाये क्रातिकारी मनमोहन गुप्त को रखा गया था।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३२, ३३।

२. वही, पृ०सं०- ३३।

जेल नीति के अनुसार दो क्रांतिकारियों को एक ही वार्ड में नहीं रखा जाता था किन्तु पं० परमानंद जी की तिकड़म के अनुसार माहौर को उन्हीं के वार्ड नं० ३ में रखा गया, किन्तु पण्डित जी तिकड़म माहौर को चक्की पिसवाने से न बचा पाई।

भगवानदास माहौर की आत्म ग्लानि

पं० परमानंद की सिफारिश पर जेलर ने माथापच्ची कर माहौर के लिए चक्की पीसना लिखा। पण्डित जी ने माहौर को समझाया कि चिन्ता की कोई बात नहीं है, जितना तुमसे बने चक्की पीसो। उन्होंने यह भी कहा कि चक्की पीसने में केवल ताकत से ही काम नहीं चलता, इसमें भी कुश्ती की तरह दांव-पेंच होते हैं और वे अभ्यास से ही आते हैं, कुछ समय बाद तुम भी चक्की पीसने में प्रवीण हो जाओगे।[१]

पं० परमानंद के छोटा भाई होने के कारण माहौर चालीस पौण्ड कभी पीस नहीं पाते थे, उन्हें पं० परमानंद जी के भाई होने का एक लाभ यह मिलता था कि दूसरे कैदी उनके हिस्से का पीस देते थे, इस पर भगवानदास को अपनी पहलवानी पर तरस आ रहा था, झेंप भी लग रही थी, माहौर से चक्की पीसते ही नहीं बनता था। उन्हें अपने इस कृत्य पर आत्म ग्लानि हो रही थी।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३२, ३३।

२. वही, पृ०सं०- ३३।

माहौर का अंग्रेजी में बोलना मंहगा पड़ा

दूसरे दिन जेल अधीक्षक जेल के राउण्ड पर निकले। माहौर ने जेल अधीक्षक से अपने जेल तबादले की सूचना घर भेजने के लिए पत्र लिखने की सुविधा की अनुमति चाही। माहौर ने जेल अधीक्षक से अंग्रेजी में बात की जो उसे नागवार गुजरी, उसने जेलर से कहा कि यह कैदी क्या बोलता है? इसके कहने का क्या मतलब है? इस पर जेलर ने साहबी अंदाज में माहौर को डाँटते हुए कहा-

"साहब बहादुर से हिन्दुस्तानी में बोलो, तुम अंग्रेजी में नहीं बोल सकता। इस पर माहौर ने सोचा कि एक तो चक्की न पीसने का झंप है, दूसरा साहब की डाँट पर भीगी बिल्ली बना रहा तो बहुत अपमान होगा। इस विचार-द्वन्द्व में माहौर के मुख से निकल पड़ा, अंग्रेजी में विचार व्यक्त करने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी, रही हिन्दुस्तानी में बात करने की तो मेरा इस सम्बन्ध में यह कहना है कि शुद्ध हिन्दी को आप समझ नहीं सकेंगे, गुलामी के प्रतीक आप जैसे हिन्दू से न कुछ कहना चाहता हूँ और न ही सुनना चाहता हूँ।"[१]

माहौर के इस बेबाक उत्तर पर जेल अधीक्षक ने उन्हें अंधेरी कोठरी में बंद कर देने का आदेश कर आगे बढ़ गये। माहौर को अंधेरी कोठरी वार्ड नं० ५ में बंद कर दिया गया, इस तरह माहौर को अधीक्षक से अंग्रेजी में बात करना मंहगा पड़ गया।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३३, ३४।

माहौर को पं० परमानंद का सुझाव

पं०परमानंद माहौर की अंधेरी कोठरी में पहुँचे, उन्होंने माहौर को समझाते हुए कहा कि तुम्हें वार्ड नं० ३ में इसलिए रखा गया था कि तुम्हें आसानी से अध्ययन के लिए पुस्तकें उपलब्ध करायीं जा सकें, साथ ही वहाँ पर तुम्हारे काम की कोई खास-पाबन्दी न होती, इससे तुम्हें अध्ययन के लिए पर्याप्त समय मिलता, इसके बावजूद पं० परमानंद जी ने माहौर के लिए अंधेरी कोठरी में भी अध्ययन के लिए पुस्तकों का प्रबन्ध किया। इसके साथ ही उन्होंने माहोर को समझाया कि बेकार लड़ने-भिड़ने में कोई सार नहीं है, जहाँ तक संभव हो अपने को लड़ाई-झगड़ा से दूर रखो, जो समय मिले, उसका अध्ययन में सदुपयोग करो।[१]

जेल अधीक्षक ने जब माहौर को अंधेरी कोठरी में रखने का ओदश दिया था तो उन्होंने उत्तेजित होकर यह कहा था कि इस आदेश के प्रतिकार स्वरूप भूख हड़ताल की जायेगी। माहौर ने शाम को खाना नहीं खाया। उनकी कोठरी में खाना रख दिया गया था। चक्कर के जमादार ने इस प्रकरण की जानकारी जेलर को दी।

माहौर की उत्तेजना रंग लायी

माहौर ने जेल अधीक्षक से अनशन करने के जो अपने इरादे को व्यक्त किया था,शाम को भोजन नहीं लिया था। इस पर जेलर को यह आशंका हो गयी थी कि कहीं इस जेल में भी अनशन की बीमारी न फैल

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३३।

जाय। फलतः जेलर साहब प्रातः जेल-राउण्ड पर आये। उन्होंने गर्वीले अंदाज में वार्डरों तथा जमादारों को झाड़ पिलाते हुए माहौर की कोठरी के सामने खड़े होकर बोले, इस कोठरी में कौन है? इसको ताले में क्यों बंद कर रखा है। ताला खोलो, ताला खोल दिया गया।[१]

जेलर साहब माहौर को देखकर ऐसे मुस्कराये कि मानो वे केवल माहौर को ही देख रहे हों, वार्डरों तथा जमादारों को नहीं। जेलर ने जमादार को बहुत हड़काया। उन्होंने कहा कि ताले में बंद करने का आदेश नहीं था, फिर भी इस कैदी को ताले में क्यों बंद किया गया? इन्हें चरखे का काम दो। उसके बाद जेलर ने माहौर से अंग्रेजी में कहा, पत्र के लिए जेल-अधीक्षक से कहने की आवश्यकता नहीं थी, तुम्हें जो कुछ कहना हो, मुझसे कहा करो, तुम शिक्षित नौजवान हो, नियम के अन्दर जो भी सुविधायें देय होंगी, वे तुम्हें अवश्य मिलेंगी, भोजन मत छोड़ो, इससे तुम्हारा स्वास्थ्य तथा जेल-रिकार्ड दोनो खराब हो जायेंगे।

जेलर ने माहौर के प्रति यह सब सद्भाव में ही कहा था किन्तु माहौर को उनके लहजे में दर्प दिखायी पड़ रहा था, माहौर की कोठरी का ताला खुला रहा, कोठरी के बाहर चरखा रख दिया गया, माहौर की परमानंद से पहले ही बात हो चुकी थी, उन्हें चक्की पीसने से निजात मिली। पण्डित जी माहौर को पुस्तकें भेजने लगे और वे अपना अधिकांश समय पढ़ने में लगाने लगे।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३३, ३४।

२. वही, पृ०सं०-३५

जेल में आन्दोलन का प्रभाव

१९३० में देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन चल रहा था, जेल के अन्दर कैदियों पर भी उसका प्रभाव पड़ा। पं० परमानंद कैदियों को स्वातन्त्र्य आन्दोलन की जानकारी देते रहते थे। पण्डित जी की बातें रंग लाने लगीं। रविवार के दिन एक सज्जन जेल में धार्मिक उपदेश देते थे, जिसे सुनने के लिए सभी कैदी एक वार्ड में एकत्रित होते थे। औपदेशिक सभा में कुछ कैदियों ने "राजा रामचन्द्र जी की जय" का घोष किया, कुछ उत्साही कैदियों ने महात्मा गांधी की जय के भी नारे लगाये। कुछ ने वंदेमातरम का निनाद किया। जेल प्रबन्धन ने जब उन कैदियों से ऐसा न करने के लिए कहा तो उनका उत्साह द्विगुणित हो गया। उसके बाद नाना प्रकार के नारे लगने लगे। कुछ समय बाद जैसे-तैसे कैदियों को अपने चक्कर में लाया गया। वहाँ पर पं० परमानंद, मनमोहन गुप्त भी पहुँच गये। माहौर भी अपनी कोठरी के एडीटर कैदी के साथ उपदेश - सभा में थे।

जेल के अन्दर यह समझा गया कि इस घटना के मूल में पं० परमानंद का ही हाथ है, कुछ अति उत्साही कैदियों ने "पं० परमानंद की जय" के भी नारे लगाये, कुछ ने अपनी चादरों को फाड़कर तिरंगे झण्डे बना लिये, उनको पेड़ों पर चढ़कर ऊँची डालियों में बांध दिया।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३५।

इसके बाद बाहर की गारद बुला ली गयी, कैदियों को बैरकों तथा कोठरियों में बंद कर दिया गया, दो दिनों तक नारे-बाजी होती रही। कैदियों ने वहाँ के वार्डरों, जमीदारों तथा अधिकारियों के विरुद्ध अपने आक्रोश का इजहार गालियाँ देकर किया। पं० परमानंद तो एक अलग कोठरी में बंद थे, उन कैदियों को रोकता कौन?

कैदियों को बेंट की सजा

इस घटना का जेल प्रबन्धन ने जेल में गदर की संज्ञा दी, पं० परमानंद को इसके लिए दोषी ठहराया गया, बहुत से कैदियों को बेतों की सजा दी गयी। उन्हें चक्कर के बीचों-बीच टिकटी से बांधकर बेतों से पीटा गया, यह सब जेल में आतंक फैलाने की दृष्टि से किया गया, कुछ कैदियों ने बेंत-सजा पर चूँ तक नहीं की, कुछ कैदी बहुत चीखे-चिल्लाये। जिन कैदियों के प्रति जमादारों और वार्डरों की सहानुभूति थी, उन्हें धीरे-धीरे बेंत लगाये गये। जेल अधकारियों की भी यही सोच थी कि कैदियों को बेंत इस तरह लगाये जायें कि वे खूब चिल्लायें। इस सजा पर नारे लगना बंद हो गये। माहौर भी इस सजा को देखकर सहम गये।[१]

तीसरे दिन, बेंत लगाने की टिकटी, जिसे तीन पाँव की घोड़ी कहा जाता था, माहौर के वार्ड की कोठरी के सामने रख दी गयी। माहौर को बेंटो की तुलना में फांसी की सजा सुगम लगती थी। उन्हें भय था कि कहीं बेतों की सजा पर चिल्लाने न लूगँ, जिससे उनकी देशभक्ति और

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३६, ३७।

क्रांतिकारी उत्साह पर प्रश्नचिन्ह न लग जाय। थोड़ी देर बाद जेलर साहब आ गये, और माहौर की ही पहली कोठरी थी, जेलर रुका और माहौर को कोठरी से निकालने का आदेश देने ही वाला था कि इतने में नये जेल अधीक्षक लक्सटन के आने की सूचना आ गयी, जेलर ने आगे बढ़कर माहौर के सम्पादक मित्र भद्रकुमार याज्ञिक को कोठरी से निकलवाकर बहुत परेशान किया। उन्हें तीन महीने की डंडा-बेड़ी की सजा दी गयी।[१]

जब माहौर को सेलुलर जेल का दृश्य याद आ गया

यह देखकर भगवानदास माहौर की आँखों के सामने पं० परमानंद जी को सेलुलर जेल में बेंत लगाये जाने का दृश्य सिनेमा की रील की तरह घूम गया। माहौर को ऐसा लगा कि जैसे पं० परमानंद वार्ड की दीवालों के पार से यह देख रहे हो कि मैं बेंतों की सजा किस तरह खा रहा हूँ। इससे माहौर को बड़ा मिला।

भगवानदास माहौर को इस बात की अनुभूति हुई कि भगवानदास माहौर केवल माहौर भर नहीं है, वह पं० परमानंद का छोटा भाई है, जिसे पं० परमानंद जैसे महान पुरोधा से इस प्रकार का सम्बल मिला हो, वह भला कमजोर कैसे हो सकता है?[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३६, ३७।

२. वही, पृ०सं- ३७।

जैसे ही जेल अधीक्षक तथा जेलर माहौर की कोठरी के सामने आये, वैसे ही माहौर की कोठरी का ताला खोला गया। माहौर ने स्वाभिमान का सहारा लिया, उनके पैर स्थिर हुए, सीना तन गया और सिर ऊँचा उठ गया, अधीक्षक ने माहौर को ऊपर से नीचे तक गौर से देखा, वे भी साहब की तरफ स्थिर दृष्टि से देखते रहे। साहब ने जेलर से पूँछा कि इसने क्या किया है?

माहौर के प्रति जेलर की सहानुभूति

जेलर ने साहब से खुद कुछ नहीं कहा, सूबेदार ने उत्तर दिया कि इसने कोठरी में बंद होने से इन्कार कर दिया था, इसे उठाकर बंद करना पड़ा, साहब ने पूँछा कि और कुछ तो नहीं कहा, जेलर के इशारे पर सूबेदार ने कहा कि हुजूर इतना ही किया है। साहब ने फिर पूँछा कि गालियाँ तो नहीं दी, किसी को धमकाया तो नहीं, सूबेदार ने कहा कि इसने गालियाँ नहीं बकीं।[१]

साहब ने माहौर के बारे में कहा कि तीन महीने तक टाट-कपड़ा, तीन महीने डंडा बेड़ी और तीन महीना कोठरी की सजा दी जाय, बाद में महौर को समझ आया कि जेलर प्रारम्भ से ही माहौर को बेतो की सजा देने के पक्ष में नहीं था। जेलर इसलिए चाहता था कि माहौर को वेत की सजा देने से स्थिति सुधरेगी नहीं बल्कि बिगड़ेगी ही, मनमोहन गुप्त और पं० परमानंद को भी यही सजा दी गयी। उनकी सुविधायें काट ली गयीं।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३७।

पण्डित जी की मास्टरी भी जाती रही, वे भी माहौर की तरह एक अलग कोठरी में बंद कर दिये गये गये। इसके बावजूद वार्डरों, जमादारों तथा जेलर की नजरो में उनकी लोकप्रियता की साख गिरी नहीं। इतने पर भी परमानंद जी तिकड़म से माहौर के पास पुस्तकें भेजते रहे।

कुछ दिनों बाद परमानंद जी को छोटे चक्कर से हटाकर दूर फांसी गारद में डाल दिया गया, वहाँ पर जहाँ फाँसी सजा याफ्ता कैदी दिन रात बंद रखे जाते थे, उसके बाद उनको कोठरी से निकाल कर सीधे फाँसी घर में फाँसी पर लटका दिया जाता था। उस हालात में भी परमानंद जी फाँसी की सजा पाये कैदियों का यथा सम्भव मनोविनोद कराते रहे। परमानंद जी ने जीवन को जितने अधिक निकट, गहराई तथा दीर्घ समय तक देखा है, उतना संभवतः और लोगों ने कम ही देखा होगा। यही कारण है कि उनमें जीवन के प्रति अनुराग और मृत्यु के प्रति निर्भीकता दिखायी पड़ती रही।[१]

भगवानदास माहौर ने अपना जेल-जीवन पं० परमानंद की स्नेहिल छाया में १९३० से १९३७ तक बिताया। माहौर ने जेल में कई बार अल्हड़पन भी दिखाया। माहौर जी को पं० परमानंद के प्रभाव के कारण बेतों की सजा छोंड़कर शेष सभी प्रकार की सजाओं का जेल में अनुभव भी हुआ।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३७।

२. वही, पृ०सं०- ३७, ३८।

माहौर का आधीक्षक से पुनः उलझाव

भगवानदास माहौर का जेल - अधीक्षक अडवानी से पुनः विवाद हो गया। अडवानी ने माहौर को चक्की पीसने, डण्डा-बेड़ी, टाट-कपड़े के साथ बंद कोठरी में चक्की पीसने की सजा का आदेश दिया। माहौर का वजन १४४ पौण्ड से घटकर ११२ पौण्ड रह गया, किन्तु इस बार माहौर ने चक्की पीसने का निश्चय कर लिया था। परमानंद जी ने पहले ही चक्की पीसने को लेकर माहौर के पहलवानी घमण्ड को चूर होते देखा था, कुछ समय बाद पण्डित जी ने जब माहौर का कुशल क्षेम पूँछवाया तो माहौर ने उत्तर भिजवाया कि कह देना कि माहौर मजे में है, ४४ पौण्ड १२ बजे से पेस्तर रगड़ कर फेंक देता है।[१]

माहौर ने साप्ताहिक परेड में खड़े होने से इन्कार कर दिया था। माहौर को सप्ताह में हर सोमवार को परेड़ में खड़े होने को लेकर पीटा जाता था। इसे उन्होंने साप्ताहिक मालिश का नाम दिया था। परमानंद जी के स्नेह से माहौर को सम्बल मिलता रहा।

माहौर को परेशान करने का एक नायाब उपाय

भगवानदास माहौर को आडवाणी साहब ने परास्त करने का एक अजीब उपाय खोजा, उन्होंने माहौर के ऊपर निगरानी रखने के लिए दो बार्डिरों का पहरा लगा दिया, उन्हें यह आदेश दिया कि माहौर रात को सोने न पाये। माहौर जब कोठरी में सोने लगे तो उसे बांस कोंचकर जगा

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३८।

दिया जाय, पं० परमानंद जी को माहौर के प्रति अपनाये जाने वाले रवैये को सुनकर बहुत चिन्ता हुई। उन्होंने वार्डरों तथा जमादारों को समझाबुझा कर ऐसा माहौल बनवा दिया कि जगाने के लिए बांस कोंचना एक रस्म भर रह गयी। यह क्रम एक वर्ष लागू रहा, माहौर विचलित नहीं हुए। वार्डर माहौर को दिन में सो लेने देते थे। पं० परमानंद जी द्वारा तिकड़म से भिजवायी गयी पुस्तकों को माहौर पढ़ लेते थे। राउण्ड पर जब जेलर अधीक्षक निकलते तो वार्डर माहौर को जगा देते, वे उस समय गाना गुनगुनाते रहे, साहब माहौर की गाने की आवाज सुनकर और वार्डरों से पूँछ-ताँछ कर चले जाते थे।

माहौर का अहमदाबाद सेण्ट्रल जेल का पूरा जीवन परमानंद की छत्रछाया में आत्मीयतापूर्ण कटा। पं० परमानंद १९३७ में जेल से मुक्त हुए। वे झांसी पहुँच कर माहौर जी के घर जाकर उनके माता-पिता को आश्वस्त करते थे। पण्डितजी घर-परिवार में घुल-मिल जाते थे। माहौर जी के परिवारीजनों से उनकी गहरी आत्मीयता थी।[१]

माहौर मार्च १९३८ में जेल से मुक्त होकर घर पहुँचे। वे जब जेल गये थे, उस समय छः माह की भतीजी बढ़कर दस वर्ष की हो गयी थी। माहौर के घर में माहौर के जेल के पूर्व और बाद के दोनों प्रकार के चित्र लगे थे। माहौर के पूर्व और बाद के चित्रों के मिलान न होने के कारण भतीजी को उन पर विश्वास नही हो रहा था कि माहौर ही उनके चाचा हैं।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३८, ३९।

२. वही, पृ०सं- ३९

जब माहौर का नाम मूर्खानंद पड़ा

माहौर की भतीजी के शक को सदाशिव राव मलकापुरकर के बड़े भाई ने भांप लिया। उन्होंने माहौर की भतीजी को अपने पास बुलाया और कहा कि अपने घर जो परमानंद आते हैं, उनके ये छोटे भाई मूर्खानंद हैं ये भी अभी जेल से छूट कर आये हैं। सीधी-सादी बच्ची के मन में यह बात जम गयी। उसने अपनी माँ से जाकर कहा कि तुम्हें कुछ पता नहीं है, ये अपने चाचा नहीं हैं, ये तो परमानंद के छोटे भाई मूर्खानंद हैं। यह बात उसने विश्वास एवं विस्मित भाव से कही, जिसे माहौर सहित सभी सुनकर हंस पड़े, तभी से माहौर का घर पर मूर्खानंद नाम पड़ गया।[१]

माहौर की मुसीबतें

भगवानदास माहौर १९४५ में जेल से रिहा हुए, वे जब जेल से मुक्त होकर घर पहुँचे तो उनके सामने मुसीबतों का पहाड़ खड़ा हुआ था, घर की माली हालत जर्जर थी, मामा की आर्थिक स्थिति बदतर थी, सरकार द्वारा माहौर के माता-पिता के जीवकोपार्जन के लिए तीस रुपये मासिक दिये जाते थे, माहौर जी के कारागार से छूटने पर वे भी बन्द हो गये।

उस स्थिति को देखकर माहौर जी को यह लग रहा था कि जैसे परिवार पर स्वयं भार हैं, वे पूरी तरह मनो विषाद में डूब गये थे।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३८, ३९।

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ११३, ११५।

अनचाहा सम्पादन और माहौर

माहौर को उस विषम परिस्थिति में कामरेड होने के बावजूद एक कांग्रेसी साप्ताहिक पत्र में साठ रुपये मासिक वेतन पर कार्य करना पड़ा। माहौर ने सम्पादकीय कार्य परिस्थितिजन्य होकर किया, वे बाल स्तम्भ के सम्पादन में कार्य करने लगे। माहौर को उस समय एक और संयोग से दो-चार होना पड़ा, एक महाशय की उन दिनों नौकरी छूट गयी थी, वे पत्रकारिता के दंगल में दो-दो हाथ करने को तैयार थे, वे माहौर के प्रबल प्रतिद्वन्दी थे। वे माहौर के स्थान पर स्वयं साप्ताहिक पत्र में कार्य करना चाहते थे, माहौर को जब पता चला कि वह सज्जन उनके मार्ग में अवरोध खड़ा कर रहे हैं तो उन्होंने कहा कि देखो! मित्र, मैं यह कार्य स्वयं नहीं करना चाहता, मैं इस कार्य को बौद्धिक वेश्यापन मान रहा हूँ, मैं इस समय यह काम करने के लिए मजबूर हूँ, अवसर मिलने पर मैं इस कार्य को स्वयं छोंड़ दूँगा, इसके बावजूद वह सज्जन माहौर के विरुद्ध कुछ न कुछ करते ही रहे।

सम्पादन से अध्यापन के क्षेत्र में

दो-तीन वर्ष बाद माहौर की उस साप्ताहिक पत्र में एक सौ पचास रुपये पगार हो गयी, उसी समय उन्हें सत्तर रुपयों में अध्यापकी मिल गयी, उन्होंने सम्पादकीय के स्थान पर अध्यापन स्वीकार कर लिया।

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ११३, ११४।

२. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६१।

भगवानदास माहौर अध्यापन के क्षेत्र में दशकों तक जमे रहे, उसके मूल में वे उस महाशय को बड़ा कारण मानते रहे, उनका मानना था कि यदि वह सज्जन पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके मार्ग में रोड़े न अटकाते तो वह भी उसी क्षेत्र में चक्कर काटते रहते और अपना सारस्वत विकास न कर पाते, माहौर एस०पी०आई० इण्टर कालेज झांसी में १९५६ तक अध्यापन करते रहे।

सारस्वत विकास और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर ने जेल जीवन में अपने अध्ययन क्षेत्र को काफी विस्तृत कर लिया था, भगवानदास माहौर ने जेल से मुक्त होने के बाद उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपने को आगे बढ़ाया, उन्होंने बी०ए० किया तत्पश्चात् हिन्दी से एम०ए० किया। भगवानदास माहौर की अध्ययन में लगन प्रारम्भ से ही थी। माहौर ने एम०ए० करने के बाद हिन्दी में पी-एच०डी० भी किया।[१]

भगवानदास माहौर का जेल-प्रवास १४-१५ वर्ष रहा, जेल-जीवन में ही उनके स्वातन्त्र्य जीवन की आवश्यक जमीन तैयार हो गयी थी, १९४७ में देश आजाद हो गया। भगवानदास माहौर १९४५ में जेल से मुक्त हो गये थे। जेल से छूटने के पहले ही कांग्रेस में कुछ दिनों तक पूरे मनोयोग से कार्य भी किया था,१९३८ के बाद वे कांग्रेस में कार्य करते रहे। माहौर १९४५ के बाद शिव वर्मा के परामर्शानुसार कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये। १९५२ में आम चुनाव हुए।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६१, ६२।

माहौर को बलि का बकरा बनाया गया

कम्युनिस्ट पार्टी के झांसी के दिग्गज कामरड जानते थे कि झांसी से उनकी जीत नहीं हो सकती है, ऐसी स्थिति में उन्हें एक ऐसा प्रत्याशी चाहिए, जिसे बलि का बकरा बनाया जा सके। उस समय माहौर हृदयाघात के मरीज भी थे, कामरेडों ने एक प्रगतिशील जनवादी मोर्चा बनाया, उसकेद बाद माहौर जी के पास पहुँचे और कहा कि हमें आपकी क्रांतिकारी पहचान की आवश्यकता है, आपसे निवेदन है कि आप मोर्चा की ओर से विधान सभा के लिए खड़े हो जायं। माहौर जी उस समय अस्वस्थ थे, फिर भी उन्होंने अपने उम्मीदवार होने की अनुमति प्रदान करदी, उनका यह निर्णय चौंकाने वाला था।[१]

चुनाव-काल में कुछ समय बाद मोर्चा में मतभेद पैदा हो गया। मोर्चा का एक धड़ा यह चाहता था कि माहौर जी वर्मा जी के पक्ष में बैठ जाय, पी०सी० जोशी जैसे प्रमुख पार्टी पदाधिकारी ने भी स्थिति को समझकर यही राय दी कि माहौर जी को वर्मा जी के पक्ष में बैठ जाना चाहिए। सदाशिवराव मलकापुरकर और पी०सी० जोशी के बीच इस मुद्दे पर वाद-विवाद हो गया।

उसके बाद सारा चुनाव प्रबन्धन् मलकापुरकर के सिर पर आ पड़ा, परिणाम यह हुआ कि माहौर जी की जमानत जब्त हो गयी। इस तरह माहौर को १९५२के चुनाव में बलि का बकरा बनाया गया। उसके बाद

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १३४।

भगवानदास माहौर तथा मलकापुरकर दोनो कम्युनिस्ट पार्टी से अलग हो गये। डॉ०रामविलास शर्मा ने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि मलकापुरकर तथा माहौर को कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बनाना ही नहीं चाहिए था।

पार्टी ने उनकी प्रतिष्ठा की ओट में पार्टी को गौरान्वित करने के लिए उनको सदस्य बनाया था। उन्हें पार्टी द्वारा दृढ प्रशिक्षण भी नहीं दिया गया। पार्टी कार्यकर्ताओं को यह पता ही नहीं था कि उन क्रांतिकारियों से कैसे काम लिया जाना चाहिए। पार्टी या संगठन के सदस्यों ने उन दोनो का ध्यान ही नहीं रखा। फलतः भगवानदास माहौर तथा सदाशिव राव मलकापुरकर का कम्युनिस्ट पार्टी से अलग होना बिल्कुल स्वाभाविक था।[१]

माहौर जी ने सन् १८५७ के स्वाधीनता संग्राम का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव नाम शीर्षक के अन्तर्गत डाँ० वृन्दावनलाल वर्मा के निर्देशन में आगरा वि०वि० से १९६५ में पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त की। इन्होंने शोध-कार्य में ०६ का पर्याप्त समय दिया।

दाम्पत्य जीवन के क्षेत्र में

भगवानदा माहौर जब १९३८ में जेल से छूटकर घर आये तो उनके विवाह की चर्चा हुई किन्तु विवाह हो न सका। दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया, उसके बाद अगसत क्रांति प्रारम्भ हो गयी। माहौर पुनः गिरफ्तार

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १३४, १३५।

कर लिये गये। उसके बाद १९४५ में जब वे जेल से बाहर आये तो उन्हें अपनी जर्जर माली हालत से जूझना पड़ा।

माहौर जी का मास्टर रुद्रनारायण के परिवार में बहुत पहले से आना-जाना था। मास्टर साहब की पुत्री का नाम सावित्री था, जो महौर जी के परिवार में आती-जाती थी, उनके यहाँ घण्टों बैठती थी, दोनो के बीच संवाद भी होता था। एक बार माहौर पर हृदयाघात हुआ, उस समय सावित्री ने उनकी पूरी निष्ठा के साथ देख भाल की। उसके बाद १९५२ के आम चुनाव में भी सावित्री ने माहौर की जीत के लिए प्रभावी प्रयत्न किये।[१]

उन्हीं दिनों अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की माँ जगरानी देवी भी माहौर के साथ रहने लगीं। सावित्री आजाद की माँ के पास बहुत बैठती थी, माता जी भी सावित्री से प्रभावित थीं। आजाद की माँ माहौर के घर का केवल पक्का भोजन ही करती थीं, रोटी आदि वह स्वयं बनाती थीं। इस पर माहौर माता जी से कहा करते थे कि माता जी आपको खाना बनाने में कष्ट होता, है आपके लिए दूध में आटा मांड़कर रोटियाँ बना दी जायेंगी फिर तो कोई दोष नहीं रह जायेगा। इस पर आजाद की माँ कहती थीं कि बेटा! तु मन छोटा न कर, मैं सारे दिन बेकार बैठी रहती हूँ, करूँगी क्या? तू विवाह कर, तेरी बहू के हाथ की रोटी खा लूँगी। आजाद की माँ को यह आभास हो गया था कि माहौर का किससे विवाह होगा? आजाद की माँ माहौर की भावी वधू (सावित्री) के बारे में जान गयी थीं कि उनका सावित्री के साथ ही विवाह होगा।

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७२।

आजाद की माँ के सामने तो माहौर का विवाह नहीं हो पाया क्योंकि मास्टर रुदनारायण उस विवाह के खिलाफ थे, वे अन्त तक विवाह विरोधी बने रहे। सावित्री के विद्रोहात्मक हठ के कारण माहौर के साथ उनका अन्तर्जातीय विवाह हो गया। सावित्री कायस्थ परिवार की थी, माहौर- वैश्य।[१]

१९५२ में माहौर का सावित्री के साथ विवाह हुआ था। उस वैवाहिक अवसर पर भी रुद्रनारायण ने कहा था कि मैं इस विवाह के विल्कुल विरुद्ध हूँ, किन्तु लड़की नहीं मानती इसलिए विवाह कर रहा हूँ। विवाह तो हो गया किन्तु वे दो दिन भी अमन चैन से न रह पाये। दो वर्ष बाद सावित्री माहौर से अलग हो गयीं, वह अलग रहने लगीं, माहौर के मित्रों ने दोनो को मिलाने का प्रयास भी किया किन्तु उन्हीं दिनों सहसा यह सुना गया कि सातित्री नहीं रहीं। सावित्री की मृत्यु पर माहौर जी को आघात लगा, जन चर्चाओं ने भी उन्हें परेशान किया, उनके अभिन्न साथी मलकापुरकर उन्हें ढांढस बंधाते हुए कहा कि भगवानदास इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है, तुम बेदाग हो, इस पर माहौर जी ने कहा- सदू, तुम नहीं जानते, एक क्रांतिकारी पत्नी की मृत्यु पर इस स्थिति में लोग पता नहीं क्या - क्या कहेंगे?

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७२, ७३।

२. वही, पृ०सं०- ७३।

यमुना ताम्बे और भगवानदास माहौर

यमुना ताम्बे का घर माहौर के घर के पास ही था, इसलिए वे १९५३-५४ में ही माहौर के परिवार के सम्पर्क में आ गयी थी। माहौर जी अपने विवाह के बाद जब मोहल्ले में रहने के लिए गये थे तो उस समय यमुना ताम्बे ने बी०ए० कर लिया था, एम०ए० की तैयारी कर रही थी। यमुना ताम्बे ने १९५६ में एल०टी० भी कर लिया था।

उस समय यमुना या यमूताई माहौर जी के यहाँ आने-जाने लगीं थी, उन्होंने माहौर की बेतरतीब दिनचर्या को सुधारने का प्रयास करना शुरू कर दिया था। वह माहौर के यहाँ आने जाने वालों की आवभगत में उनका हाथ बटाने लगी थीं।[१]

माहौर के यहाँ आने वाले अतिथिगण जब यमूताई की प्रशंसा करते तो उससे यमुना का उत्साह बढ़ जाता था। वे लोग जब माहौर के अस्त-व्यस्त जीवन की चर्चा करते थे तो यमुना को अच्छा लगता था। माहौर जी कहा करते थे कि- "मेरे वर्तन से परिवर्तित कुछ परम्परा ही होगी।"[२] माहौर जी की यह पंक्ति कितना प्रभाव छोंड पायी यह तो ज्ञात नहीं है, किन्तु यमूताई के वर्तन से माहौर का जीवन अवश्य प्रभावित हुआ। सावित्री की मृत्यु के कुछ समय बाद उनका प्रणय मुखर होकर इस रूप में

आया-

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७३, ७४।

२. वही, पृ०सं०- ७४, ७५।

बसन्त आ गया सजनि, बसन्त आ गया।

आज दिग् दिगन्त में सौरभ समा गया।

सजनि बसन्त आ गया।

माहौर जी के जीवन में सुख का पुनः संचार होने लगा। उन्होंने लोकोपवादों तथा उपालम्भों की कोई चिन्ता नहीं रही। वे कह उठे-

बड़ा ही सुन्दर है संसार,

इसे असुन्दर कर न सकेंगे उपालभ्य दो चार

बड़ा ही सुन्दर है संसार।

माहौर जी उसी भाव में कह गये-

मूर्तियाँ तो टूटती हैं भक्त का पर मन न भरता।

भक्तहित भगवान भी तो है अनेकों रूप धरता।

टूट जाये मूर्ति इक दूसरी में प्राण भरता।

इसी लिए मिल जाये तो कर प्यार, मत आँखे चुरा ले,

तू उसी का है तुझे जो प्यार से अपना बना ले।

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७५।

२. वही, पृ०सं०- ७५, ७६।

भगवानदास माहौर को ज्योतिष का भी अच्छा ज्ञान था। यमुताई के सम्बन्ध में ज्योतिषियों का कहना था कि उसके भाग्य में पति सुख नहीं है, वैधव्य के डर से यमूताई महौर जी से विवाह करने में डरती थी, उनका मानना था कि मेरे दुर्भाग्यकी छाया माहौर जी पर क्यों पड़े? यमूताई ने एक बार अपनी जन्मकुण्डली माहौर जी को दिखा दी। उन्होंने अन्य ज्योतिषियों द्वारा यमूताई को बताये गये फलादेशों को गलत कहा, माहौर ने साथ ही यह भी कहा कि यह तो ठीक है कि तुम्हें अभी तक पति का सुख मिला ही नहीं, रही मेरी बात तो मैं आजादी के लिए शहीद तो नहीं हो पाया किन्तु तुम्हें सुखी और सौभाग्यवती बनाने के प्रयत्न में मुझे शहीद होना बुरा नहीं लगेगा।[१]

माहौर के विषय में यमुताई ने एक और रुचिपूर्ण घटना सुनायी। माहौर ने यमूताई से कहा था कि संयोग से यदि मुझे कुछ हो जाय तो तुम पुनर्विवाह कर लेना। तुम जिस क्रांतिकारी को पसंद करो, मैं आज ही उसके नाम पत्र लिखकर तुम्हें दे देता हूँ। दोनो की कुण्डली एक ही राशि की थी, इसीलिए यमूताई को भयमुक्त करने के लिए माहौर ने उनसे यह सब कहा था।

माहौर १९५७ में बी०के०डी० में हिन्दी के प्रवक्ता हो गये थे, उन्होंने एक दिन विनोद में यमूताई से कहा कि यमूताई अब मैंने वि०वि० में पी-एच०डी० के लिए शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर दिया है, मैं अब डॉक्टर हो जाऊँगा, अब तो तुम मुझसे शादी कर सकती हो। इस तरह कुछ दिनों में

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७७।

विवाह की बात तय हो गयी, सिविल मैरिज करने के लिए न्यायालय में प्रार्थना पत्र दे दिया गया। माहौर ने यमू से कहा कि इस अवसर पर मुझे क्या करना होगा? माहौर के पास क्रांतिकारी पहचान के अतिरिक्त और था ही क्या? मराठी समाज की परम्परानुसार वर पक्ष की ओर से वधू को एक मंगल सूत्र तो देना आवश्यक था ही, यमू ने बड़े संकोच में माहौर से कहा कि आपको सोने के एक मंगल सूत्र का प्रबन्ध करना ही पड़ेगा, उन्होंने पूछा कि कितना भारी हो, इस पर यमूताई ने कहा कि हमारे घर में तो तीन-तीन तोले के मंगल सूत्र हैं, आप जितना भारी चाहें, बनवा दें।[१]

माहौर ने उसी समय अपने एक सर्राफ मित्र को तीन तोले का मंगल सूत्र बनाने के लिए रुपये दे दिये। १९६५ में दशहरे के दिन प्रातः आठ बजे माहौर तथा यमूताई की सिविल मैरिज हो गयी।

शादी के समय यमूताई के पास बैंक जमा के अतिरिक्त कुछ नकदी, आभूषण, चांदी के बर्तन तथा कुछ छोटा-मोटा सामान भी था। यमूताई की मां ने भी उन्हें दो हजार रुपये दिये, उस समय माहौर के पास भी दो हजार रुपये थे।

शादी के बाद जब यमूताई नागपुर गई तो उनके रिश्तेदारों ने भी उन्हें भेंट में रुपये दिये, जिनसे यमू ने स्टील के बर्तन खरीद लिए। माहौर ने जब उन बर्तनों को पहली बार देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ।

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ७७।

२. वही, पृ०सं०- ७८।

रचना धर्मिता और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर का छात्र जीवन में ही शस्त्र और शास्त्र की ओर झुकाव हो चुका था, उनके बाल जीवन में ही गायकी का प्रवेश हो चुका था। १९२४ से जीवन के सांध्यकाल तक वे जब से राष्ट्रधर्मिता के क्षेत्र में उतरे फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

भगवानदास माहौर का कृति कर्म बहुत विशद एवं महत्वपूर्ण है। माहौर का जेल-प्रवास साहित्यिक विकास के लिए वरदान सिद्ध हुआ। वे जेल में ही काव्य साधना के क्षेत्र में रत रहने लगे थे।[१]

आजादी के पूर्व की काव्य-साधना

माहौर जी जीवन के ऊषा काल से ही कलम की नोक पर सम सामयिक विचार उतारने लगे थे। यहाँ पर आजादी के पूर्व की कुछ रचानायें दृष्टव्य हैं-

बता तो दे तू है क्या क्रांति?

विश्व जीवन का अविचल धर्म?
प्रगति का ध्येय, नियति का मर्म?[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ६५, ।

२. वही, पृ०सं०- २।

भूत का ही प्रत्यावर्तन?
कि तू अभिनव भविष्य सर्जन?
नियति का निरा मनोरंजन?
लोक का या तू भय भंजन?
काल-भैरव मृदंग पर धम्
प्रगति के नृत्य ताल की सम्?

दूर कर देवि! हमारी भ्रान्ति
बता तो दे तू है क्या क्रांति?

युगों-युग संचित पीड़ा के
वंचना के, प्रतारणा के,
दाह के एकीकृत बल से
तोड़ कर बांध रुढ़ि छल के

बहाता उत्पीड़न के ग्राम
प्रतिष्ठित स्वार्थ शक्ति के धाम
नचाता तुंग तरंग अथाह
वही तू जीवन सरित् प्रवाह।

स्वयं फिर बन जाती जो शान्ति
बता तो दे तू है क्या क्रांति?

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २।

हृदय का स्पन्दन जग वपु में
विज्ञ कहते हैं सदा तुम्हें
शुद्ध कर दूषित रक्त प्रसार
कर रही नव शोणित संचार

सत्य का कर अभिनव प्रसार
नये शिव का फैला विस्तार
नयी सुन्दरता का श्रृंगार
सजाती तू नूतन संसार

हटाती ऊब, मिटाती क्लांति
बता तो दे तू है क्या क्रांति,

प्रतिष्ठित कर पहले इक योग
खड़ा करती उसमें प्रतियोग
इन्हीं का कर संघर्षायोग
स्वयं फिर बन जाती संयोग

पतन उत्थान पद-द्वय में
कलह घुंघरू कस द्रुतलय में
नृत्य करती अदृश्य की ओर
चली तू किस भविष्य की ओर!

बनी भीषण आकर्षण कांति
बता तो दे तू है क्या क्रांति।[१]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३।

देख ओ देवि! श्रमिक है हम
चलाते जग के सब उद्यम
हमी हैं, तो भी बड़ी शरम
कि जीते ककूर शूकर सम

हमारी मेहनत के चौपास
खडे कर जोड़े भोग-विलास
नीति क्या व्यंग, न्याय परिहास
कि है जग उनको कारावास
शक्ति हमको यह अधिगत है
कि प्रकृति स्वयंपादनत है
नियति का यह कैसा परिहास
शक्ति निज के कि बने है दास

अकथ है करुण, हमारी दांति
बता तो दे है तू क्या क्रांति?

स्वयं अपनी उत्पीड़ा के
भवन रचते हम क्रीड़ा के
पोषते रक्त शोषकों को-
बिताया हमने शतकों को।

हुए अब हम नितान्त ही श्रान्त
तड़पते फिरते हैं उद्भ्रान्त

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३, ४।

तुम्हें करते हैं अब अव्हान
हमें इस जीवन से दो त्राण
प्रवंचित क्षुधित हमारी श्रान्ति
लीन करके निज वपु में कान्ति!

(सावरमती सेन्ट्रल जेल, १९३४)

बहुत सुन चुके

बहुत सुन चुके कविते! हम चमक दमक की बातें
वे ही प्रिय वे ही प्रियतम वे ही विछोह की रातें।

श्रृंगार वही सुखियों का बनती है वही स्वकीया,
वह ही धन-लोलुप गणिका, वह ही चंचल परकीया।

वैभव विलास यह तेरा ऊबे हम सुनते-सुनते
ये सुखी विरह के गाने अब नहीं हृदय को रुचते

सर ताल मिला गति दिखला यह साज सजा सब नट का
जा जिन के पास टके हों, उनसे नयनों को मटका

हम दीन श्रमिक कृषकों को तू लटका क्या दिखलाती?
हम भूख-ज्वाल से जलते, तू विरहानल बतलाती

हम नंग धड़ंग ठिठुरते, हैं पड़े चुचाते छपरे
तू बिजली, मेघ दिखा कर क्या हमें सुझाती नखरे?[१]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ३, ४।

यह सब है हमें सुनाना, तो देवि! यहां से चल दे
हमको अब वह सुनना है जो हमें क्रांति का बल दे[१]

(सन् १९३८)

आजादी का जंग

आजादी का जंग छिड़ा है, आजादी का जंग,
गरज रहा है विप्लव सागर, नचती क्रांति तरंग।

सजी हमारी स्वतन्त्र सैना, पीछे इसका पैर पड़े ना,
ऊँचा रहे कदापि झुके ना, विजयी केतु तिरंग।

पास हमारे क्या खोने को, सारा विश्व जीत लेने को
बढ़े चलो है क्या डरने को, भूखे नंग धड़ंग।

सब मजदूर किसान सिपाही, देख कांपती नौकरशाही,
पूंजीवादी, शाहंशाही, देख सैन्य रण ढंग।

आओ वीरो बढ़ते आओ, पराधीनता मार भगाओ
स्वतन्त्र हो जग सुख पाओ, रंगो विजय के रंग[१]

(जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय, २६ जनवरी १९३९)

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १०।

हे लक्ष्मि देवि आओ

देवि आओ,

हे लक्ष्मि देवि आओ,

सार्थक करो आज 'लोकमाता' निज नाम

देवि आओ,

युग-युग की उत्पीड़न ज्वाला से,

है कोटि कोटि प्रज्वलित हृदय प्रदीप

करने को आलोकित तब महामार्ग

आओ देवि आओ।

चिर अविरत श्रम सागर मन्थनोद्भवे

क्यों नि:श्रम उत्पीडक अति क्षुद्र इन

वंचक गण के लौह कार वेश्म में

हो अब तक अवरुद्ध

देवि आओ।

है आज तेरी पूजा का महा पर्व

जन द्वेष पूर्ण वंचक तव मार्ग में

बैठे हैं पूजा का ये किये ढोंग

भर-भर मृद् दीपों में फूँक रहे

है निष्पीड़ित हमारे ही हृदय से

स्नेह मानवता............

देवि आओ।

(फतेहगढ़ सेन्ट्रल जेल दीपावली सन् १९४३)

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- ११।

है अमर सुयश

है अमर सुयश।
जय जय कवि तुलसीदास. संत
वाणी तव रस सुरसरि अनन्त
दौर्वल्य-क्लैव्य-अघगण-दुरन्त-हर निरलस।
भारत-जन-गण-मन चिरोद्‌गार
तब 'राम चरित मानस' उदार
करता जिसमें मज्जन विहार जन-मानस।

है जन शिक्षक!
संयत श्रृगार के अभिभावक
नैघृण्य-हीन विक्रम पोषक
जाग्रत करुणा के निर्देशक परिरक्षक!
तुम स्नेह-रश्मि रस-नभालोक
जो दास्य-तमावृत-हृदय-लोक
भास्वर करते रहते विलोक यो अपलक

हे रस निर्झर!
झर-झर अजस्त्र रस रहस धार
परिमज्जित करते दुर्निवार
रस-दैन्य-भाव जड़ता-प्रसार, जो उर पर।
सुखी उमंग में रस तरंग[१]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- २१।

माला मण्डित तव कवन गंग
पावन प्रवाह है दुरित-भंग-जन-शंकर।

है सुषमा घन।
बरसाते हो तुम देव! प्राण
अन्याय दाह परितृप्त म्लान
पा रही भाव कृषि परित्राण संजीवन।
पी तब प्रदत्त पीयूष-धार
जन-चित्त तृषित चातक विसार
निजदैन्य चहकता दुर्निवार मुक्ति प्रण।

ओ रस जीवन।
यदि तब कवन-स्पन्दन-विहीन
भाव - स्मशान, वह हृदय हीन
वह सदा दीन, वह चिर मलीन वह दुर्भन
क्या श्रुति जिसने तब सुधा पी न!
रसना क्या यदि तब रस न लीन!
तव गान-हीन वह कण्ठ दीन, निर्जीवन।[१]

(फतेहगढ़ सेन्ट्रल जेल, १९४४)

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, उल्लिखित, पृ०सं०- २२।

अहो यामिनी!

अहो यामिनी...
कारागार घोर दिवस कठोर श्रम परिहारिणी।
पहन गगन नील वसन
अपहृत कर अवगुण्ठन
आज पूर्ण चन्द्र वदन दर्शनदायिनी।

कौन यों शिर पर
आज व्यथित सकरुण अति धरत सुधाकर
निम्ब विटप पल्लव डाल
कारा कक्ष के अति कराल
कपाट लौह दण्ड जाल भेद के यत्न कर।

शीतल सुरभि मन्द
चलत पवन करत वहन निम्ब सुमन गंध
कठोर कारा कष्ट-क्लान्त
शरीर सकल श्रम-श्रान्त
करे प्रशान्त, भरे नितान्त, हृदयेआनन्द।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, उल्लिखित, पृ०सं०- २८।

हृदये आनन्द
करे आघात प्रत्याघात उपजे आक्रन्द
अश्रुधौत मातृ वदन
बंधु विरह वाह्निन जलन
करे अमित व्याकुल मन नाना स्मृति वृन्द।

अयि शशि-वदने
निद्रोत्संगे ले ले व्यथा-प्रशमने
गाके प्रिय जन स्मृति गान
पवन कर से ताल मान
गात्रे देकर वे भान, कर दे शयने।[१]

(सावरमती सेन्ट्रल जेल, १९३१)

प्रेम प्रभा का पुजारी हूं मैं

दिल में उठती कुछ वेदनाओं की है छाप उठाती किसी की जोभा है।
अभिव्यक्ति कला कुशला की नहीं है, प्रवृति कि जो प्रणयी सुलभा है।
यह कल्पना का दरबार, नहीं अभिभावित भावनाओं की सभा है।
कवि की प्रतिभा का प्रकाश नहीं, यह प्रेम प्रदीप की पुण्य प्रभा है।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- २९।

२. वही, पृ०सं०- ३०।

हूँ उच्छृखल या कि मर्यादा में हूँ,
सदाचारी हूँ या दुराचारी हूँ मैं।
हूँ मैं भावनाओं का महीप निरा,
अथवा विषयों का भिखारी हूँ मैं।
इतने भर का ही है दावा मेरा
इतने भर का इकरारी हूँ मैं।
प्रणयी मन मंदिर में जो बसी,
उसी प्रेम प्रभा का पुजारी हूँ मैं।

अति आतुर प्रीति में हूँ जिसकी
औ प्रतीति से ही धृतिधारी हूँ मैं।
इन वेदनाओं में सदा जिसकी,
समवेदना से सुखचारी हूँ मैं,
मिल जाय प्रसाद मुझे इसका,
नृप हूँ, न मिले तो भिखारी हूँ मैं।
प्रणयी मन्दिर में जो बसी,
उसी प्रेम का पुजारी हूँ मैं।[१]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-३०।

इसे आशा कहो या निराशा कहो
अभिलाषा या भाषा यही मन की
मेरा गान यही अरमान यही,
पर याचना की कभी बात न की,
यह साधना है, औ आराधना है
और उपासना है प्रणयी जन की
कविता कहलो या कथा कहलो
पर यहै तो व्यथा यह जीवन की।।

(झांसी डिस्ट्रक्ट जेल, सन् १९४०)

मेरे मुँह से हाँ निकल गई

इक बात मेरे दिल की बेजुबां निकल गई
उफ चश्म से इक बूंद परीशां निकल गई।।
पी तो रहा हूं, दिल से पर मिटता न क्यों मलाल
मस्ती क्या मै से मुर्शिदे मुगां निकल गई?
होश्यार कि आता होगा कातिल लिए शमशीर
देखा ये बूए खून शहीदां निकल गई।।
जो रुतबए भीरी पै था दिल में रहा बाकी
कातिल से मिलके महफिले अरमां निकल गई
बोला वो क्या दिल में है, तमन्नाए शहादत
बे अख्तियार, मेरे मुँह से 'हाँ' निकल गई।

(साबरमती जेल, सन् १९३२)

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ३०।

२. वही, पृ०सं०- ४२।

बैठे हैं मेरे दामन में खार

क्या असीराने कफस का पूछते हो हाल जार
चश्म तर, शोरीदा सर, टुकड़े जिगर, सोना फिगार।।
दिल जहां था, हसरतों का आज कबरिस्ता है वां
खाक उड़ती है जहां रहती थी उम्मीदें हजार।।
जिन्दगी क्या है अरे! यह मौत का है इन्तजार
सो भी यूं कि मौत को भी हम पै आना नगवार
भटक कर नादां तबीयत ने कहां पाया है चैन
कर लिया आखिर फरामोशी का गाशा अख्तियार
आहो नालों से कहो, रुखसत हों, अब बेकार है
इस दिले नाशाद के सदमों का करना आशकार
किससे क्या शिकवा है मुशफिक किससे क्या कहना है अब
गुल के जोया थे, सो बैठे हैं भरे दामन में खार।।[१]

(साबरमती सेन्ट्रल जेल, सन् १९३३)

और हाल ही क्या होता

तब दर्द का दरिया इक पुरसोजिशे कामिल था
अब दाग सा बाकी है, सीने में जहां दिल था।।

दिल था, तो न क्यों आता, फितरत का तकाजा था
इक शमा थी रौशन और परवाना मुकाबिल था

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-४३, ४४।

मुझ बेस रोसामां का और हाल ही क्या होता?
उश्शाक में शामिल था, रिन्दों में भी दाखिल था।

अगयार थे, औ तुम थे, मैं था, कि खामोशी थी
शिकवे में क्या रखा था, क्या हसद से हासिल था?

मझधार में डूबा जो इक मैं ही नहीं नासेह,
इस इश्क के दरिया का किसको मिला साहिल था।[१]

(फतेहगढ़ सेन्ट्रल जेल, सन् १९४४)

आजाद हैं हम

आजाद हैं हम, आजाद हैं हम आजाद तराना गाते हैं,
आजाद तिरंगा ह़म अपना कौमी झंडा फहराते हैं।
सबसे पहले तो याद हमें आती झांसी की रानी है,
फिर सभी कूचये आजादी की खाक जिन्होंने छानी है
औ' खूने शहादत में डूबी जिनकी पुर फख्र कहानी है।
जिनकी कुर्बानी से ही यह अपनी ऊंची पेशानी है
सबसे पहले उनके कदमों में सर हम आज झुकाते हैं
आजाद तिरंगा हम अपना कौमी झण्डा फहराते हैं।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ४४।

२. वही, पृ०सं०- ४५।

है खूने शहादत से अपने परचम को जिन्होंने लाल किया
ओ हुब्बे वतन में कौम परस्ती में, हरचन्द कमाल किया
अपनी बेदारी से हर दम बेकार उदू का जाल किया
अपने एके व बगावत से दुश्मन का बुरा ही हाल किया
मजदूर, किसान, सिपह, तुलवा, सब की हम याद जगाते हैं
आजाद तिरंगा हम अपना कौमी झंडा फहराते हैं।[१]

साम्राज्यवाद ने आजादी जो की तसलीम हमारी है
बेशक यह जीत हमारी है, दुश्मन की यह लाचारी है
यह कौमी आजादी अपनी, हम को जी जान से प्यारी है
महफूज इसे करना हम सबकी, पहली जिम्मेदारी है
सुनले दुनियाँ, आजाद हैं हम, यह नारा आज लगाते हैं
आजाद तिरंगा हम अपना कौमी झंडा फहराते हैं।

आजाद हैं हम गाओ गंगा, आजाद हैं हम नाचो सागर
आजाद हैं हम गरजो गिरिवर, आजाद हैं हम, गूंजो अम्बर
आजाद हैं हम आजाद हैं हम, यह गूंज दे दुनिया भर को भर
साम्राज्यवाद के ढ़ांचे को सब मिलकर करदे चरर मरर
सब मुल्कों को सब कौमों को हम यह पैगाम सुनाते हैं
आजाद तिरंगा हम अपना कौमी झंडा फहराते हैं।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ४५।

२. वही, पृ०सं०- ४६।

हम खूब समझते हैं अपनी मंजिल है काफी दूर अभी,
साम्राज्यवाद की शरारतें हो रही यहाँ भरपूर अभी
होशियार फतह नशए से हम हो न जायें मखमूर अभी
साम्राजी लूट खमोट के हैं बहते अनगिनत नासूर अभी
मजदूर किसानों के ही जो एके से वश में आते हैं।
आजाद तिरंगा हम अपना कौमी झंडा फहराते हैं।।

है हरा-भरा जर-खेज वतन, फिर कोई यहाँ भूखा क्यों हो?
बतलाओ कमी किस बात की है फिर कोई यहां नंगा क्यों हो?
टैगोर ओर इकवाल के घर, कोई बे-पढ़ा-लिखा क्यों हो?
मेहनत करने वाला कोई बेकार व आवारा क्यों हो?
सबको माकूल मआश मिले इस ओर बढ़े हम जाते हैं
आजाद तिरंगा हम अपना कौमी झंडा फहराते हैं।।[१]

(१५ अगस्त, १९४७)

आजादी के बाद की काव्य-साधना

भगवानदास माहौर सतत् काव्य-साधक रहे, स्वातन्त्र्योत्तर काल में भी उनकी लेखनी रुकी नहीं, उन्होंने विविध विधाओं में लिखा। स्वातन्त्र्योत्तर काल की उनकी रचनाओं में उनके परिपक्व विचारों का कोई सानी नहीं था-

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-४६।

आज कहो कवि क्या गाओगे?

आज कहो कवि क्या गाओगे?
अग्नि-स्वरों में विप्लव दुर्गा राग आज भी गा पाओगे?
या कि क्रांति-वीणा के पर्दे इधर उधर ही खिसकाओगे?
देख रहे हो लाल किला है,
और तिरंगा फहर रहा है।
उसका साया सत्य अहिंसा-
की समाधि पर पसर रहा है।
'भाव-रुद्ध है कण्ठ' आज, यह कह कर क्या चुप हो जाओगे?
और भावनाओं का शोणित पी न सको पर पी जाओगे?
आज कहो कवि क्या गाओगे?

भूखी नंग धड़ंग ठिठुरती
जनता दिखती यथा- पूर्व ही,
बोलो इसको सुना सकोगे
अब भी विप्लव-राग क्या वही?
या स्वातन्त्र्य केतु की छाया से ही, इसको गरमाओगे?
दूर-दूर हटती आशा के मोदक से ही भरमाओगे?
आज कवि क्या गाओगे?[१]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-०५।

आज शहीदों की समाधि पर

भूखे कण्ठ कहो क्या गाएं?

उनके सपने सत्य हुए हैं,

किस मुंह से उनसे कह आएं?

पुण्य भूत को धोखा देकर भावी को क्या वहकाओगे?

वर्तमान के कानों में या निज सच्चा स्वर पहुचाओगे?

आज कहो कवि क्या गाओगे?

' जिससे उथल पुथल मच जाये '

कहा गई वहे ऐसी तानें?

वे सब प्रलय कारिणी लहरें,

कहाँ सो गईं लम्बी ताने?

लपट चाटते जूठे पत्ते नर को, आज न अपनाओगे।

गला घोंटने जग-पति का भी अब क्या हाथ न फैलाओगे?

आज कहो कवि क्या गाओगे?

तन व जन कल्याणी, युग वाणी,

खींचातानी में न पड़े जो,

जन-साधारण हृदय हारिणी,

किन्तु न व्यभिचारिणी बने जो,

युग परिवर्तन के चौराहों से बढ़, प्रगति पंथ पाओगे।

क्या युग दृष्टा युग निर्माता युग कवि कर्म किये जाओगे।

आज कहो कवि क्या गाओगे?

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-०६।

वीणा वादिनि वर दे!

वीणा वादिनि वर दे! तुझसे आज नया मागें कैसा वर?
तेरी नव सज्जा क्या होगी, समझ सकें बस, कुछ ऐसा कर

तेरी वीणा पर बतलादे आज कौन नव राग बजेगा?
उसकी लय क्या होगी, उस पर कैसा अभिनव ताल लगेगा?
वीणा के पर्दे खिसकाकर तूने यह क्या ठाठ लिया-कर,
वीणा वादिनि वरदे! तुझसे आज नया मांगे कैसा वर।

जन-जीवन की आज विषमता, ही तेरी क्या नवगति होगी?
अप्रत्याशित दचकों में ही क्या इस नव गति की रति होगी?
स्वर, लय की उलझन में मन की कुण्ठाएं ही होंगी विस्वर?
वीणा-वादिनि, वर दे! तुझसे आज नया मांगे कैसा वर।

वादी को संवादी कोई मिल न सके, बस बढ़ें विवादी
राग विराग बने, कुछ ऐसी रागरूप की हो बरबादी
रस के लिए तरसता मानस घट, नीरसता से जाता भर
वीणा-वादिनि वरदे! तुझसे आज नया माँगे कैसा वर।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-०७।

सरस मधुर सार्थक, वीणा पर और न क्या आलाप बजेगा
नीरस कर्कश और अनर्थक उसकी जगह प्रलाप जगेगा
नहीं सुरों के, अब असुरों के वास बनेंगे क्या तेरे स्वर
वीणा-वादिनि वरदे! तुझसे आज नया माँगे कैसा वर।

नव जीवन के नव स्पन्दनों में अब नव लय का विधान कर
बिखरे अन मिल स्वर समूह में ऐसा अभिनव राग रूप भर
अभिनव सत्य, नया शिव, नूतन सुन्दर जिसमें हो उठे मुखर
वीणा-वादिनि वरदे! तुझसे आज नया माँगे कैसा वर।

जीर्ण शीर्ण बंधन, कुण्ठाओं का कूड़ा जिससे जलजावे
ऐसा रस बरसादे जिसमें जन मन भाव शस्य बल पावे।
भारति देवि क्रान्ति दुर्गा के झंकृत कर दे आज अग्निस्वर
वीणा-वादिनि वरदे! तुझसे आज नया माँगे कैसा वर।[१]

(सन् १९४८)

शान्ति गीत

बम्-बम्, बम-बम गण जपा किये
रण - मद - भर रुद्र भयंकर के।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ०८।

२. वही, पृ०सं०- १२।

शान्ति स्मिति छा ही गयी किन्तु
ओठों पर शिव जन शंकर के।

सत्य पसक्त शिव भक्त उठो
सुन्दरानुरक्त उठो आओ।
अब विश्व रूप हित, विश्व शान्ति
पूजा सम्भार सजा लाओ।

टल जाय न यह मंगल बेला
गाओ सब शांति-पाठ गाओ।
युग परिवर्तक प्रलयंकर को
पूजो सब विश्वंभर कर के।।

देखो शांति स्मित छटा लसी
ओठों पर शिव जन शंकर के।[१]

अणु बम, उद्जन बम धरे रहें
बम वर्षक उड़ न सकें ऊपर।
तोपें ओपें ओकें न आग
शोणित की कीच न हो भूपर।।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- १२।

२. वही, पृ०सं०- १३।

छोड़ो अब शान्ति कपोतों को
निर्भय होकर नभ लें छू पर।
जो शांति शिवा के लास्य भरें
नूपुर बाजें छम् छम् करके।।

तो, मधु स्मिति छा न जाय कैसे
ओठों पर शिव जन-शंकर के?

है आज क्रांति का रूप शांति
अब बाहन सिंह, हंस वर है।
आज शक्ति तो भर त्रिशूल का
वीणा दण्ड रूप कर है।

है आज न कुटिल भ्रकुटि विभ्रम
है सौम्य दृष्टि, स्निग्धान्तर है
है आज प्रगति पथ पर जन डमरू-
डिमक उठी डं डं कर के

तो क्रांति-शांति का गीत उठा
ओठों पर शिव शंकर के।।

(सन् १९५०)

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-१३।

मुझे जिन्दगी से सदा प्यार रहा

मुझे जिन्दगी से सदा प्यार रहा
सदा मौत से मैं टकराता रहा।
जब मौत ही जिन्दगी जान पड़ी
दिल से उसे ही दुलराता रहा।।
अपनों की व्यथा अपनाने में ही
सुख पाता रहा और गाता रहा।
कुछ कारा कठोर की कोठरी में-
न बना, तो कवित्त बनाता रहा।।

करते जो बना सो समोद किया
सदा 'ज्ञान' से सीख य' पाता रहा।
कि विराग तो रूठा हुआ अनुराग-
ही है, तो उसे ही मनाता रहा।
जन-जीवन में जो अभाव मिले
उन्हें भावों गोद खिलाता रहा।
दिल से उठती हुई आहों को वाह-
बना के ही ओठों पे लाता रहा।।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-१४।

मुढे जीवन में ऐसे साथी मिले

जिनसे बल-संबल पाता रहा।

मैं भी क्रान्ति-समुद्र कूद गया

तब देश में जो लहराता रहा।

गहराई में साथी गये सुख से,

उथले में थपेड़े मैं खाता रहा।

गुरू थे, सो वे डूब के पार हुए,

हल्का पड़ा मैं उतराता रहा।।

फिर ऐसी बयार चली जिससे,

बहता इस ओर ही आता रहा।

वे जो साथी गये, तो वे बातें गईं

फिर तो वो जमाना ही जाता रहा।

उन गेय हुए कृती साथियों को,

मुझे गीत सुनाना ही भाता रहा।

पर पार से वे सुने या न सुनें,

इस पार पड़ा मैं सुनाता रहा।।[१]

(सन् १९५१)

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-१४।

नई किरणें

आई हूँ आने वाली कल की आभा से
मैं लाल लाल अंगारों पर चलती आई
लक्ष्मी वाहन अब, बनो नहीं, आंखें खोलो
देखो तो अपनी झोली में क्या भर लाई।।

यह अणुबम है, यह उद्जन बम, तो डर क्या है?
ये तो कल के बच्चों के खेल पटाके हैं।
जिनसे कल की दीवाली का उत्सव होगा,
वस्तुतः साज ये विश्व-शान्ति पूजा के हैं।।

हा डरो नहीं, पर सावधान रहना होगा,
अपने उत्पाती इन्हीं आज के बच्चों से,
जो क्षुद्र-दृष्टि युग-आभा से हैं चकाचकौंध,
हां इन्हीं स्वार्थ में चतुर हृदय के कच्चों से।।

आँखें खोलो! देखो आगे क्या दिखता है,
हां आगे-आगे पूर्वक्षितिज की ओर वहाँ।
चिन्तन अनुभूति कर्म के ये दो महामार्ग,
मिल गये जहाँ, हाँ वहीं हो चुका भोर जहाँ।।[१]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- १६, १७।

हां देखो जरा गौर से देखो, क्या दिखता है?
दो मार्ग दिखाने वाले और बनाने वाले वे।
जा रहे मिलाये कदम, मिलाये हृदय कौन,
क्या मार्क्स और गाँधी जन-हित मतवाले वे।।

इनकी आंखों का सूर्य, हृदय का चन्द्र प्रभा,
बिखराता जिससे नव-युग-पथ प्रकाश पाता।
जो निकल युद्ध तानाशाही के दल-दल से,
जनतंत्र शान्तिमय प्रगति भूमि पाता जाता।।

देखो कवि देखो कल की नव सुन्दरता को,
वैज्ञानिक, कल का नव-प्रकृति-विजयाभिमान।
औ धर्मज्ञो, देखो कल का नव शिव-स्वरूप,
पर बन्धु! आज के कर्तव्यों का रहे ध्यान।।

मुझमें बचपन के मुक्त हास की चमक भरी,
यौवन की प्रणय विलास भरी लाली भी है।
प्रौढ़ता-प्रवर्तित बुद्धि तर्क, क्या प्रखर तेज,
कल्याण-कामना विशद जरा-पाली भी है।।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-१७।

जन-जीवन की स्वातन्त्र्य संख्य और साम्य सुधा,
पीकर आने वाले कल से मैं आयी हूँ।
मैं बढ़ती लेकिन अजर, बदलती अमर मगर,
सन्देश सर्वतोन्मुखी प्रगति का लायी हूँ ।।

मेरे पथ की बाधायें, मेरा प्रखर ताप,
पा पिघल, पंथ मेरा पखारती जाती है।
मैं छूती आंसू, खून पसीने की बूंदें,
तो युग आशायें रत्न वारती जाती हैं।।

तो व्यर्थ दुराग्रह आंख बंद कर रखने का,
कोई विरोध, प्रतिरोध मुझे सकता न रोक।
आंखे खोलो देखो क्या हूँ, क्या करती हूँ,
मैं नई किरण, कर नवालोक, दूं नया लोग।।

(१९५७)

महारानी लक्ष्मी बाई

लक्ष्मी महारानी, तेरी कीर्ति जो बखानी जाय,
अब तो कृतज्ञता है वीरता क्या मानी जाय।
तेरे चरणों में नत सिर कटते थे जहां,
अब तो बचा नहीं वह दासता का अन्तराय।[१]

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-१८, २५।

तेरे रक्त का प्रसाद सबको समान मिले,
आज तो करा दे देवि, हमसे यही उपाय।
तेरा बलिदान हमें देता रहे बल-दान,
तेरी राह चलता ही, तेरा अभिमानी जाय।

(लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस- १९५१)

कह दो 'अग्नि स्वरों' में बोलें

भारत की दुर्गा पुकारती खड़ी रण स्थल में असि खोले
आज भारत की वींणा से कह दो, अग्नि स्वरों में बोले।

भारत पर जो आज शत्रु ने किया वार विश्वास-विघाती,
उससे अरे, फटी जाती है विश्व-मित्रता की ही छाती।
विश्व, प्रगति पर ही पड़ते थे, गिरते जो नेफा में गोले,
आज भारती की वींणा से कह दो, अग्नि स्वरों में बोले।

मित्र चीन अब कौन कहेगा नीच शत्रु वह पलट हो रहा,
भारत की उर्वर धरती में अमिट घृणा के बीज बो रहा।
नहीं बुद्ध भी पचा सकेंगे, ऐसे विषम जहर हैं घोले,
आज भारती की वींणा से कह दो, अग्नि स्वरों में बोले।[१]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- १९।

मुंह से राम कहे ही जाते, छुरी बगल की करती घातें,
चाऊ-माऊ का छल-बल देखो और सुनो नेहरू की बातें।
उनके क्षल से सत्य हमारा विश्व रहेगा क्या बिन बोले,
आज भारती की वींणा से कह दो अग्नि स्वरों में बोलें।

वीर-प्रसू भारत की भू पर शत्रु न कोई रह पायेगा,
जीता अगर बचा भी तो निज रक्त चाटता ही जायेगा।
पावन गंगा जल न मिलेगा, 'ह्वांगो' ही मे जा मुह धो ले,
आज भारती की वींणा से कह दो अग्नि स्वरों में बोलें।

विश्व नेह-रू, निज नेहरू पर ऐसा दृढ़ विश्वास हमें है,
शान्ति सुरक्षा औ' स्वतन्त्रता पूर्ण प्रगति की आस हमें है।
कोई शत्रु लाख सिर पटके लेकिन अपना चित्त न डोले,
आज भारती की वींणा से कह दो अग्नि स्वरों में बोलें।
(१९६२, चीन द्वारा भारत पर किये गये आक्रमण के समय)

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-१९, २०।

गा जो गा सकता हो गा

गा जो सकता हो गा, और जरा झूमके गा,

अपने रूठे हुए आरमानों का मुँह चूम के गा।

योमे जम्हूरी है, है जश्ने रंगों रक्सो तरब,

मुतरिवा मरहूवा गा, गीत इसी धूम के गा।

दर्द तो, सच है, जमाने में कम नहीं है दोस्त,

फिर भी तू आज गीत गा, औ खुशमफहूम के गा।

हम नहीं कहते हैं, दुनिया की हकीकत को न देख,

अपने वरगश्ता खयालों में भी कुछ घूम के गा।

सादगी गा, और सिदाकत गा, औ मुहब्बत गा,

हुस्ने हमदर्दी तबस्सुम किसी मासूम के गा।

जुल्मते जुल्म जहां में अभी भी गहरी है,

तो तू जलते हुए जजबात भी मजलू के गा।

हाँ, हाँ, क्या बात है, उन मुखं रू शहीदों की,

उनकी उन पाक उमीदों की छनन छूमके गा।

(सन् १९५८)

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-५३।

मचलते हैं जो सुर दिल में

मचलते हैं जो सुर दिल में गले में ला नहीं पाया,
जो गाना चाहता हूं, आज तक वह गा नहीं पाया।
कशिश से दिल की दिल को खींच लाया रूबरू लेकिन,
नकावे हया पर रुख से कभी उलटा नहीं पाया।
किसी दिल ने मेरी चाहत को चाहा हो, तो चाहा हो,
किसी की समझ को पर, मैं, कभी समझ नहीं पाया।
बुलावे बज्म इशरत के मुझे आये, कई आये,
मगर कुछ बात ही तो है कि मैं बस, जा नहीं पाया।
मजाजी इश्क के धोखों की लज्जत जानता हूँ शेख,
हकीकी इश्क का धोखा मगर मैं खा नहीं पाया।

(सन् १९६०)

फितरत से मजबूर

तारीकियां चर्ख की माना, नूरों से भरपूर हैं,
फिर भी चाँद, चाँद है, तारे बहुत जमीं से दूर हैं।
नहीं सुनी ही, समझ भी है, नफ्स सिर्र की ये बातें,
पर यूँ कहलो हम इंसानी फितरत से मजबूर हैं।
पड़े कँटीली खट-मिट्ठी अपनी बेरी की छाँह में,
शेख! तुम्हारे बहुत दूर ऊचे जन्नती खजूर हैं।[१]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०-५४, ५५।

सदके तेरे पीर! फ़ना फ़िल्ला का मरहम रहने दे,

हमें बहुत प्यारे अपने दिल के बहते नासूर हैं।

नकद बिगड़ने मनने वाली एक हमारी हमें बहुत,

सुनते आते हम मुद्दत से लाखों वादाए हूर हैं।

हमें हमारी चंद रोज हस्ती की मस्ती क्या कम है,

शेख है कि लाजवाल हस्ती के गम से माजूर हैं।[१]

(सन् १९६७)

नेहरू के प्रति

मौत के हाथों से लेकर दवामी जीस्त का जाम

जिस्म फानी को दिखा उससे कहा ले इसे थाम

मेरे बतन की है ले जाय मुश्ते खाके पाक

चाहता तो न था, पर खैर अब करे आराम।

ना ना आराम नहीं हमको है आराम हराम,

देना तू अहले वतन को मेरा यह ही पैगाम।

तो बस एक मुश्त बहा देना प्यारी गंगा में,

ताकि बहती ही रहे रातों दिन, ओ सुबहो-शाम।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ५५।

२. वही, पृ०सं०- ५६

और बाकी को उड़ा देना उन फजाओं में
जिनके नीचे किसान करते ही रहते हैं काम
ताकि उस पर समाजवाद का जो हल निकले
बारहा उससे उपजती रहे खुशहाली ए आम।

प्यारे बापू के लिए पूज्य थे जो राजाराम
ईश्वर, अल्ला अनेक कहते थे वे उसके नाम
मातकिद में भी हू तहजीव का, मजहब का नहीं
मेरे नजदीक भी सब एक हैं दुनिया के आवाम

(नेहरू जी के निधन पर)

कुछ चौकड़ियां

बस सरे दार तो सरदारों का सर देखा है,
साथ कुछ ऐसे भी 'आजाद' का कर देखा है।
छोंड़ दे हाथ मेरा दोस्त में भटकूंगा नहीं।
मैने आजादी के दीवानों का घर देखा है।

मैं उन तुन्द बलानोशों की सुहवत की है,
जिनकी शोहरत है जहां में, कि हां, गहरी पी है।
दोस्त! यह मय हो, फिर सुरूर न हो, क्या मानी।
जाने, साकी ने अब यह कौनसी, कैसी दी है?[१]

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ५६, ५७।

मुद्दतों जेल की तनहाई का आलम देखा,
क्या बताऊँ तुम्हें इकताई, में क्या गम देखा?
दोस्त बहदत में खुदा का भी जी नहीं ही लगा
जहाँ गवाह है, जो लुत्फ है, वाहम देखा।

हौसला इन्कलाव का न हो क्यों कर मफ़रूर,
जलवा अफरोज हुकूमत पै जो हो जाय गुरूर
दोस्त! मत पूछ परेशानिये आवाम की बात
कसरे जजवात व यकीदत हो जहां चकना चूर।।[१]

कान्स्टीट्यूशन में दिखा देते हैं वो "जलवाय तूर"
और प्लानों में सुना देते हैं वो "वादाए हूर"
दोस्त उनको तो है फिरदौस ही वरूए जमी
हम गरीबों को मगर हनोज़ दिल्ली दूर।

जुल्म की रात है बहता है शहीदों का लहू
होने वाली सुबह को सुर्खरू बनाने को।
अहले मजलूम उठो जागो, कि तुम्हारे पास
खोने को कुछ नहीं, दुनिया है नयी पाने को।[२]

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ५७।

२. वही, पृ०सं०- ५८।

मैंने यह उम्र का जो मस्त जान पाया था
दोस्त! सच मान न ढाला था न ढुलकाया था।
इसमें बाकी जो है, तलछट नहीं तर्वरुक है
मैने कदमों में इसे कौम के चढ़ाया था।

दोस्त जीने का कुद अन्दाज हो यों रिन्दाना
जिन्दगी मय है, मौत खुम, जहां है मय खाना
सालें कतरे हैं, भर रहा है उम्र पैमाना
साकी जितनी बखुशी दे दे, पी के है जाना।

सर पे आई न सुबह होती, अभी रात होती
शीशा पैमाने में पहले सी मुलाकात होती।
फिर वहा छेड़ते यों तार मेरी सांसो के
दिल के इसराज की तो दोस्त! और बात होती।

गर्भ जजबात की हो या तो आहे सर्द की बात
कि हो बुजुर्ग या कच्चे या जवां मर्द की बात
अज्म एक चाहिए और अज्म में सचाई भी
शेर होता नहीं है दोस्त! महज दर्द की बात।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ५८।

२. वही, पृ०सं०- ५९।

शायरे कौम तो कहते रहे जाँ तूने दी,
जिन्दगी वे जिसे कहते रहे, सो तूने जी।
माना ए दोस्त किया तूने न दीवान जमा,
शेर वे कहते रहे, तू ने मगर शायरी की।

पका अनार जो फूटा तो हँसा, हैरत हुई
उसने एक बात तो धीरे से कही थी हम से
हँसी का राज समझ लेना नहीं दोस्त हँसी
जाने कब कौन क्यों हंस पड़ता है औ किस गम से।

शौक बोला कहो, "कुछ, चुप नहीं रह पाओगे"
इश्क बोला "जो कहोगे, तो क्या कह पाओगे?
दोस्त, मस्ती तो मये दर्द पर मुनहस्सर है
गहरी हौगी तो चुप, हलकी, तो वहक जाओगे।

जिन्दगी क्या है, एक गाना है,
नित नया है, बड़ा पुराना है।
रोते रोते भी गा सके, जो इसे
उसने ही दोस्त जीना जाना है।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ५९।

२. वही, पृ०सं०- ६०।

दर्द की गोद में आराम किये जाता हूं,

मौत के हाथों जामे जीस्त पिये जाता हूं।

दोस्ती जिनकी शायरी हे मेरी, शाद रहें,

जिनसे हर वाद पै मैं आह लिए जाता हूं।

भगवानदास माहौर ने १९७७ में 'यश की धरोहर' जैसी अमर कृति की रचना कर वे स्वयं संस्मरणात्मक लेखन की दुनिया में अपना एक अलग स्थान बना लिया। इस कृति में पाँच अमर शहीदों की बलिदानी - कथाओं को माहौर जी ने बहुत सुन्दर तरीके से कलम की नोक पर उतारा है।

माहौर जी का "१८५७ के स्वाधीनता संग्राम का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव'' नामक शोध-प्रबन्ध तथा रानी लक्ष्मी बाई काव्य परम्परा में मदनेशकृत लक्ष्मी बाई रासो जैसी रचना भी रचनावलियों में अपनी एक अलग पहचान रखती है। माहौर जी के 'बलिदान' 'एका' तथा 'जन्म दिवस' जैसे तीन रूपक भी रूपकजगत में अपनी खासी पहचान रखते हैं।

जीवन का सांध्य काल और भगवानदास माहौर

भगवानदास माहौर बुन्देलखण्ड कालेज झांसी में ०३ जून १९७१ तक लगभग डेढ़ दशक तक हिन्दी के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष भी रहे। अध्यापन के क्षेत्र में भी माहौर जी अपनी अध्यापन-शैली के लिए विश्रुत रहे। वे विद्यार्थियों के बीच बहुत लोक प्रिय रहे।

---

१. डॉ० विश्वंभर आरोही, भगवानदास माहौर, अभिनंदन ग्रंथ, पृ०सं०- ६०।

माहौर जी विभिन्न संगठनों से जुड़े रहे। बुन्देलखण्ड वि०वि० झांसी ने उन्हें उनकी उत्कृष्ट सेवाओं तथा हिन्दी क्षेत्र में स्तरीय रचना धर्मिताके लिए ०७ जनवरी १९७७ को डी०लिट० की मानद उपाधि प्रदान की। भगवानदास माहौर जीवन के उत्तर काल में भी राष्ट्र सेवी रहे। उनका चिन्तन सदैव राष्ट्रवादी रहा।[१]

इच्छा मृत्यु का योग

भगवानदास माहौर को ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था। उन्हें अपनी जन्म कुण्डली में 'मारकेश' स्पष्ट दिखायी पड़ गया था। वे कहा करते थे कि यदि 'मारकेश' से बच गये तो राजयोग भी बनेगा। भगवानदास माहौर की बुन्देलखण्ड वि०वि० के तत्कालीन उप कुलपति वाहिद यू० मलिक से घनिष्ठता स्थापित हो गयी थी। उन्हें वि०वि० द्वारा बुन्देल परिषद का अवैतनिक अध्यक्ष बनाया गया था। कुछ स्वार्थी तत्वों एवं अपनों की बेरुखी के कारण वे इस परिषद के अध्यक्ष पद से हट गये।

भगवानदास माहौर ने काकोरी शहीद स्मृति ग्रंथ का बड़ी कुशलता से संपादन किया। भगवानदास महौर पर मारकेश तो मंडरा ही रहा था। उनके मित्र तथा पत्नी यमुताई के इच्छा मृत्यु संयोग पर भिन्न-भिन्न मत थे। माहौर के मित्र इस विषय पर उनसे कहते थे कि वाह! क्या तुम भीष्म पितामह बन रहे हो।[२]

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १२७।

२. वही, पृ०सं०- १७९।

यमुताई का मानना था कि पुरुष की जब अपनी से खट-पट हो जाती है तभी वह गृह क्लेश से ऊब कर मृत्यु का वरण करता है। इस मत से माहौर सहमत नहीं थे। वे मृत्यु के लिए अन्य कारणों को भी जवाबदेह मानते थे।[१]

माहौर जी जीवन के सांध्य काल में भी बहुत से काम करने में व्यस्त थे किन्तु समय उनके विपरीत था। १९७८ में उनकी पत्नी के कैंसर का आपरेशन हुआ, उस समय माहौर ने यमुताई की पूरे मनोयोग से सेवा की।

माहौर जी की यह चाह थी कि आजादी के लिए शहीद तो नहीं हो पाया, परन्तु यदि चलता-फिरता इस दुनिया से चला जाऊँ तो बेहतर है। फरवरी १९७९ से भगवानदास माहौर की यात्राओं का सिलसिला थम नहीं रहा था। उनका स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा था। २७ फरवरी १९७९ को वे निर्मली में आजाद की मूर्ति के अनावरण में गये थे जो उनके स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत कष्टकर रहा। वे खराब स्वास्थ्य के कारण ११ मार्च १९७९ को सातार नदी के तट पर आजाद की मूर्ति के अनावरण कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाये।

उसके बाद १० मार्च १९७९ को लखनऊ वि०वि० में आजाद की मूर्ति का अनावरण होना था, माहौर भी आमंत्रित किये गये। माहौर जी ०९ मार्च को लखनऊ गये। माहौर जी मंच पर पहुँच कर सन् १८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य गीत "हम हैं इसके मालिक हिन्दुस्तान हमारा"

---

१. भगवानदास सेठ, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, पूर्व उल्लिखित, पृ०सं०- १७९

बड़ी तन्मयता के साथ सुना रहे थे, तभी उनको अचानक गंभीर दिल का दौरा पड़ा। उन्हें तुरन्त बलरामपुर अस्पताल ले जाया गया, फिर मेडिकल कालेज मं दो दिन तक उपचार चला। वे बेहोशी में बुद बुदाये- भगत सिंह तुम चिंता मत करो, मैं आजाद को मना लूँगा।

चिकित्सकों के अथक प्रयास के बावजूद उनको बचाया नहीं जा सका। आजाद के पास जाने की उनकी चाह पूरी हुई। इच्छा मृत्यु योग पूरा हुआ। उनके शव को पूरे सम्मान के साथ भैंसाकुण्ड ले जाया गया। वहीं पर २१ तोपों की सलामी के बाद उनका दाह संस्कार कर दिया गया। झांसी वाले ही नहीं अपितु उनके अभिन्न क्रांतिकारी मित्र मलकापुरकर भी उनके अन्तिम दर्शन नहीं कर सके।

उन्हें रामकृष्ण खत्री के घर १५ मार्च को शिववर्मा, जयदेव कपूर तथा रमेश चन्द्र इत्यादि भारी संख्या में मित्रों ने श्रद्धांजलि दी। खत्री के घर शांति पाठ भी हुआ, जिसमें उ०प्र० के मुख्यमंत्री भी शामिल थे।

निष्कर्ष

भगवानदास माहौर का जेल-प्रवास बहुत महत्वपूर्ण रहा। उनको वहाँ पर लोक विश्रुत क्रांति-पुरोधा पं० परमानंद का सानिध्य मिला। उन्होंने जेल में ही अनुशीलन किया। रचना धर्मिता के क्षेत्र में माहौर वहीं पर अग्रसर हुए।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में माहौर जी के सामने सबसे बड़ी समस्या जीवन के संचालन की थी, उनकी माली-हालत बहुत खराब थी, माहौर जी जीवटता के धनी क्रांतिकारी थे, वे हिम्मत नहीं हारे। उन्होंने एक

साप्ताहिक समाचार पत्र में कार्य करना शुरू किया इससे उनके घर की गाड़ी चल निकली, माहौर जी प्रारम्भ में कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़े किन्तु कुछ दिनों बाद उससे अलग हो गये।

भगवानदास माहौर ने स्वतन्त्र भारत में ही अपना सारस्वत विकास किया। उन्होंने बी०ए० तथा हिन्दी से एम०ए० किया। उसके बाद बुन्देलखण्ड कालेज, झांसी में हिन्दी के प्रध्यापक हो गये। वहाँपर वे डेढ़ दशक तक अध्यापन से जुड़े रहे। माहौर जी ने १९६५ में पी-एच०डी० किया। माहौर जी की अध्यापन शैली छात्र विश्रुत थी। हिन्दी तथा रचनाधर्मिता के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी ने उन्हें डी०लिट की मानद उपाधि से विभूषित किया। उन्हें विश्वविद्यालय बुन्देली परिषद का अध्यक्ष भी मनोनीत किया।

भगवानदास माहौर में शस्त्र और शास्त्र का अद्‌भुत संगम था। उन्होंने कई कृतियों की रचना की, कई नाटक तथा रूपक भी लिखे। उनकी कृतियों में उनके द्वारा प्रणीत 'यश की धरोहर' एक अमर कृति है। उन्होंने इसे १९७७ में लिखा था।

उनका क्रांति-काव्य बहुत सशक्त एवं प्रभावी है। ''मेरे शोणित की लाली से कुछ तो लाल धरा होगी'' जैसी ध्रुव पंक्तियाँ लोकविश्रुत हैं।

भगवानदास माहौर जीवन के सांध्य काल में भी क्रियाशील रहे, कई संस्थाओं से जुड़े रहे, शहीदों के श्राद्धकर्म में वे जीवनान्त जुड़े रहे। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित रहा। वे राष्ट्र के लिए जिए और राष्ट्र के लिए मरे। राष्ट्र के प्रति धर्म से कभी भी च्युत नहीं हुए।

अष्टम् अध्याय

उपसंहार

8

उपसंहार

भगवानदास माहौर का बुन्देल क्षेत्र के दतिया जिले की जिस मेदिनी की सोंधी माटी में जन्म हुआ था, वह विश्व विश्रुत मल्लशूर गामा के शरीर-शौर्य से सुवासित थी, उस पर पीताम्बरा पीठ का भी प्रभाव था। इसके अतिरिक्त उन पर राष्ट्र-धर्मी कवीन्द्र नाथूराम माहौर का भी असर पड़ा, भगवानदास माहौर के संगीत परक जीवन पर उनकी माँ की प्रेरणा थी, वे आंचलिक गायकी के क्षेत्र की धनी थी। इस तरह से यदि देखा जाय तो भगवानदास माहौर के लिए भावी जीवन की पूर्व पीठिका बचपन में ही बन चुकी थी, इसीलिए यह कहा जा सकता है कि बचपन भविष्य की भूमिका होता है।

भगवानदास माहौर का सारस्वत विकास उनके मामा कवीन्द्र नाथूराम माहौर के छाँव तले हुआ, जिन्होंने उनकी बाल मनोधरा में राष्ट्र प्रेम की पौध लगायी, जो आगे चलकर किशोर-काल में मास्टर रुद्रनारायण के नेह-नीर से विकसित हुई और मात्र १४ वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते वे दृढ़ राष्ट्रानुरागी हो गये। भगवानदास माहौर के सम्बन्ध में यदि यह कहा जाय कि वे बलिदानी भावना को लेकर जन्मे थे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

भगवानदास माहौर इन भावों को लेकर जन्मे थे-

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ए आसमाँ,
हम अभी से क्या बतायें, क्या हमारे दिल में है।।

उनका बाल व किशोर जीवन इस तथ्य का साक्षी है कि वे धरती में अपने आगमन से लेकर जीवन के ऊषाकाल में कहीं पर भी इस रूप में नहीं दिखे कि उनमें कुछ करने की चाह न हो। इसलिए यदि यह कहा जाय कि भगवानदास माहौर एक जन्मजात क्रांतिधर्मी पुरोधा थे तो इसमें कोई अतिरेक नहीं होगा।

मास्टर रुदनारायण का जन्म लक्ष्मणपुर अर्थात लखनऊ में हुआ था, किन्तु उनका सारस्वत विकास शूरों के शहर शाहजहाँपुर में हुआ था। पं० राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ एवं ठा० रोशन सिंह जैसे वीरों की इसी धरती में उनका शचीन्द्र नाथ बख्शी एवं चन्द्रशेखर आजाद से सम्पर्क हुआ था, वे १९२४ की शाहजहाँपुर में हुई क्रांतिकारियों की बैठक में भी सहभागी हुए थे, इस तरह उनके मनोक्षितिज में शिक्षा काल में ही राष्ट्रानुराग का अंकुरण हो चुका था।

मास्टर रूद्रनारायण झांसी की सरस्वती पाठशाला में कला-शिक्षक थे, मास्टर साहब के प्रयासों से ही झांसी में क्रांतिकारी संगठन विस्तार पा सका, ये अपने घर में व्यायामशाला खोले थे, जिसमें भगवानदास माहौर एवं अन्य युवा कसरत-कुश्ती का अभ्यास करते थे। हिसप्रस की ओर से शचीन्द्र नाथ बख़्शी झांसी में क्रांतिदल को खड़ा एवं सरसब्ज करने की दृष्टि से आये थे।

मास्टर साहब के घर ही १९२४ में माहौर जी को बख्शी बाबू तथा चन्दशेखर आजाद के दर्शन हुए थे, माहौर उस समय चौदह बसंत देख चुके थे, चौदह वर्षीय युवा भगवानदास माहौर अपनी उम्र के किशोर काल में ही क्रांति पाठी हो गये थे, उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे सदैव राष्ट्र धर्मी रहे। उन्होंने झांसी तथा ग्वालियर में क्रांति-विस्तार के क्षेत्र में प्रभावी योगदान प्रदान किया। वस्तुतः माहौर जी झांसी के क्रांतिकारी आन्दोलन के भीष्म पितामह कहलाने वाले मास्टर रुद्रनारायण के सम्पर्क से ही क्रांति के क्षेत्र में उतरे थे, तत्पश्चात् वे क्रांतिधर्मी संघर्ष के साफल्य शिखर की ओर अनवरत अग्रसर रहे।

चन्द्रशेखर आजाद का झांसी-प्रवास क्रांतिकारी दल के सांगठनिक आलोक में अपना एक अलग महत्व रखता है, १९२४-१९३१ के बीच लगभग ०७ वर्षों के आजाद के सामीप्य सलिल से अभिसिंचित होकर झांसी के तत्कालीन शौर्य को नवोन्मेष मिला। भगवानदास माहौर ने १९२४ में झांसी में आजाद के दर्शन किये थे, उसके बाद माहौर, वैशम्पायन तथा सदाशिवराव मलकापुरकर ने क्रांति के क्षेत्र में जितने भी झण्डे गाड़े, उन सबके पीछे आजाद का ही योगदान था।

आजाद का अवदान वस्तुतः झांसी जैसी वीरशालिनी वसुधा में मील का पत्थर सिद्ध हुआ, झांसी नगर आजाद के कारण ही क्रांति का केन्द्र बना, चन्द्रशेखर आजाद ने अपने एक दशक से कम के प्रवास में ही वहाँ पर वह पौरुष शाला स्थापित कर दी, जिससे भगवानदास माहौर, विश्वनाथ वैशम्पायन तथा सदाशिवराव मलकापुरकर जैसे कई पुरोधा निकले, जिनके

राष्ट्रधर्मी अनुदाय ने उन्हें एक नयी पहचान प्रदान की। चन्द्रशेखर आजाद, भगवानदास माहौर, विश्वनाथ वैशम्पायन, सदाशिवराव मलकापुरकर की उम्र में कोई बड़ा अन्तर नहीं था किन्तु चन्द्रशेखर आजाद की सूझ-बूझ, सदाशयता और साहृदयता ने क्रांतिकारी मित्रों के बीच आजाद के प्रति आत्मीयता का एक नया आरेख खड़ा कर दिया था।

आजाद में बुद्धिमत्ता और वीरता का अद्‌भुद संगम था, उनमें सांगठनिक क्षमता भी बहुत थी, वैसे तो मास्टर रुद्रनारायण झांसी में पहले से ही राष्ट्रधर्मी कार्य कलापों में क्रियाशील रहते थे किन्तु आजाद के बाद वहाँ पर देशधर्मी कार्य संस्कृति को नया आयाम मिला। भगवानदास माहौर के क्रांतिधर्मी आचरण की आजाद ने ही पूर्व पीठिका बनायी थी। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आजाद के सामीप्य ने ही माहौर को शौर्य की नयी सुर्खिया प्रदान कीं।

भुसावल बम काण्ड तथा जलगाँव-अदालत काण्ड क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास के वे पृष्ठ हैं, जिन पर आजाद के माहौर तथा मलकापुरकर जैसे अग्निधर्मा साथियों का जीवन्त साहस अंकित है।

शिवराम हरि राज गुरु ब्राह्मण परिवार के पूना के बहादुर सपूत थे, साण्डर्स-वध तथा असेम्बली बम काण्ड के बाद चन्द्रशेखर आजाद की यह धारणा थी कि बिखरे हुए संगठन को पुनः सक्रिय किया जाय, भगवानदास माहौर तथा सदाशिव मलकापुरकर, आजाद के विश्वस्त

साथी थे। राजगुरु उस समय पूना में सक्रिय थे, आजाद ने माहौर तथा मलकापुरकर से पूना जाकर राजगुरु से मिलने को निर्देशित किया था, माहौर तथा मलकापुरकर को वहाँ पर स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए आवश्यक सांघर्षिक सामग्री तैयार करनी थी।

भगवानदास माहौर तथा मलकापुरकर आजाद द्वारा प्रदत्त माउजर, दो जीवित बम तथा साठ कारतूसों के साथ अकोला के लिए रवाना हुए, उन्हें भुसावल में ट्रेन बदलकर कर अकोला जाना था, उन दिनों भुसावल में मादक द्रव्य नियंत्रक (एक्साइज) की सघन चौकसी थी, माहौर तथा मलकापुरकर को सघन जाँच के बारे में पता नहीं था। पुलिस द्वारा दोनों की तलाशी के दौरान विस्फोटक सामग्री मिलने पर माहौर तथा मलकापुरकर की योजना पर पानी फिर गया, इसके बावजूद माहौर के संकेत पर यदि मलकापुरकर बक्से से आजाद के माउजर को उठाकर माहौर के साथ भाग खड़े होते तो शायद इतिहास के पृष्ठों में कुछ और अंकित होता।

माहौर तथा मलकापुरकर को पुलिस द्वारा गिरफ्तार करने के बाद भुसावल बम केस के नाम से मुकदमा चलाया गया, इतना होने पर भी यदि जयगोपाल तथा फणीन्द्र घोष जैसे गद्दार साथी उनके विरुद्ध गवाही न देते तो संभवत: माहौर एवं मलकापुरकर को न आजीवन कारावास का दण्ड मिलता और न ही मातृ भूमि के मुक्ति-मिशन में भितरघाती अवरोध उत्पन्न होता।

भगवानदास माहौर का जीवन एक खुली हुई उस किताब की तरह है, जिसका हर पृष्ठ उनके समर्पित जीवन की पुष्टि करता है। भगवानदास माहौर ने छात्र काल में जब से राष्ट्र धर्मी क्षेत्र में कदम रखा, तब से उनके कदम सदैव अग्रगामी रहे, उन्होंने कभी भी पीछे मुडकर नहीं देखा। वे मास्टर रुद्रनारायण से १९२४ में जुडे तथा उन्हीं के माध्यम से आजाद के दर्शन करने के बाद सशस्त्र क्रांति में कदम रखने से लेकर १९४२ के करो या मरो अभियान तक ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा, जिसमें भगवानदास माहौर का प्रशंसनीय प्रतिभाग न रहा हो।

भगवानदास माहौर ही नहीं, उनके परिवारीजनों में उनके छोटे भाई राधाशरण माहौर भी माहौर के अनुगामी रहे। भगवानदास माहौर का १९४२ के लोक युद्ध में भी प्रभावी अनुदाय रहा।

भगवानदास माहौर का जेल-प्रवास बहुत महत्वपूर्ण रहा। उनको वहाँ पर लोक विश्रुत क्रांति-पुरोधा पं० परमानंद का सानिध्य मिला। उन्होंने जेल में ही अनुशीलन किया। रचना धर्मिता के क्षेत्र में माहौर वहीं पर अग्रसर हुए।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में माहौर जी के सामने सबसे बड़ी समस्या जीवन के संचालन की थी, उनकी माली-हालत बहुत खराब थी, माहौर जी जीवटता के धनी क्रांतिकारी थे, वे हिम्मत नहीं हारे। उन्होंने एक साप्ताहिक समाचार पत्र में कार्य करना शुरू किया इससे उनके घर की

गाड़ी चल निकली, माहौर जी प्रारम्भ में कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़े किन्तु कुछ दिनों बाद उससे अलग हो गये।

भगवानदास माहौर ने स्वतन्त्र भारत में ही अपना सारस्वत विकास किया। उन्होंने बी०ए० तथा हिन्दी से एम०ए० किया। उसके बाद बुन्देलखण्ड कालेज, झांसी में हिन्दी के प्रध्यापक हो गये। वहाँपर वे डेढ़ दशक तक अध्यापन से जुड़े रहे। माहौर जी ने १९६५ में पी-एच०डी० किया। माहौर जी की अध्यापन शैली छात्र विश्रुत थी। हिन्दी तथा रचनाधर्मिता के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी ने उन्हें डी०लिट की मानद उपाधि से विभूषित किया। उन्हें विश्वविद्यालय बुन्देली परिषद का अध्यक्ष भी मनोनीत किया।

भगवानदास माहौर में शस्त्र और शास्त्र का अद्‌भुत संगम था। उन्होंने कई कृतियों की रचना की, कई नाटक तथा रूपक भी लिखे। उनकी कृतियों में उनके द्वारा प्रणीत 'यश की धरोहर' एक अमर कृति है। उन्होंने इसे १९७७ में लिखा था।

उनका क्रांति-काव्य बहुत सशक्त एवं प्रभावी है। "मेरे शोणित की लाली से कुछ तो लाल धरा होगी" जैसी ध्रुव पंक्तियाँ लोक विश्रुत हैं।

भगवानदास माहौर जीवन के सांध्य काल में भी क्रियाशील रहे, कई संस्थाओं से जुड़े रहे, शहीदों के श्राद्धकर्म में वे जीवनान्त जुड़े रहे। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित रहा। वे राष्ट्र के लिए जिए और राष्ट्र के लिए मरे। राष्ट्र के प्रति धर्म से कभी भी च्युत नहीं हुए।

परिशिष्ट

भगवानदास माहौर एवं अन्य सेनानी चित्रावलि

क्रान्ति से डॉक्टरेट तक
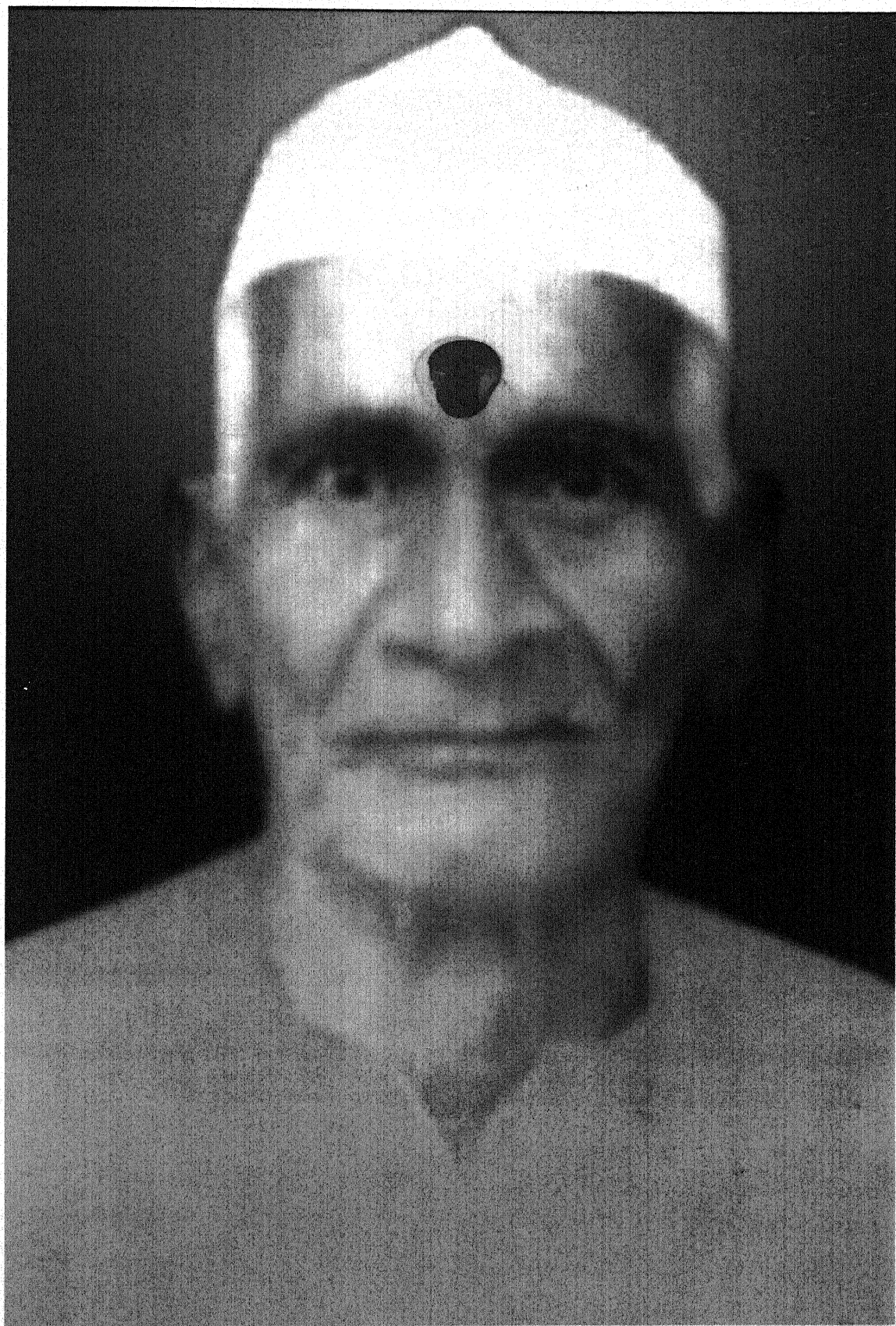
स्व. श्री नाथूराम रिछारिया (स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी)
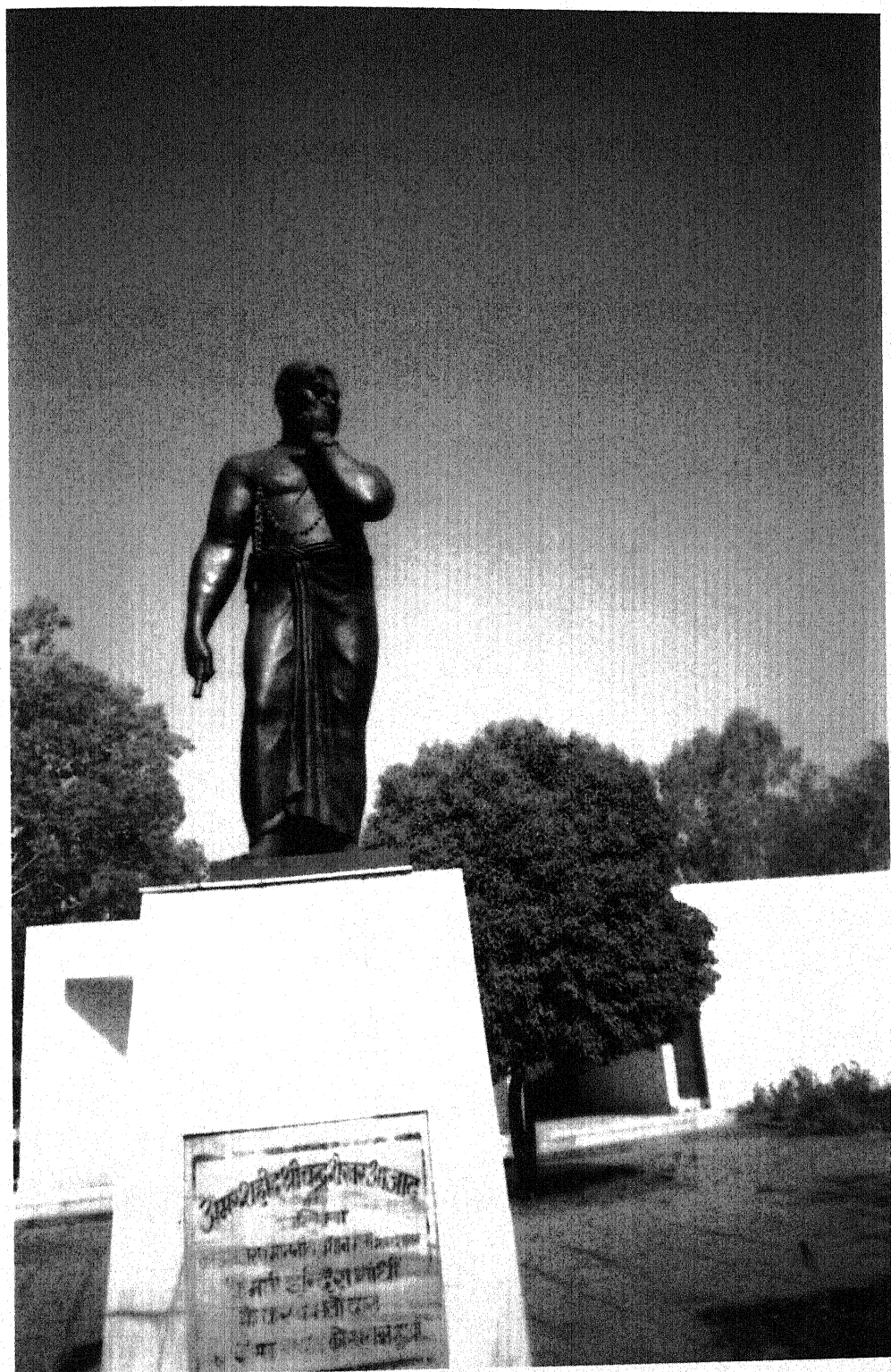
सातार नदी के तट पर आजाद के प्रवास की प्रतीक उनकी प्रतिमा

पिता श्री तुलसीदास माहौर एवं माताजी
(परिवारी जन)

बांये से – माहौर जी की भतीजी, छोटे भाई श्री राधाचरण माहौर,
एवं बहिन श्रीमती रामरतीदेवी बीच में माताजी

क्रान्तिकारी साथियों के बीच

बांये से कुर्सियों पर–
श्री भगवानदास माहौर, श्री शचीन्द्रनाथ बख्शी,पं. परमानन्द जी एवं श्री विश्वनाथ वैशम्पायन

बांये से खड़े हैं –
श्री सदाशिवराज मलकापुरकर, श्री शंकरराव मलकापुरकर एवं श्री मणिलाल शर्मा

आजाद की पूजनीया माताजी का अन्तिम संस्कार करते हुये
बांये से – श्री सदाशिवराव मलकापुरकर, मास्टर रुद्रनारायणजी एवं श्री माहौरजी

कवि – काव्या साधना में रत

सातार के तट पर आजाद की कुटिया में
बांये से – माहौर जी, सदाशिवजी, आजाद की मां एवं श्री बनारसीदास चतुर्वेदी
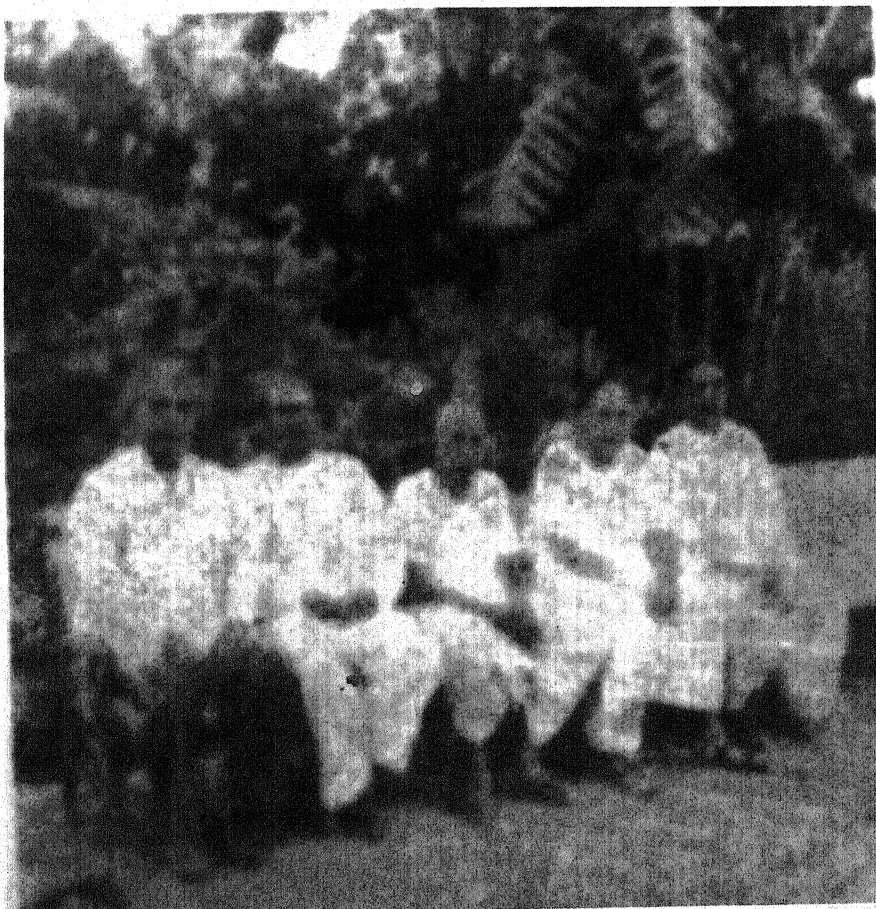
बांये से–
श्री भगवानदास माहौर,
श्री मन्मथनाथ गुप्त,
श्री गंगाशरण सिंह
एवं
श्री मोहन सिंह सेंगर

मध्य में–
राष्ट्रकवि
डा. मैथिलीशरण गुप्त जी
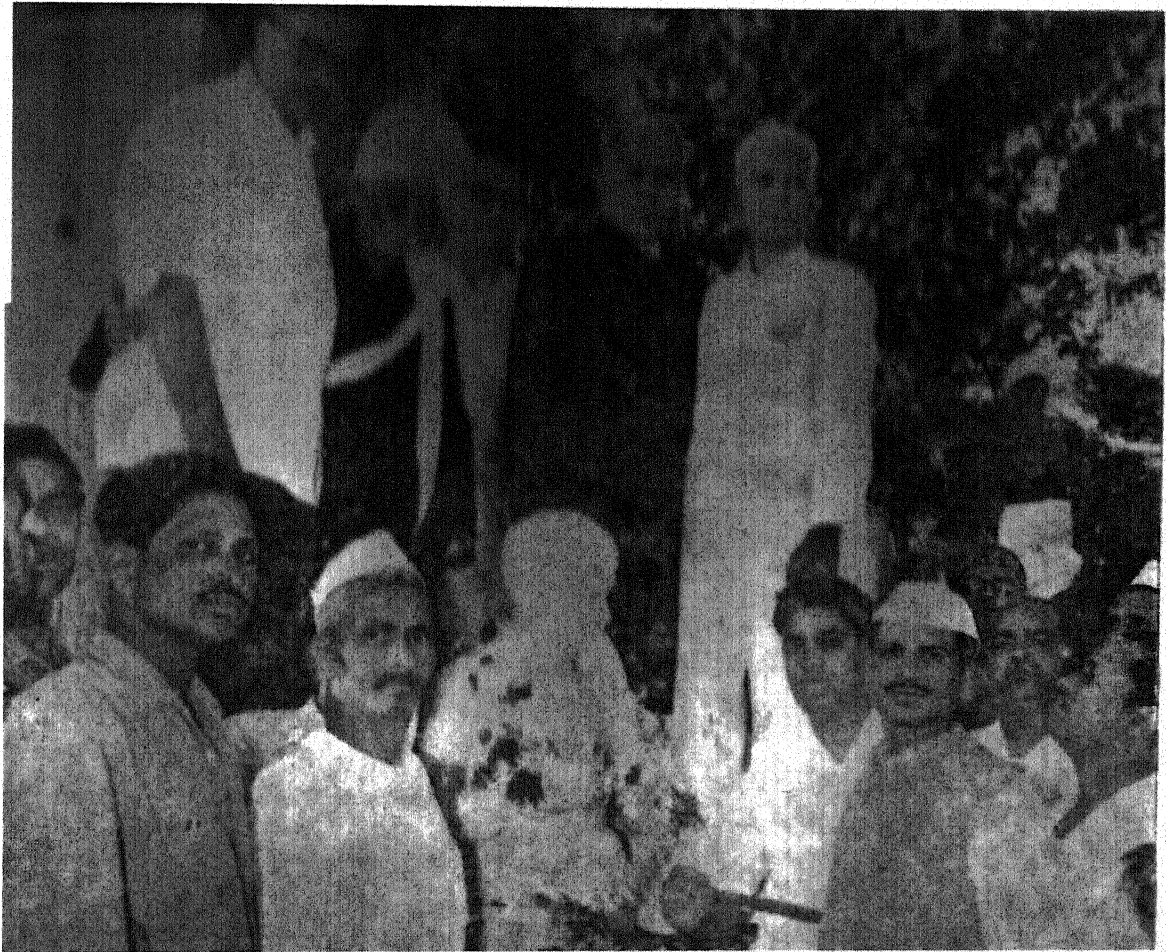
आजाद की जन्म–भूमि भावरा में माहौर जी द्वारा आजाद की प्रतिमा का अनावरण

बांये से – कलेक्टर झाबुआ, श्री मनोहरलाल जी, श्री विश्वनाथ वैशम्पायन,
श्री भगवानदास माहौर एवं श्री सदाशिवराज मलकापुरकर

ठाकुर मलखन सिहं के निवास, आजादपुरा (ढिमरपुरा),
जहॉ पर चन्द्रशेखर आजाद रहते थे
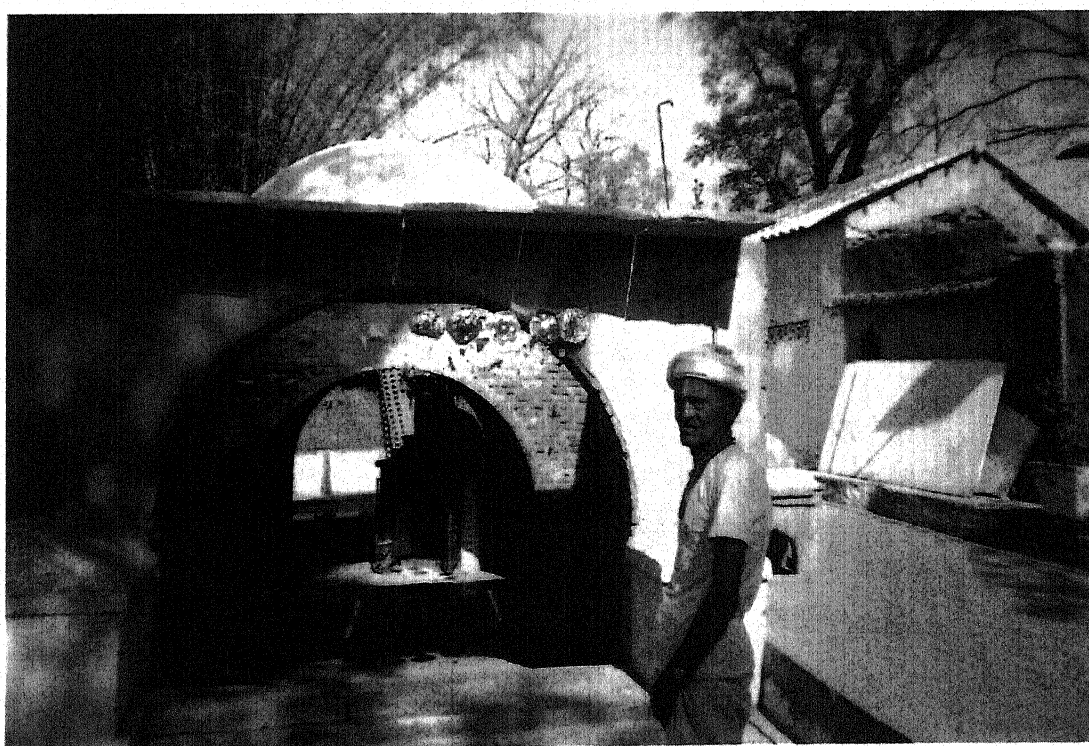
वह हनुमान मन्दिर,
जहाँ पर ब्रम्हचारी के रुप मे आजाद पूजा करते थे

जहॉ पर आजाद जी, भगवानदास माहौर, सदाशिव मलकापुरकर एंव अन्य क्रान्तिकारी साथी अकसर सांगठनिक बैठकें करते थे

जिस गुफा से होकर चन्द्रशेखर आजाद भट्टा गॉव सदर बाजार, झॉसी निकला करते थे ।

वक्ता माहौर जी
श्रोताओं के मध्य श्री वृन्दावनलाल वर्मा भी बैठे हैं

सन्दर्भ - ग्रन्थ

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

हिन्दी सन्दर्भ-ग्रन्थ

१. बघेल, राम सिंह, शहीद परिचय माला-५, ग्वालियर, नई सड़क, १९८५।

२. गुप्त, मन्मथनाथ, भूले बिसरे क्रांतिकारी, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १९७६।

३. गुप्त, मन्मथनाथ, वे अमर क्रांतिकारी, दिल्ली, ३२, हिंद पॉकट बुक्स, प्रा०लि० जी०टी० रोड, शाहदरा।

४. थापर, मथुरादास, अमर शहीद सुखदेव, दिल्ली-६, निधि प्रकाशन, १५९० मदरसा रोड, कश्मीरी गेट।

५. भगत सिंह, मेरे क्रांतिकारी साथी, दिल्ली-६, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट।

६. खत्री, रामकृष्ण, शहीदों की छाया में, हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा, १९८३।

७. सत्याराय, भारत में राष्ट्रवाद, दिल्ली वि०वि० हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, १९८७।

८. निगम, नंद किशोर, बलिदान, दिल्ली-०६, एस्प्लेनेड रोड।

९. डॉ० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं, सन्दर्शिता, भरुवा सुमेरपुर, २००१।

१०. मिश्र, कन्हैयालाल, उ०प्र० स्वाधीनता संग्राम की झलकियाँ, लखनऊ सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, १९७२।

११. उपाध्याय, विश्वमित्र, शचीन्द्रनाथ सान्याल और उनका युग, नई दिल्ली, प्रगतिशील जन प्रकाशन, १९८३।

१२. सिंह, रणधीर, गदर पार्टी के इंकलाबी, दिल्ली स्वर्ण जयंती, १९९८।

१३. सिंह, अयोध्या, भारत का मुक्ति संग्राम, दिल्ली मैकमिलन कम्पनी, १९८७।

१४. सरल, श्रीकृष्ण, क्रांति कथायें, उज्जैन, बलिदान भारतीय, म०प्र०, १९८५।

१५. सुन्दर लाल, भारत में अंग्रेजी राज, पहला तथा दूसरा खण्ड, नई दिल्ली प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १९८२।

१६. ताराचन्द्र, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, भाग-१ से ४ तक, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, १९७७, १९८२, १९८२, १९८४।

१७. मेहरोत्रा, एन०सी०, उ०प्र० में क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली आत्माराम एण्ड सन्स, १९९९।

१८. माहौर, भगवानदास, मलकापुरकर एवं वर्मा, शिव, यश की धरोहर, दिल्ली आत्माराम एण्ड सन्स, १९९९।

१९. बघेले, राम सिंह, क्रांतिवीर भगवानदास माहौर, ग्वालियर, नई सड़क, १९८४।

२०. सेठ, भगवानदास, झांसी का शेर- भगवानदास माहौर, मेरठ, तरुण प्रकाशन, १९८९।

२१. वर्मा, शिव, संस्मृतियाँ, लखनऊ, शहीद स्मारक प्रकाशन, १९९१।

२२. वैशम्पायन, विश्वनाथ, अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, भाग- १ से ३, रायपुर, म०प्र०, १९६५, १९६७।

२३. वर्मा, जानकी शरण, अमर बलिदानी, झांसी, पुरानी नझाई, १९९९।

२४. आरोही, डॉ० विश्वंभर, भगवानदास माहौर अभिनंदन ग्रंथ, ग्वालियर, १९७२।

२५. सान्याल, शचीन्द्रनाथ, बन्दी जीवन, दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, २००१।

अंग्रेजी सन्दर्भ - ग्रन्थ

Ded well, H.H. , The Cambridge shorter history of India, New Delhi, S Chand & Company, Ram Nagar, 1979.

Gupta, Manmath Nath, They lived Dangerously, Hyderabad , Hindi Prachar Sabha, 1983.

Rizvi, S.A.A. Freedom Struggle in U.P. Part I & V Lucknow Publication Deptt., U.P. 1957.

Vipin Chandra, India's Struggle for Independence, New Delhi, Himalaya Road, 1988.

स्मारिका एवं पत्रिकाएं

अग्रवाल, डोरीलाल एवं अन्य सम्पादक मण्डल, स्मारिका, आगरा, शहीद भगत सिंह, स्मारक समिति, 4, 5, 6 अप्रैल 1986।

अवस्थी, राजेन्द्र (सम्पादक) साप्ताहिक हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन 17 से 23 अगस्त, 1961।

चतुर्वेदी, पु0 बनारसीदास एवं अन्य संपादक मण्डल, स्मारिका, पूर्व उल्लिखित, 9, 10 अप्रैल, 1983।